ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २५७ म अंक ०१ सितम्बर २०१८ (वर्ष ११ मास १२९ अंक २५७)

वि दे ह *विदेह Videha ৱিদেহ* ***http://www.videha.co.in*** *विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका* *नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।*

ऐ अंकमे अछि:-

३.४.१.अनुवादक डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु अनुदित काव्य (मूल रजनी छाबड़ा- हिन्दी) २.कवि डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु कविता

४.१.बालानां कृते-डॉ. शशिधर कुमर "विदेह"- ।। स्व. अटल बिहारी वाजपेयीजी - एकटा मैथिलक सादर, विनम्र श्रद्धांजलि ।।

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

२. गद्य

२.१.१.आशीष अनचिन्हार- हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-१ २. राकेश प्रेमचन्द्र 'पीसी'- लघुकथा- दशरथ किसानकेँ डुबौलक लखन ठेकेदार ३. डॉ. योगेन्द्र पाठक'वियोगी'- उपन्यास- हमर गाम (आगाँ)

२.२.१.नारायण यादव- इमानदार चोर २. डॉ. बचेश्वर झाक २ टा आलेख

२.३.रबीन्द्र नारायण मिश्र- तीनटा आलेख, दूटा लघुकथा आ उपन्यास नमस्तस्यै (आगाँ)

२.४.जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु आ आमक गाछी (उपन्यास) धारावाहिक आ दूटा लघुकथा

१.आशीष अनचिन्हार- हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-१ २. राकेश प्रेमचन्द्र 'पीसी'- लघुकथा- दशरथ किसानकेँ डुबौलक लखन ठेकेदार ३. डॉ. योगेन्द्र पाठक'वियोगी'- उपन्यास- हमर गाम (आगाँ)

१

आशीष अनचिन्हार

हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-१

गजलक मतलामे जे रदीफ-काफिया
बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्ममे ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-
अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगेसंग नज्मक शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत।
मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ

एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि।मैथिलीमे बहुत लोक गजलक नियमतँ नहिए जानै छथि आ ताहिपरसँ कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो नियमक सुनबामे सुंदर लगैत छै।

मुदा पहिल जे नज्म लेल बहरअनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहि ठाम द' रहल छी-----------------

1

"तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ"

ओना अंग्रेजी कवितासँ प्रभावित उर्दूक कविताकेँ सेहो नज्मे कहल जाइत छै मुदा उर्दूक प्राचीन नज्म सभमे सेहो बहरक पालन कएल जाइत

छलै। उदाहरण

लेल साहिरलुधियानवीजीक ई नज्म देखू जे कि "धूल का फूल" नामक फिल्ममे फिल्माएल गेल छै जाहिमे रा जेन्द्र कुमार ओ माला सिन्हाजी

नायक ओ नायिकाक

रूपमे छथि। एहि नज्म केर बहर122 122 122
122 अछि आ ई हरेक पाँतिमे निमाहल गेल अछि। साहिर जते फिल्म लेल प्रसिद्ध छथि ताहिसँ बेसी उर्दू शाइरी लेल सेहो। वस्तुतः उर्दू शाइरी

आ फिल्मी गीतमे

अंतर नैकएल जाइत छै तँइ प्रसिद्ध फिल्मी पटकथा लेखक ओ गीतकार जावेद अख्तर फिल्मक अतिरिक्त उ र्दूक साहित्य अकादेमी लेल सेहो

हकदार मानल जाइत छथि (2013 मे "लावा" नामक पोथी लेल)। मैथिलीमे तँ सभ कामरेड क्रांतिकारी छ थि की कहि सकै छी। तँ पढ़ू ई नज्म आ देखू एकर बहर--

तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ

वफ़ा कर रहा हूँ वफ़ा चाहता हूँ

हसीनो से अहद-ए-वफ़ा चाहते हो

बड़े नासमझ हो ये क्या चाहते हो

तेरे नर्म बालों में तारे सजा के

तेरे शोख कदमों में कलियां बिछा के

मुहब्बत का छोटा सा मन्दिर बना के

तुझे रात दिन पूजना चाहता हूँ,

ज़रा सोच लो दिल लगाने से पहले
कि खोना भी पड़ता है पाने के पहले
इजाज़त तो ले लो ज़माने से पहले
कि तुम हुस्न को पूजना चाहते हो,

कहाँ तक जियें तेरी उल्फ़त के मारे
गुज़रती नहीं ज़िन्दगी बिन सहारे
बहुत हो चुके दूर रहकर इशारे
तुझे पास से देखना चाहता हूँ,

मुहब्बत की दुश्मन है सारी खुदाई
मुहब्बत की तक़दीर में है जुदाई
जो सुनते नहीं हैं दिलों की दुहाई
उन्हीं से मुझे माँगना चाहते हो,

दुपट्टे के कोने को मुँह में दबा के
ज़रा देख लो इस तरफ़ मुस्कुरा के
मुझे लूट लो मेरे नज़दीक आ के
कि मैं मौत से खेलना चाहता हूँ,

गलत सारे दावें गलत सारी कसमें
निभेंगी यहाँ कैसे उल्फ़त कि रस्में

यहाँ ज़िन्दगी है रिवाज़ों के बस में

रिवाज़ों को तुम तोड़ना चाहते हो,

रिवाज़ों की परवाह ना रस्मों का डर है

तेरी आँख के फ़ैसले पे नज़र है

बला से अगर रास्ता पुर्खतर है

मैं इस हाथ को थामना चाहता हूँ,

2

"सजन रे झूठ मत बोलो, खुदा के पास जाना है"

शैलेंद्रजी द्वारा लिखल आ फिल्म "तीसरी कसम"मे राज कपूरजीक उपर फिल्माएल ई नज्म देखू। ई नज्म निर्गुण अछि। एहि नज्मक बहर 1222 1222 1222
1222 अछि। एहि नज्ममेमहल शब्दक बहर उर्दू शब्द "शहर" केर हिसाबसँ अछि। शैलेंद्रजी फिल्मी गीतक अतिरिक्त अपन मार्क्सवादी गीत लेल

सेहो प्रसिद्ध छथि

आ हुनक मार्क्सवादी गीत आधुनिक गीतसेहो अछि आ बहरमे सेहो। तँ देखू शैलेंद्रजीक ई नज्म आ ओकर बहर। मैथिलीक जे गजलकार ई सोचै

छथि जे बहरसँ गेयता

खत्म भ' जाइत छै तिनका लेल ई विशेष रूपसँ अछि--

सजन रे झूठ मत बोलो, खुदा के पास जाना है

न हाथी है ना घोड़ा है, वहाँ पैदल ही जाना है

तुम्हारे महल चौबारे, यहीं रह जाएंगे सारे

अकड़ किस बात की प्यारे ये सर फिर भी झुकाना है

भला कीजै भला होगा, बुरा कीजै बुरा होगा

बही लिख लिख के क्या होगा, यहीं सब कुछ चुकाना है

लड़कपन खेल में खोया, जवानी नींद भर सोया

बुढ़ापा देख कर रोया, वही किस्सा पुराना है

(सजन रे झू 1222 ठ मत बोलो, 1222 खुदा के पा 1222 स जाना है 1222

न हाथी है 1222 ना घोड़ा है, 1222 वहाँ पैदल 1222 ही जाना है 1222)

3

"तेरी याद दिल से भुलाने चला हूँ"

साहिर लुधियानवी द्वारा लिखल नज्म "तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ" केर बहर 122 122 122 122 छै से पछिला पोस्टमे तक्ती द्वारा देखने रही। आइ अही बहरमे शैलेंद्रजीक लिखलनज्म देखा रहल छी। ई "हरियाली और रास्ता" नामक

फिल्ममे मनोज कुमार

ओ माला सिन्हापर फिल्माएल गेल छै। मात्रा निर्धारणमे उर्दू ओ हिंदीक नियम लागल छै---

तेरी याद दिल से भुलाने चला हूँ

के खुद अपनी हस्ती मिटाने चला हूँ

घटाओं तुम्हें साथ देना पड़ेगा

मैं फिर आज आंसू बहाने चला हूँ

कभी जिस जगह ख्वाब देखे थे मैंने

वहीँ खाक़ अपनी उड़ाने चला हूँ

गम-ए-इश्क ले, फूंक दे मेरा दामन

मैं अपनी लगी यूं, बुझाने चला हूँ

(तेरी या 122 द दिल से 122 भुलाने 122 चला हूँ 122

के खुद अप 122 नी हस्ती 122 मिटाने 122 चला हूँ 122)

२

राकेश प्रेमचन्द्र 'पीसी'
लघुकथा- दशरथ किसानकेँ डुबौलक लखन ठेकेदार

लखन ठेकेदारक परिवार अंग्रेजक गुलामी जंजीरमे रहल सीमापारसँ पीनीक कारोबार करबाक बास्ते मधेसक जलसरमे अएल बहुतबेसी दिन नभइ भेल रहे । हुक्काक लोलीमे खैनीकेँ डाँठसँ बनल पीनी राखि धुमपान करयवाला सामन्त आ सम्पन्न किसानक संख्या धिरेधिरे पैर पसारैत समयमे कैयन परिवार अंग्रेजक हुकुमत सँ बचवाक लेल जलसर होएत आन गामशहरसभमे घरद्वार बनाइव ब्यापार करय लागल छलथि पीनिकेँ । नारियलक खोपरैयाकेँ सुखा ओहिमे पानि भरल जाएत छल आ ओहि भितरमे एक हावा पइसयवाला नली बनाएल जाएत छल । ओहि नलीके मुहमे एकटा लकडीकेँ पाइप राखल रहैत । माटिक लोलीमे गोइठाक आगिसँगे पीनी राखि हुक्काक मज्जा लेल जायत छल ।
दशरथ किसान जलसरक कनिक उदार सामन्तमे गिनती होइत छलाह । ओ जनमजदूरसभक लेल अलगे हुक्काकेँ ब्यबस्था सेहो क' देने रहथि । भोर , दूपहर आ सँझियाके गुर्रर, गुर्ररक हुक्काक आवाज सुनल जा सकैत छलै । लखनक माय दैनिक दशरथक घरसँ पीनी द' बदलामे धान लजाकेँ परिवार चलबै छली । सय बिग्हा खेतीहर जमीन, भखारी, जत्रतत्र अन्नपात । टोलपरोसक धियापूता ओहिठाम चोरानुकी खेल खेलवाक लेल दशरथकेँ खरिहान आ भखारीक दौडधुप लगबैत छल । जखन लखनक माय दशरथके तुलना

त्रेतायुगक राजा दशरथ सँ करैत छल त लखनकेँ चेहरा देखय लायक रहैत छल, पित्तसँ लाल । डमरस अमधुर जकाँ ।

राणासभ राजकाजक लेल मधेशमे कर असुली करवाक बास्ते अंग्रेजक सेहो विश्वासक पात्र बना जा सकवाक बास्ते मधेशीया जेहन चेहरा मिलयवालाकेँ ठेकेदार बना मालगुजारी असुलबाक लेल ठेक्का बन्दोबस्तीमे दैत छलथि । ओसभ कर असुलीकेँ लेल दिनरात खटैत छल आ कर नइ बुझाववालाके मालजाल खोइल ल' जाएत छल । मालगुजारी असुल करवाला ठेकेदार लठैत आ धकरिया रखैत छल । तेल पियल करिया करिया बाँसक लाठी रखैत छल ओसभ । मालगुजारी असुली करवा लेल अंग्रेजक गुलामी करहल अपन भगिनमानसभके जलसरमे बोलावाके सुरु क' देलक ।

लखन सेहो भगिनमान रहथि । फरक इहे रहे जे ठेकेदारक बाप पहिने मधेशमे जंगल फरानी करय बास्ते जलसरमे एक दूदिन रहिजाय । समयमे कर बुझाव वाला सामन्ती किसान दशरथक जमीन कोना कब्जा होएत ओहि योजनामे परोसीराम ठेकेदार दिनराति मेहनत करथि । योजना अनुसार पहिला अन्नपातक डकैती करवा लेल सेन खनय वाला काजमे लखनके लगाएल गेल । ओ दुइए दिनमे सेन खनि देलक । हट्ठाकट्ठा लठैतके सम्पन्न आ सामन्त किसान दशरथक घरके कोनाकोना मालुम रहे ।

जमिनभितर सँ बनायल जाएवाला रास्ताके सेन कहल जाइत छैक । दशरथसँ पहिने सेहो हरिराम, राधव, सिताराम, मिठु, नथुनीसहितक सम्पन्न किसानक घरमे डकैती करबा चुकल रहे । डकैत अंग्रेजक गुलाम देशसँ आएल विदेशी रहल वात राणाक जर्नेल रिपोर्ट तयार क' दैत छल । ओहि वापत जनरल ठेकेदारसँ दाम आ दमडी पवैत छल ।

पहरियाको धाकधम्की आ कर असुली कर' वाला ठेकेदारक डकैती सँ बज्जीसंघक बनिमा समुदाय गरिब बनैत गेल । बज्जीसंघक बनिमा समूदाय ओ छलथि जिनकर पुवर्जके जनेउ तोडल गेल रहे । युद्धकर्म छोडि ब्यापार व्यवसायमे लागल समूदायके सतयुगी राजा अपन हरवाहा चरवाहा सँ जनेउ तोड्वौने रहथि ।

सम्पन्न दशरथ किसानक घरमे तीन बेर सेन खनि डकैती भगेल छलैक । समय पर कर चुक्ता नइ कयने कारणे आधा जमिन अर्थात पचास बिग्हा खेत पर कर असुली करयवाला ठेकेदार परोसीराम कब्जा कयने छल । सेन राज्य एवं दरभंगा महाराजक समयमे लोहिया पैसा द' क' सर्राफी कारोबार सँ जम्मा भेल पुर्खौली असर्फी सेहो डकैत लगेल छलैक । अंग्रेजक कब्जा रहल क्षेत्रके नजदिक दोसर देशके जलसरमे नेपाली सेनाक एक टुकुडी रखवाक पत्र जर्नेल धरि अएलावाद कर असुली करयवाला ठेकेदारसँग छलफल कायल गेल । परोसीराम अप्पन लठैत लखनसँ बात क' सेनाक लेल जमीन उपलब्ध करौला पर बक्सीसके रुपमे पक्की घर देवाक आश्वासन देने छल । साथे सेनाक रासन ठेक्का देवाक प्रक्रिया आगू बढादेलक ।

दशरथकेँ जानकीपुर जाएवाला डगरक नाके पर रहल जमीन कब्जा करवाक परोसीराम र लखन बनाचुकल छल । किएक त सैनिक जमीनक बदला किछ सोनाक सिक्का देवाक बाचा कयने रहैक । लखन पुरान हित भेल नाटक क ' दशरथके घर पहुँच रासन ठेक्कापट्टामे बनवाक आग्रह कयलक । रासन ठेक्कामे बहुत रास आमद होवाक लालच सेहो देखौलक। लेखनदासी करय सकवाक क्षमता बराबरके पढाई कयला बाबजुद ऐहन जालझेलक बात सँ दशरथ अलग रहलवालमे दशरथ छलथि ।

जेनतेन दथरथ ठेक्कापट्टामे लखनकेँ साथ देवाक सहमत भेल । साथे एकटा शर्त रखलक जे कहियो ओ थाना, ब्यारेक आ सैनिक कहाँ नइ जाएव । अहि शर्तमे दुनुगोट सतप्रतिशत सहमति भेलावाद ठेक्काक

धरौटीवास्ते नाके परके जमिन धरौटीमे देवाक आग्रह अस्विकार करय नइ सकल । तीन महिनाकबाद ठेक्कामे लिखत शर्त बमोजिम रासन आपूर्ती नइ कसकवाक आरोप लतबैत धरौटीमे रहल जमीनकेँ डाक पर चढावल देल जानकारी दशरथके देलगेल । लेखनदासीधरिकेँ पढाई कयलावादो राजकाजक बहुत बात नबुझने दशरथ राजाधरि बिन्ती पत्र हुलाक सँ पठौलक मुदा वो सरकार धरि पहँच सँ पहिनही चोरी भगेल ।
अन्ततः नाके परके जमीन पर सेना कब्जा क अप्पन ब्यारेक खडा कयलक आ धिरे धिरे ओहिठाम रहल दशरथके बीस बिग्हा जमीन पर सेना अभ्यासके नाम पर कब्जा कलेलक । दशरथसँ कहियो राजमार्ग बनाब त कहियो शहर बसएवाक नाम पर बाँकि रहल सम्पूर्ण जमीन कब्जा करावमे परोसीराम आ लखन सफल भेल । जलसरमे रहल राजस्थानी आ राजकाजक कर असुली करयवाला ठेकेदारक जमीनमे दिन दुगुना रात चौगुना करवाक काजमे सरकारी लोकसभ सेहो साथ देलक ।
सय बिग्हा जमीन राखयवाला दशरथ धिरेधिरे सम्पन्नता सँ विपन्नतामे परिणत भगेलथि । नवनागरिक आ शासककेँ चालबाजी सँ चौघरा हवेली सेहो बेचके स्थितीमे पहुँचा देलगेल । एक बरषके बाद अंग्रेस अप्पन शासन छोडि भागि गेल । किछ समयक बाद जलसर आ जनकपुरीमे प्रजातन्त्र आएवगेल । मुदा विपन्न भेल दशरथ बालबच्चाके भोजनक ब्यबस्था करय लेल सम्पूर्ण परिवार विहार बिस्थापित भगेलाह । छोटमोट रोजगार क' अप्पन आ परिवारकेँ गुजारा चलाब लागल
समय परिवर्तन भेल । दशरथक बेटा, पोता धनिक बनिगेल । आब ओकरासभके नेपाली बनवाक मन होइछनि । मुदा जालसाजक दूनियामे ओसभ फेर सँ नइ परय चाहि छथि । अखनो हुनकसभक घरमे सेन र शाहकालिन राजाक भोजपत्ता आ कागजकेँ फाइल सनुक्कीमे राखल अछि ।
परिचयः
पूरा नामःराकेश प्रसाद चौधरी
जलेश्वर नगरपालिका ६
पत्रकार एवं अनुसन्धानकर्ता
प्रकाशित : खिचडी कविता संग्रह एवं फुटकर कथा, कविता, लेख ।
अप्रकाशित : फुलगाछ कविता संग्रह

३

डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

उपन्यास- हमर गाम (आगाँ)

11. राजा-रानी

हमरा गाममे एकटा एलाह राजा। आ हमरे गामक पुत्री भऽगेलखिन हुनकर रानी। एतए हिनक मूल नाम, जन्म तिथि आदिसँ हमरा सबकें सरोकार नहि अछि, मात्र हिनक अद्भुत चरित्र लीख रहल छी जे

हिनका दूनूकेँ वास्तविक अर्थमे हमरा गामक पूज्य राजा-रानीक रूपमे स्थापित कऽदेलक आ इलाकाक अन्य गाम सबमे सेहो हिनकर ख्याति बहुत पसरल।

राजा तऽजहिना नाम तहिना हुनक विशाल शरीर आ उदात्त चरित्र। हुनकर चरित्रक प्रशंसा सुनि बहुतो कुमारि कन्या अपन भाग्य अजमौलनि मुदा राजाकेँ तऽएकेटा पसिन्न पड़लनि। भऽगेल राजा आ रानीमे प्रेम। से एहन प्रेम जे लोककेँ विश्वासे नहि होइ। बूढ़ पुरान सब बाजए लगलाह-

“हौ, ई कोनो साधारण प्रेमी-युगल नहि छथि, जरूर कोनो देव अंश छथि। गामक ई उत्तरदायित्व जे हिनका दूनूक रक्षा करए।”

बस, तहिना भेल। हिनकर आवास बनाओल गेल, सब तरहक सुख सुविधाक इन्तजाम कएल गेल। पार बाँटि गौआँ सब हिनकर भोजन पठबए लागल। जहिया जकर पार होइ ओ अपनाकेँ धन्य बूझए जे आइ ओकरे अन्न-पानिसँराजा-रानी तृप्त भेलाह।

राजा-रानी एक दोसराक लेल प्राण दैत। रानी तऽअपनाकेँ अति भाग्यशाली बूझथि जे सब किछु होइतो हुनकर कोनो सौतिन नहि छलनि। बहुतो लोक प्रयास केलक जे एको नजरि राजा अन्य कन्यापर दऽदेथि मुदा बेकार। राजा तऽरानीक प्रति समर्पित छलाह। आब हुनका एहन आत्मतृप्ति भेलनि जे ककरो अनका दिस तकबो नहि करथि।

जेना कि प्रकृतिक नियम छिऐक, राजा-रानीक प्रेमक फल भेल हुनकर तीन पुत्र आ एक पुत्री। पुत्र लोकनि जेना जेना पैघ होइत गेलाह, अपन अपन व्यवसाय सम्हारलनि। बचि गेलखिन पुत्री। ओहो तीव्र गतिए बढ़ए लगलखिन। रानीकेँ चिन्ता भेलनि एकर बियाह कोना करौतीह। कहियो बियाह नहि करौलनि। अपने तऽतेहन राजकुमारक प्रेममे फँसलीह जे बियाहक प्रश्ने नहि उठलैक। मुदा बेटी?

रानीकेँ डर छलनि जे जवान बेटीकेँ देखि कतहु राजाक मोन डोलि ने जानि। मुदा राजा अपनहि अपनाकेँ सम्हारने रहलाह।

ऋतुमासक समय पर बेटीकेँ पुरुषक जरूरति भेलैक। ओ एम्हर-आम्हर तकलक। कतए जाएत? ओकरा माए-बापक प्रेमक खिस्सा तऽबूझल नहि छलैक। ओ लागल ओही पुरुषक चारू कात चक्कर काटए जे सबसँ लगमे ओकरा भेटलैक। ओ बिसरि गेल जे ओ पुरुष ओकर जन्मदाता छलैक।

पुरुष अर्थात हमरा गामक राजा अपनाकेँ बहुत सम्हारलनि मुदा भावीकेँ के रोकि सकलए? ओ नवयुवतीक चालिमे फँसिए गेलाह। ओकरा शरीरसँ उठैत मादक गन्ध हुनका मदमत्त कऽदेलक। हुनक संयमक बान्ह टुटि गेलनि। नवयुवतीक काम-पिपासा तृप्त भेलैक। ई दृश्य रानीसँ नुकाएल नहि रहलैक। रानी बजली किछु नहि मुदा बहुत दुखी जरूर भेलीह।

ई घटना हमरा सबकेँ देखल अछि जे ओही राति रानी मरि गेलीह। राजा अपनाकेँ दोषी मानए लगलाह। एहि नवयुवतीकेँ अपन दोसर रानीक रूपमे ओ स्वीकार नहिए कऽसकलाह आ एक मासक भीतरे शोकसँ डूबल ओहो शरीर त्याग केलनि।

राजा-रानीक एहि अमर प्रेमक खिस्सा इलाकाक आनो गाममे लोक सबकेँ बूझल छैक।

q

जारी....

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१. नारायण यादव- इमानदार चोर २. डॉ. बचेश्वर झाक २ टा आलेख

१

नारायण यादव

इमानदार चोर

चोर-चोर मसियौत भाय। दूटा चोर एक पैघ व्यापारीक घरमे चोरी करबाक हेतु पहुँचल। दुनू चोरक नाम पनमा आओर मखना छल। दुनू चोरी करवाक कलामे निपुण छल। कतबो सतर्क घरक मालिक कियैक नहि होथि। मुदा जखन पनमा, मखनाक विचार ओहि मालिकक घरमे चोरी करवाक हेतैक तँ चोरी कइये लैत छल।

ओहि इलाकाक सवसँ पैघ व्यापारी छल। ओकर नाम करोड़ीमल छलैक। पनमा, मखना करोड़ीमलक घरमे चोरी करवाक लेल पहुँचल। जखन करोड़ी मलक पहरेदार सुति रहल तखन निशा भाग रातिमे पनमा मखना व्यापारीक घरमे सेंध काटय लागल, सेंध काटल भय गेल। तखन मखना सेंघमे अपन दुनू पैर दय सेंघक जाँच कयलक। पैरसँ ससेंघक अगिला भागक जाँच कय, पुन: पैर वाहर कयलक। जखन ई बुझ्ना गेलैक जे आब घरमे पैइसवामे कोनो बाधा नहि होयत। तखन ओ सेंघक वाटे घरमे पैइसवाक प्रयास करय लागल। जखन ओ पूरा सिर सेंघमे देलक आकि देबाल नीचा धसि गेल। मखना देबालक तरमे दवा कय मरि गेल। पनमा कतबो प्रयास कयलक जे मखनाकेँ खिंची ली से नहि भय सकल। अन्तमे भोर भय गेल। पनमा दोसर दिन राजाक ओतय जा कय नालिश कयलक, राजाक ओतय फर्द वयान ई देलक जे राति हम सभ करोड़ी मलक घरमे चोरी करबाक हेतु गेल रही। हमर संगी सेंघ कटलक आ ओहिमे प्रवेश करबाक हेतु घुसल आकि देबाल धसि गेल आ हमर निर्दोश संगी मारल गेल। मालिक करोड़ी मलक कमजोर देबालक कारणेँ हमर संगी मारल गेल। हम सभ जावत चोरी नहि कयलहु तावत तक तँ निर्दोष छलहुँ।

चोरोक एक अजीब दुनिया होइत छैक। राजाक बुद्धिसँ चोरक बुद्धि पैघ होइत अछि।

राजा पनमाक फर्द वयान (नालिशी) केँ स्वीकार कयलक। राजा चोकर नालिशीकेँ सुनवाई शुरू करय लगलैन्ह। राजा सिपाहीकेँ हुकुम देलैन्ह जे ओहि व्यापारीकेँ एतए उपस्थित करू।

सिपाही राजाक आदेशानुसार ओहि व्यापारीकेँ न्यायालयमे बजाओल गेल। राजा व्यापारीसँ पुछलथिन्ह-

"सेठजी, अहाँक मकानक दिवाल कमजोर कियैक छल जे एकटा निर्दोष चोर सेंघमे दवा कय मरि गेल?"

व्यापारी वाजल-

"सरकार, चोर निर्दोष कोना छल?"

ताहिपर राजा बजलाह-

"जावत चोर चोरि नहि कयने छल तावत तँ ओ निर्दोष छल। चोरीक वादे ने ओ दोषी होइताह। चोर मरि गेल अहाँक दिवालक कमजोरक कारणेँ तेँ हेतु अहाँकेँ फाँसीक सजा भेट रहल अछि।"

व्यापारी बजलाह-

"सरकार, एहिमे हम कोनो दोषी भेलहु। हम तँ अपने मकान नहि वनौने छलहुँ। मकान तँ राजमिस्त्री वनौने छल।"

राजा बजलाह-

"हँ, अहाँ दोषी नहि छी, एहिमे राजमिस्त्री दोषी अछि। सिपाहीकेँ आदेश देलैन्ह जे व्यापारीकेँ छोड़ि दियौक आ ओकरा बदलामे राज मिस्त्रीकेँ फाँसी दय देल जाए।"

राजाक हुकुम सुनि सिपाही व्यापारीकेँ बरी कय देलक। आ राजमिस्त्रीकेँ पकड़ि राजाक दरवारमे उपस्थित कयलक। राजा बजला-

"राज मिस्त्री अहाँ केहेने दिवाल जोड़लहु जे एकटा निर्दोष चोर दिवालमे दवि मरि गेल। दिवाल कमजोर जोड़लाक जूर्मे अहाँकेँ फाँसी भेटल।"

राजमिस्त्री बजलाह-

"सरकार एहिमे हमर कोन दोष। हम तँ राजमिस्त्री थिकहु। गारा (मशाला) बनेनाई काम तँ हमर काज नहि अछि। हमर लेवर जे मशाला बना कय हमरा देत तकरे सने हम जोड़व। मशाला कमजोर बना कऽ दयलक तँ दिवाल कमजोर भऽ गेल। एहिमे तँ हम निर्दोष छी। सरकार हमरा सन निर्दोष लोककेँ फाँसी दय कोन लाभ। फाँसी तँ दोषीकेँ देबाक चाही।"

राजा बजलाह-

"ई राजमिस्त्री ठीके कहैत छथि। राजमिस्त्रीकेँ छोईर दहक आ ओहि मजदूरकेँ फाँसी पड़वाक चाही।"

सिपाही लोकनि राजमिस्त्रीकेँ छोइड़ देलक आ ओहि मजदूरकेँ पकड़ि अनलक। राजा, मजदूरकेँ सामने बजौलक। राजा राजमिस्त्रीक बदला ओहि मजदूरकेँ फाँसीक सजा सुनौलक।

मजदूर अपन सफाईमे बाजल-

"सरकार, एहिमे हमर कोनो दोष नहि, कियैक तँ जखन हम मशाला (गारा) सिमेंट-वालु) मे पानि मिला रहल छलहु तखन हमरा पाछाँमे एकटा हाथी भरकि हमरा तरफ दौबल तँ पानि गाड़ा (मशाला)मे अधिक पड़ि गेल। तँ महशाला गीला भय गेल आ तेँ दिवाल कमजोर भय गेल।"

राजा मजदुरक बात सुनि हाथीक महाउथकेँ बजाबक आदेश देलैन्ह। तुरंत सिपाही हाथीक महाउथकेँ बजौलक। आ आदेश पारित कयलक जे मजदूरकेँ माफ कय हाथीक महाउथकेँ फाँसी देल जा सकैत अछि।

हाथीक महाउथकेँ फासी देल जा सकैत अछि। हाथीक महाउथकेँ अपन सफाई देबाक लेल कहल गेल। हाथीक महाउथ अपन सफाईमे बाजल-

“सरकार एहिमे हमर कोन दोष। हम हाथी लय कऽ आबि रहल छलहु ताहि बीच एकटा महिला झुनझूना बाला जेवर पहिर पहिर हाथीक वगलमे आयल। हाथी कंगनक आवाज सुनि भरकि गेल तँ एहिमे हम कतय दोषी भेलहु।”

राजाकेँ महाउथक बात ठीक बुझैल। महाउथ निर्दोष सावित भेल। आब महाउथक बदला ओहि महिलाकेँ दोषी मानलक। ओहि महिलाकेँ सिपाही राजाक दरवारमे उपस्थित कयलक। महिलासँ अपन सफाई देबाक आदेश भेल।महिला बाजलि-

“सरकार, एहिमे हमर कोन दोष। हम जे गहना पहिरने छलहु से तँ अपने नहि बनौने छलहु। ओ तँ हम बाजारक सोनारसँ खरीने छलहु। ई गलती तँ सोनारक छैक जे एहेन झुनझुनावाला गहना कियैक बनौलक। जे हम ओकरासँ खरीद कय पहिरलहु। ओ एहेन गहना नहि वनौतथि तँ हम झुनझुनावाला गहना नहि खरीदतहु आ नहि पहिरितहु। जँ ई गहना हम नहि पहिरतहु तँ हाथी नहि भरिकैत ने गाड़ामे अधिक पानि पड़ितैक आ ने सेठजीक दिवाल कमजोर होइतैक।”

राजा ओहि महिलाक वयानसँ सन्तुष्ट भेलाह। सैनिककेँ आदेश देलथिन्ह जे एहे महिलाकेँ बरी कय देल जाय आ एकरा बदलामे गहना बनौनिहार सोनारकेँ फाँसी देल जाय।

तुरत सैनिक सोनारक खोजमे लागि गेल। गहिना बनौनिहार सोनारकेँ पकड़ि लौलक। राजाक सामने हाजिर कैल गेलैक।

सोनारसँ राजा सफाई देबाक लेल कहलक।

सोनारकेँ अपन बचावमे कोनो जवाब नहि फुरैलैन्ह। राजाक सामने सोनार दोषी सावित भेल। राजा सोनारकेँ फाँसिक सजा सुना देलैन्ह।

एहि तरहे जल्लादकेँ सूचित कयल गेल जे सोनारकेँ फाँसीपर लटका दे कियैक तँ राजाक आदेश छलै जे हत्याक बदला हत्यासँ लेल जाय। जल्लाद सोनारकेँ लय फाँसीक फन्दा ओकरा गर्दनमे लगौलक आ रस्सीकेँ ऊपर तरफ खिचिलक। संयोग नीक छल जे बार-बार फाँसीक फन्दा सोनारक गर्दनमे लगाओल जाय आ जहाँ ऊपर खिंचल जाय तँ फाँसीक फन्दा सोनारक गर्दनमे सँ निकलि जाय।

किछु देर ई सिलसिला जारी रहल मुदा सोनारक गर्दनमे फाँसीक फन्दा नहि टिकल। जल्लाद राजाक समीप पहुँचल तँ कहलक-

“सरकार, एहि सोनारक गर्दनमे फाँसीक फन्दा काम नहि करैत अछि। राजाक आदेश भेल मोट गर्दन वालाकेँ पकड़ि ला आ ओकरा फाँसी दय दहिन।”

आब दू गोट सिपाही मोटका गर्दन वलाकेँ खोजमे लागि गेल। किछु दूर गयलाक वाद एकटा मन्दिरपर बाबाजी चेला जकर गर्दन बड़ मोट छल तकरा पकड़ि लय गेल। बाबाजी चेला आ चेला गुरु किछु दिन पूर्वमे ओहि मन्दिरपर दोसर देशसँ आएल छल। चेलाक कथन छलैक ओ अपन गुरुकेँ कहलथिन्ह जे अपना सभ बर्त्तमान मन्दिरपर चलू कियैक तँ ओहि राजमे टके सेर भाँजी आ टके सेर खाजा छैक। सस्ता मधुर

खरीद ओ दुनू गुरु-चेला खाय लागल। यद्यपि गुरुजी ओहि मन्दिरपर जयबासँ रोकलक। मुदा चेलाक जिद्दपर ओहो राजी भय गेल छलाह। आब गुरुजी एकटा तरकीव सोचलक। ओ चेलाकेँ कानमे किछु कहलैन्ह। कहलैन्ह-

"जखन तोहरा गर्दनमे फाँसीक फंदा लगौतुन्ह तखन हम तोहरा गर्दनसँ फाँसीक फन्दा हम अपना गर्दनमे लगा लेव। जखन हम फाँसीक फन्दा लगवय लाव तखन हमरा गर्दनमे सँ फाँसीक फन्दा निकालि अपना गर्दनमे लगा लिहअ। ई शिलशिला तावत धरि चलय दिहक जावत राजा नहि पहुँच जाथि।"

राजाक सिपाही गुरुजीक चेलाकेँ पकड़ि राजाक दरवारमे उपस्थित कयलक। चेलाक संग गुरु सेहो दरवारमे उपस्थित भेलाह। राजाक हुक्मक आधारपर चेला जकर गर्दन वड़ मोट छल फाँसीक तख्तपर लय गेल आ फाँसीक फन्दा ओकरा गर्दनमे लगाओल गेल। एक, दू, तीनक आवाजक संग रस्सी खिंचत आकि गुरु दौड़ि कऽ ओहि तख्तपर पहुँच गेलाह। चेलाक गर्दनसँ फाँसिक फन्दा अपना गर्दनमे लगा लेलक आ सिपाहीकेँ कहलक हमरा फाँसी दिअ, एकरा छोइर दियौ। सिपाही सैह करय लागल। मुदा पूर्व नियोजित कार्यक्रमक अनुसार गुरु-चेला बेरा-बेरी गुरुक गर्दनिसँ चेला आ चेलाक गर्दनिसँ गुरु फाँसीक फन्दा अपना गर्दनिमे लगावक हेतु प्रयासरत रहय लगलाह। एहि बातक सूचना सिपाही राजाकेँ देलैन्ह। राजा स्वयं आवि एहि गुरु-चेलाक कारनामाकेँ देखलैन्ह। ओ सिपाहीकेँ आदेश देलैन्ह जे फाँसीक प्रक्रिया तावत बन्द करू जावत हम अगिला आदेश पारित नहि करी। राजा ओहि दुनू गरु-चेलाकेँ अपना लग बजौलैन्ह। आ गुरुसँ पुछलैन्ह जे अहाँ दुनू व्यक्ति एना कियैक फाँसीपर झुलबाक हेतु तत्पर छी। गुरु राजाकेँ कानमे कहलक जे सरकार अखन एहेन मुहुर्त छैक जे फाँसी फन्दापर झूलि जाइत ओ इन्द्र लोकक राजा होयत तँ हम चाहैत छी जे हम फाँसीपर झूलि आ जाहिसँ इन्द्रलोकक राज बनी औ चेला एहि मर्मकेँ जानैत छथि तँ ओ इन्द्र लोकक राजा बनबाक आकांक्षा करैत छैथ। तँ अपने निर्णय कय दीअ जे के इन्द्र लोकक राजा वनवाक योग्यता रखैत छथि।

राजा सोचलक जे एहि छोट-छीन राज्यक राजसँ बढ़िया जे हमहीं ने कियैक इन्द्र लोकक राजा बनी। ओ सिपाहीकेँ आदेश देलैन्ह जे एहि दुनू गुरु-चेलाकेँ छोड़ि एहि नीक मुहुर्त्यमे हमरे फाँसी फन्दापर झुला दे। सिपाही एहि दुनू गुरु-चेलाकेँ बकसि देलक आ राजाकेँ फाँसीक फन्दापर झुला देलक। गुरु-चेला राम-राम करैत अपना देश भागि कऽ चलि अयलाह।

२

डॉ. बचेश्वर झाक २ टा आलेख

मैथिलीक विकासमे नेपालक योगदान

सन्दर्भ बोध- मैथिली साहित्यक उत्पत्तिक जनमानसक हृदयसँ भेल अछि तँ एहिठाम जनमानसक हेतु मनोरंजक गीत काव्य ओ नाटकक प्रधानता रहल अछि। एहि कारणेँ मैथिली साहित्यक विकासधारा मिथिलहिटामे नहि प्रवाहित भेल प्रत्युत् मिथिलाक अतिरिक्त एकर प्रधानधारा उत्तर नेपालमे एवम् दोसर

पुर्वांचल प्रदेशमे प्रवाहित भेल। जहाँ तक वास्तविकता छैक नेपाल आ मिथिलाक सम्बन्ध सदा-सर्वदासँ आबि रहल अछि। कर्णाट् वंशीय राजा हरि सिंह देव मुसलमान आततायी गयासुद्दीन तुगलकसँ पराजित भऽ मिथिलासँ भागि नेपाल गेला ओतहि राज्यक स्थापना कएल। मिथिलाक विद्वान लोकनि सेहो अपनाकेँ असुरक्षित बुझि नेपालेमे आश्रय लेलनि। नेपालक तत्कालीन राजा लोकनि मैथिल विद्वावनक बड़ सम्मान कएलनि। ओहिठामक राजा संगीत आ नाटकक विशेष प्रेमी छलाह। कला मर्मज्ञ मैथिल विद्वान अपना संग अनेको विषय-वस्तुक पाण्डुलिपि लेने गेल छलाह तँ हुनका सभक समादृत हएब उचिते छल। संगीतसँ परिपूर्ण मैथिली नाटकक रचना नेपालक तत्कालीन राजा लोकनिक अवधिमे मैथिल विद्वान द्वारा भेल। यैह कारण जे नेपाल मैथिला विद्वान आ भाषाक केन्द्र भऽ गेल रहए।

नेपालमे मैथिली भाषाकेँ राजकीय भाषा मान्यता भेटि गेल छलै। मुख्य भाषाक रूपमे मैथिली गनल जाइत छल। साहित्यक हरेक विधा एहिठाम अनुप्राणित भेल। एहुखन नेपालक तराई क्षेत्रमे मैथिली भाषी कए मिथिलाक संस्कृतिक स्पष्ट प्रभाव देखल जाइत अछि।

'नाट्यम् रसात्मक काव्यम्' काव्य क्षेत्र तँ आरो चमत्कृत भेल। खास कऽ हृदय काव्यक भरपूर सामग्री नेपालमे ओरिआओल अछि।

सातम् आठम् शताब्दीक वौद्धगानसँ लऽ कऽ जे क्रम नेपालक धरतीपर मैथिलीक विकास हेतु चलि पड़ल छलैक ओ मध्य कालमे आबि अति समृद्ध अवस्थामे देखल जाइ अछि।

म.म. हर प्रसाद शास्त्री 1916 ई.मे सिद्ध साहित्यक अन्वेषण नेपाल मध्य कएल, जेकरा बंगला भाषाक प्राचीनतम साहित्य आनि वौद्धगान ओ दोहाक नामसँ प्रकाशित कएल।

ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'वर्णरत्नाकर'नेपालहिमे प्राप्त भेल। विद्यापतिक प्रमाणिक पदावली एतुक्के देन थिक।

कर्णाट् वंशीय राजालोकनिक संग मल्लवंशीय राजा लोकनि सेहो मैथिली साहित्यक अनन्य प्रेमी छलाह। देखल जाइछ जे जय स्थित मल्लसँ लऽ कऽ रंजित मल्ल धरि एतए मैथिलीक सर्वांगीण विकास कएल। मल्लकालीन मैथिली साहित्यमे गीत तथा नाटकक प्रधानता रहल अछि। गीत काव्य भक्ति प्रधान अछि। भक्तपुर (भात गाँव)क राजा भूपतीन्द्र मल्ल (1687-1731) ई. राज्यकाल विष्णु, शिव आ भवानी आदिपरक शतश: मैथिली गीतक रचना कएने छलाह। एहिठामक रचित मैथिली गीतपर महाकवि विद्यापतिक रचनाक पूर्ण प्रभाव अछि। भाषा परिमार्जित एवम् सुललित देखल जाइछ-

"हे देवि!शरण राखूभवानी,

तुअ पद कमल भ्रमर मोर मानस

जनम जनम ईहो मानी।

भूतीन्द्र मल नृप ईहो गाओल

जय गिरिजा पति स्वामी।।"

मिथिलाक छिन्न-भिन्न भाषा, साहित्यक आकारकेँ सुरक्षित सम्वर्द्धित नेपालेक राजवंश द्वारा भेल। एहुखन नेपालक लाइब्रेरीमे अमूल्य ग्रन्थ ओ दुर्लभ ग्रंथ सभ ठेकनाओल अछि जे जीर्णवस्थाकेँ प्राप्त कएने अछि।

विश्व साहित्यक पर्यालोचन कएलासँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे साहित्यक समस्त प्रभेदमे नाटकक स्थान अति महत्वपूर्ण अछि। संस्कृतक आचार्य लोकनि काव्येषुनाटकम् रम्यम्क अन्तर्गत नाटककेँ अनेक विषयक दृष्टिए रमणीय कहि एकर सत्यतापर मोहर लगा देलन्हि। नाटकमे अनुकरणात्मक अभिनय दृश्यमान होइछ तेँ एकरा रूपक कहल जाइछ। उन्मेष युगक प्रमुख नाटक केन्द्र भक्तपुर बनेपा कान्तिपुर अछि।

हरि सिंहदेवक नेपाल आगमनसँ इतिहासमे नाना प्रकारक परिवर्त्तन भेल तथा नेपाल आ मिथिलाक अनेक प्रकारक सम्बन्ध भऽ गेलैक। हरि सिंह देवक मृत्युक पश्चात् हुनक पुत्र मान सिंह देव तथा श्याम सिंह देव नेपालमे राज्य कएलन्हि। श्याम सिंह देव नेपालमे राज्य कएलन्हि। श्याम सिंह देवक कन्याक विवाह मिथिलामे भेल। एकर फल ई भेल जे मैथिल विद्वानक आदर सत्कार नेपालक राजदरवार एवम् अन्य विशिष्ट समाजमे बराबर होइत रहल। बादमे नेपालक मल्लवंशी राजाक पारिवारिक सम्बन्ध सेहो मिथिलामे भेल। एहिसँ मिथिलाक भाषाक प्रभाव नेपालपर नीक जकाँ पड़ल। मिथिलासँ विशिष्ट विद्वान,पण्डित, कवि, धर्मशास्त्री, संगीतज्ञ सभ नेपाल जाय लगलाह। मिथिलामे हुनका लोकनिक संरक्षणक सेहो कोनो व्यवस्था मुसलमान सवहिक निरंतर आक्रमणसँ नहि रहि गेल। इहए कारण भेल जे मैथिल विद्वान लोकनि मिथिलासँ मैथिली नाटकक बीज नेपाल लऽ गेलाह। मैथिली नाटकक जन्म वस्तुत: मिथिलामे भेल मुदा विकास नेपालमे।

नेपालमे मैथिली नाटकक विकासक संक्षेपत: निम्नलिखत कारण भेल-

(क) पारस्ववर्ती क्षेत्र होएबाक कारण मिथिला आ नेपालक सांस्कृतिक सम्बन्ध बरोवरि अछि।

(ख) नेपाल सभ दिन हिन्दूराज्य रहल आ मिथिलामे सेहो हिन्दूत्वक प्रति मोह। नेपालक राजा एहिठामक विद्वान ओ पण्डितक सम्मान कएलन्हि।

(ग) नेपालक मल्लवंश ओ मिथिलाक कर्णट् वंशक रक्त सम्बन्ध दूनू क्षेत्रक निवासीमे, भाषा आ संस्कृतिकेँ आओर निकट अनवामे सहमत भेला।

(घ) मुसलमानी आक्रमणक कारणेँ एहि भू-भागक विद्वान आ पण्डित नेपाल जाय स्वस्थ चित्त भए सकलाह।

(ङ) हरि सिंह देव एतए 1324 ई. गमासुद्दीन तुलकसँ पराजित भए नेपालमे भात गाँवक निकट अपन राज्य स्थापित कएलन्हि जे पाँच पीढ़ी धरि चलल। एहि कर्णट शासन कालमे कवि साहित्यकारक पर्याप्त आदर भेल।

(च) मल्लवंशक राजा सभ सेहो मैथिल विद्वान, पण्डित, कवि संगीतज्ञ आदिकेँ सम्मानित करैत छलाह आ वसवाक हेतु पर्याप्त भूमि आ सम्पत्ति देलन्हि।

(छ) मल्लवंशक शासनकालमे मैथिली नेपालक राज भाषा भए गेल तथा मैथिलीकेँ विकसित होएबाक अवसर भेटल।

(ज) इतिहास साक्षी अछि जे मुसलमानी प्रभुत्वमे नाटक नहि विकसित भेल। हिन्दू राज्य नेपाल तकर नीक वातावरण प्रस्तुत कएलक।

(झ) नाटकक विषय-वस्तु नेपाल आ मिथिलाक प्रचलित कथाक आधारपर लेल गेल।

मल्लवंशक राजा जय स्थित मल्ल स्वयं बड़ कलाप्रिय छलाह। हिनक समय 1394 ई. धरि कहल जाइछ। हिनक पश्चात् मक्षमल्ल (1474) ई. धरि नेपालमे मैथिली नाटकक रचनाक कोनो पुष्ट प्रमाण नहि भेटैछ। मक्षमल्लक पश्चात् नेपाल तीन भागमे विभक्त भऽ गेल आ तीनटा राजधानी भात गाँव,बनिकपुर तथा कान्तिपुर आ ललित पाटन आ काठमाण्डू स्थापित भेल। एहि तीनू राज्वंशक राजा लोकनि स्वयं नाटकार छला तथा ओ लोकनि कवि एवम् नाटककारकेँ प्रश्रय देलन्हि। विभिन्न अवसरपर नाटकक अभिनयक आयोजन करबैत छलाह। नाटककेँ रचनिहारकेँ प्रोत्साहन दैत छलाह।

भाग गाँव शाखामे विश्व मल्लक समय (1533) मे नाटकक बहुत विकास भेल। प्रसिद्ध नाटक ‘विद्या विलाप’क रचना ओही समयमे भेल। एहि नाटकक अनुवाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सेहो ‘विद्या विलाप’नाम विधा सुन्दर नामसँ कएल। जगज्योर्तिमल्ल (1618-1833) राज्यकालमे मैथिली नाटक खूब विकसित भेल। हिनक राज्यकालमे मुदित कुवलमश्व वंशमणिक लिखलन्हि। हर गौरी विवाह एवम् कुंज विहारी नाटक सेहो कम प्रसिद्धि नहि पओलक। हिनक पौत्र जगत्प्रकाश मल्लक समयमे छौटा मैथिली नाटक लिखल गेल। उषाहरण, नलीय नाटकम्, पारिजात हरण, पार्वती हरण, मलय गन्धिनी एवम् मदन चरित्र। सुमति निता मित्र मल्ल स्वयं एक पैघ नाटककार छलाह जनिक लिखल आठ गोट नाटक भेटैत अछि। हिनक पुत्र भुपतीन्द्र मल्ल स्वयं कवि छलाह जनिका समय चौदहटा रचना भेल रंजित मल्लक समयमे तँ चरम सीमापर नाटकक रचना पहुँच गेल छल ई मल्ल वंशक अन्तिम राजा छलाह। 1921 ईस्वीमे मल्लवंशक अन्तिम राजा रंजित मल्लक समयमे (1921) मैथिली नाटक रचना एक प्रमुख बात थिक।

नेपालमे शहवंशक उदय आ एकीकरणक पश्चात् भाषाक नामपर गौण काज लेल अछि। गोरखा बोलीक प्रभावमे पड़ि मैथिली तँ लग-भग मेटाय गेल। खाली नाच, गीत कतहु-कतहु लेखन आदिमे एकर रूप सुरक्षित रहलैक। राणाकालीन नेपाल भाषा साहित्यक हेतु अन्धकारक युगक रूपमे मानल जाइत अछि। मैथिलीक अवस्था तँ नेपालमे विचारणीय रहल।

2007 सालक मुक्ति राणा शासनसँ आ बादमे 2017 साल धरि उथल-पुथलक समय होएबाक कारणेँ मैथिलीक विकास हेतु नेपालमे कोनो ठोस काज नहि भऽ सकल। 2014-16 सालमे एकटा ‘नव जागरण’ पत्रक एक मात्र अंकक प्रकाशन संतोष दिया सकैत अछि। 1960 ई.क बाद कनेक स्थिरता तँ आएल मुदा सरकारी संरक्षणक अभावमे गत 30 वर्षमे जतेक साहित्यिक काज होएबाक चाही ओ नहि भऽ सकल। कोनो साहित्यानुरागी आ पिपासु मोनकेँ आ अहलादित करएबला सामग्रीक अभाव सदैव खटकैत रहल तथापि एहि अवधिमे जे किछु भऽ सकल अछि तकर साहित्यक विधागत लेखा-जोखा कएल जा सकैछ।

आधुनिक काल : मध्यकालीन मैथिली साहित्यक जएटा उपलब्धि अछि से आधार स्तभक रूपमे मानल जाइछ। मुदा नेपालमे मैथिली साहित्यक सम्पूर्ण काज 1960 ई.क बादे भेल जकरा हमरा लोकनि आधुनिक कालक प्रारंभ मानि कऽ चलैत छी।

एहिसँ पूर्व पचासेक दशकमे पं. सुन्दर झा शास्त्री अपन मूल जन्म स्थान दरभंगासँ मैथिली लेखकक रूपेँ प्रतिनिधित्व करैत छलाह। गलीक कुकुर आदि एखनो दरबार नै खुजलैए सन रचना करैत छलाह।

पं. जीवनाथ झा सेहो अपन प्रवन्ध काव्य आदि रचनासँ प्रतिष्ठित भऽ चुकल छलाह। वस्तुत: जनकपुरमे पं. जीवनाथक प्रवेश एतुक्का वातावरणमे साहित्यक प्रति अनुराग जगौलक आ ओ साहित्यक गुरुजीक रूपमे सर्वत्र चर्चित भेलाह। डॉ. धीरेन्द्र साठिक बाद जनकपुरमे आधुनिक मैथिलीक शुरूआत कएलन्हि। ओ एहिसँ पूर्व मैथिली लेखकक रूपमे प्रतिष्ठित भऽ गेल छलाह। 1962 ई.मे प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन नेपालक मैथिली सहित्यक इतिहास लिखलन्हि, जाहिमे प्राचीन साहित्यक रूपमे चर्चा भेल अछि ओतेक आधुनिक कालक साहित्य हल्लुक प्रतीत भेल अछि। तेँ हिनकासँ तुलनात्मक दृष्टिए डॉ. जयकान्त मिश्रक इतिहास लेखन श्रेष्ठतर अछि। पहिल कारण तँ एक दशकमे साहित्य लेखन ओतेक समृद्ध नहि छल। दोसर सूचनागत त्रुटि सेहो प्रफूल्ल सिंहकेँ भेलन्हि।

आब तँ तीन दशकमे किछु-किछु एहन रचना सभ भेल अछि जकरा आंगुरपर गनल जा सकैत अछि।

प्रवन्ध काव्यमे पं. रमाकान्त झाक 'व्यथा'डॉ. धीरेन्द्रक 'त्रिपुण्ड'पं. मथुरानन्द चौधरी माथुरक खण्ड काव्य 'त्रीशूली'प्रमुख अछि।

मुक्तक काव्यमे डॉ. धीरेन्द्रक 'हैंगरमे टाँगल कोट'करूणा भरल ई गीत हमर'राम भरोस कापड़ि भ्रमरक बन्न कोठरीमे औनाइत धुँआ, नहि आब नहि,मोमक पिघलैत अधर, अपन्न-अनचिन्हार, विनोद चन्द्र झाक 'कृषक बाला, पं. शुभ नारायण झाक 'यंत्रणा', पं. सुरेश झाक मैथिली रस कलश काव्य प्रमुख कृति देखना जाइछ। पं. झा मैथिली गीता सेहो लिखने छथि। चन्द्र शेखर झा शेखरक 'हम नेपाल हमर नेपाली'कविता संग्रह आएल अछि।

अनुवाद विधा : नेपालक कतिपय साहित्यकार विभिन्न रचनाक अनुवाद मैथिली भाषामे कएलनि अछि, जे हुनक मैथिली प्रेमक प्रतीक थिक। यदुवंश लाल चन्द्र सप्तरी जिलाक तिलाठी ग्रामवासी द्वारा 'उसैको लागि'क चाँदनी साहक रचनाकेँ लोकेश्वर व्यथित, पं. कृष्णा प्रसाद उपाध्यायक द्वारा विद्यापतिक पदावलीक, डॉ. धीरेन्द्रक 'उमर खैयानक'महाकवि भनुभक्तक रामायण मैथिलीमे अनुवाद कऽ वद्रीनायण वर्मा अद्भुत कएल अछि। प्रकाशनक बाटपर अछि पं. सूर्यकान्त झाक मेघदूतक, डॉ. रमेश द्वारा सात जापानी कथा अनुवाद मैथिलीमे चमत्कारी प्रयास थिक।

कथा-उपन्यास आ साक्षात्कार विधा : वस्तुत: नेपालमे मैथिली कथाक क्षेत्रमे सेहो नीक काज भेल अछि। किछु प्रतिबद्ध कथाकारक संग्रह एखन धरि समक्ष नहि भेल अछि तँ छुछुन्न लगैत अछि। एखन धरि प्राप्त कथा संग्रहमे डॉ. धीरेन्द्रक 'कूहेश आ किरण', 'पझाइत धूरक आगि','शतरूपा आ मनु' राम भरोस कापड़ि भ्रमरक तोरा संगे जयवो रे कुजवा, रेवती रमण लालक 'पाधवनहि एलाहमधुपुरसँ' प्रमुख अछि।

डॉ. धीरेन्द्रक सम्पादनमे नेपालक प्रतिनिधि गल्प संग्रह, प्रो. सुरेन्द्र लाभक संपादनमे नेपालीय मैथिलीक उत्कृष्ट गल्प प्रकाशित भेल अछि।

उपन्यास : एहि विधामे श्यामाझाक 'बिनु माइक बेटी', कुमरकान्तक 'सेहन्ता'क अतिरिक्त एम्हर डॉ. धीरेन्द्रक भोरुकवा, कादो कोयला, ठुमुकि चल,पाठककेँ सेतोष दैत अछि।

साक्षात्कार : साक्षात्कार विधामे रेवती रमण लालक साक्षात्कार एक मात्र पोथी अछि, ओना एहि क्षेत्रमे राम भरोस कापड़िक नीक काज सभ भेल अछि। जकरा अनतर्गत अश्रेय, केदारनाथ व्यथित, विजय मल्ल, मातृका प्रसाद कोइरालाक साक्षात्कार खूब चर्चित भेल अछि।

नाटक : एहि विधामे आधुनिक नाटककारमे महेन्द्र मलंगिया लेखनमे भिड़ल छथि। प्रारंभिक रचना 'लक्ष्मण रेखा खण्डित', जुआएल कन-कनी, ओकरा आंगनक बारह मासा, टूटल तागक एकटा छोर, एकांकी संग्रह हुनक प्रमुख पुस्तकाकार छन्हि। काठक लोक फिलहाल चर्चामे आएल अछि। 'देहपर कोठी खसा दिअ'आलुक बोरी सन बहुतो रेडियो रूपक ओ लिखने छथि। एकांकी लेखकक रूपमे डॉ. धीरेन्द्र, राम भरोस कापड़ि, डॉ. लक्ष्मण शास्त्री, श्याम सुन्दर शशि,ललनक प्रमुख स्थान अछि।

निवन्ध समालोचना तथा संस्मरण : एहि विधामे प्रो. ब्रज किशोर ठाकुरक अध्ययन ओ विवेचन छोड़ि आन रचना पुस्तकाकार रूपमे नहि आबि रहल अछि। ओना, डॉ. धीरेन्द्रक साहित्य सम्बन्धी, भ्रमरक लोक संस्कृति सम्बन्धी, डॉ. विमलाक साहित्य सम्बन्धी महेन्द्र मलंगियाक, रेवती रमण लालक राजेन्द्र किशोरक विविध सामयिक निबन्ध सभ प्रकाशित भेल अछि।

यात्रा संस्मरण : एहि विधामे राम भरोस कापड़ि भ्रमरक अत्यन्त महत्वपूर्ण रचना आएल अछि। प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनक, रेवती रमण, श्याम शशि सेहो एक दिस संलग्न छथि। समालोचना संग्रहमे राम भरोस कापड़ि भ्रमरक सम्पादनमे नेपालक मैथिली पत्रकारिता आएल अछि।

पत्र साहित्य : 2025 सालसँ प्रारम्भ भेल नेपालक सामयिक संकलन युग आब एकटा ठोस रूप लऽ चुकल अछि। प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'क सम्पादनमे मैथिली विराटनगरसँ डॉ. हरिदेव मिश्रक सम्पादनमे ईजोत काठमांडूसँ, पं. सुन्दर झा शास्त्रीक सम्पादनमे फूल-पात काठमांडूसँ, वाणीक हिलकोर जनकपुरसँ संगहि दुविधान एतहिसँ एम्हर 2019 सँ राम भरोस कापड़िक सम्पादनमे गाम-घर साप्ताहिक निरन्तर प्रकाशित भऽ रहल अछि। अर्चना द्वैमासिक गत 16 वर्षसँ प्रकाशन आ 'आँजुर' आब मासिक रूपमे प्रकाशित भऽ रहल अछि। नेपाली भाषी साहित्यकार द्वारा मैथिली साहित्य सेवामे डॉ. कृष्णा प्रसाद उपाध्यायक नाम आदरसँ लेल जा सकैछ। ओना, हिनके भाइ डॉ. लक्ष्मण शास्त्री तँ अद्भुत काज कएलनि अछि। ई अपन दू गोट पोथी दऽ एक धर्म काव्य युधिष्ठीर महाकाव्य आ दोसर धीकताम् गीत काव्य। रामेश्वर प्रसाद अर्याल द्वारा रचित शिव-मधुक भाग्य रेखा नामक कथा काव्य देखि पड़ैत अछि। फुटकर रचनामे मनुव्राजकी, केवेर धिमिरे, जगदीश धिमिरे आदि प्रमुख छथि।

उपसंहार वा निर्णयात्मक बिन्दु : एहि तरहेँ विभिन्न विधामे गत तीस वर्षसँ भेल विकासक रूप रेखा पूर्ण संतोष तँ नहियेँ दैत अछि मात्र आशा टा जगबैत अछि। विकासक संभावना नीक छैक। अवसर पाबि चिक्कन काज कऽ सकैछ। नेपालमे संवैधानिक राजतंत्रक अन्तर्गत पूर्ण प्रजातंत्रक बहाली भेलासँ भाषा विकासक गति अपना ढंगसँ संचालित कएल जा सकैछ। राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानसँ सरकार'मैथिली विभाग' खोललक अछि जाहिसँ किछु महत्वपूर्ण रचना सभक प्रकाशन होएब सम्भव थिक। खास कऽ मैथिली साहित्यक इतिहास, शब्द कोषओ विधागत संग्रह प्रमुख रहत। तहिना अनुसंधानक हेतु विद्वत वृतिक संभावना सेहो छैक जाहिसँ सरकारी वा नीज पुस्ट सामग्रीमे सुरक्षित मैथिलीक पुरना महत्वपूर्ण पाण्डूलिपिक उद्धार कएल जा सकैछ। सम्पूर्ण मैथिली संसारक हेतु अपन रचनासँ योगदान पहुँचेबाक लेल एहिठामक साहित्यकार तल्लीन छथि।

अस्तु...। q

मैथिली साहित्यक अवदान

मिथिला भाषा रामायण

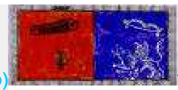
चन्दा झा

कविवर मैथिली साहित्याकाशक चन्द्र थिकाह। मैथिली साहित्यकेँ अपन शीतल ज्योत्सनाक अमर वरदान देलन्हि। इएह कारण थिक जे ओ मैथिलीक महान् कविक रूपमे समादृत होइत आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक मानल जाइत छथि। वस्तुत:विद्यापतिक पश्चात् इएहटा कवि भेलाह जे मातृभाषाक वास्तविक महत्व बूझि ओकर विकासक दिशामे प्रयत्नशील भेलाह।

उन्नैसम शताब्दीमे पुन: कवीश्वरे जनभाषाकेँ काव्य भाषाक रूपमे मण्डित कैलन्हि तथा अपन सशक्त लेखनीसँ अनवरत साहित्य सृष्टिमे योगदान दैत मातृवाणीक अर्चनामे सुवर्ण वर्णावलीक उपहार चढ़बैत रहलाह। हिनक वहुमुखी प्रतिभा, प्रगाढ़ पाण्डित्य, साहित्यक रूचि, पुरातत्व-प्रेम एवम् दीर्घ जीवन विविध प्रकारेँ मैथिली साहित्यक सम्वर्द्धनमे सहायक सिद्ध भेल। हिनक जन्म सन् 1931 ई.मे सप्तमी वृहस्पतिकेँ दड़िभंगा जिलाक पिण्डारूछ गाममे भेल छल। प्रारम्भिक शिक्षा मातृक बड़ गाँव सहरसा जिलामे भेल। बादमे संस्कृतक उच्च शिक्षाक हेतु पवित्र नगरी काशी गेलाह। काशीसँ प्रत्यागत भेलापर पाण्डित्यक अतिरिक्त हुनक कवित्व शक्तिक यशोवल्लरी चतुर्दिक पसरए लागल। बाल्यकालहिसँ प्रतिभापूर्ण प्रतीत भेलाह।

मिथिला भाषा रामायणक मूल प्रेरक स्व. महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह छलाह। मातृभाषा मैथिलीमे धर्म ग्रंथक अभाव खटकलैन्ह। चन्दा झा शिवक समर्पित भक्त छलाह। शिवक प्रिय राम तेँ भक्ति भावना हुनक साहित्यक कृतिक विधा थिक। मातृभूमि ओ मातृभाषा प्रेमक पुष्पाञ्जलि दय ओ अपन काव्य देवताक अर्चना कैलन्हि। एहि दृष्टिए मिथिला भाषा रामायण हुनक सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रिय कीर्त्ति थिक। चन्दा झाक नामोल्लेख मात्रसँ हिनक रामायणक उद्घोष होइछ। ग्रन्थक नाम करणेसँ मिथिला-मैथिलीक प्रति कविक सहज अनुरागक परिचय भेटैत अछि। प्राय: ई शौभाग्य कोनो आन ग्रंथकेँ नहि हएत जेकर प्रत्येक शब्दपर विद्वत मण्डली विचार कएने हो तथा जे पाण्डित्यक कसौटीपर परिशुद्ध प्रमाणित भेल हो।

रामायण भारतीय वाङमय केर आदर्श कृति थिक। देशक चारित्रिक आदर्शकेँ अनुप्राणित करबाक लेल राम चरितक अवतार मैथिलीमे आवश्यक छल। वस्तुत: जाहि सांस्कृतिक संघर्षक युगमे चन्दा झाक आर्विभाव भेल छल तकर ई अनिवार्य प्रतिक्रिया छल। कवीश्वरक एहि कृतिक केँ सर्व प्रथम महा काव्यो हैबाक सौभाग्य प्राप्त छैक। चन्द्र कवि जहिना काव्यात्मकतामे बाल्मीकि तहिना रचना करबामे प्रमुख। चन्दा झाकेँ युग जागरणक प्रतीक मानल जाइछ। ओना तेँ मिथिला भाषा रामायणक मूलाधार थिक अध्यात्म रामायण मुदा अटूट श्रद्धाक कारणेँ मौलिकताक निर्वाहमे त्रुटि नहि होए देल अछि। विशेष कय मिथिलाक वर्णन, लक्ष्मण-परसुराम सम्वाद, लंका दाह वर्णन, राम अंगद-सम्वाद आदि कतेक स्थल अछि जतए कविक मौलिक प्रतिभा स्फुट भेल अछि, तथा मनोरम सिद्ध भेल अछि। वभिन्न रसक प्रयोग लेल राम कथाक महत्व सर्वोपरि अछि तहिना भाव प्रकाशनक क्रममे विविध अलंकारक प्रयोगसँ ओ एकर कला पक्षकेँ समृद्ध बनौने छथि। एतए



स्पष्ट अछि जे रामायण मूलत: भक्ति काव्य थिक। मिथिलाक गौरवक गुणगान नहि बिसरलाह अछि रामक मुँह कहबैत छथि-

“सत्य तिरहुति यज्ञभूमि पुण्य देनिहारि,

शास्त्रकेँ बजैत बेर कीर बैसि डारि-डारि।”

पुन: सीताक चरितक प्रसंगमे ओ एहि विषयकेँ नहि बिसरल छथि जे सीता मिथिलाक बेटी छलीह। सीता स्वयं कहलैन्ह-

“जनक जनक जननी अवनि,

रघुनन्दन प्राणेश

देवर लक्ष्मण हमर छथि,

नैहर मिथिलादेश।”

एकर भाषा ओ शैली माधुर्य जन साधारणकेँ आकृष्ट कएलक। ओ शीघ्रहि विद्वानसँ लऽ कऽअशिक्षित समाज मध्य ई प्रिय भए गेल। एहि गंथक अध्ययनसँ मैथिली विद्वानकेँ अपन मातृभाषाक गौरव ओ गंभीरताक ज्ञान भेलन्हि। एहि क्रममे देखब जे अशोक बाटिकाक वन्दिनी सीताकेँ अपन विपन्न जीवनसँ विशेष कठोर बचन कहबाक भनस्ताप छन्हि जे मनो वेदना विगलित भए उठल अछि- हे रघुनाथ! अनाथ जकाँ दश कंठकपूरी हम आइलि छी सिंहक त्रास महावनमे,हरि नीक समान हेराय छी।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

रबीन्द्र नारायण मिश्र- तीनटा आलेख, दूटा लघुकथा आ उपन्यास नमस्तस्यै (आगाँ)

रबीन्द्र नारायण मिश्र

रबीन्द्र नारायण मिश्रक

तीनिटा आलेख

घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005

घरेलू हिंसाकी थिक?

आमतौर पर घरेलू हिंसा मात्र घरमे मारि-पीट बुझल जाइत अछि।सही मानेमे बालिकाक अरमानकेँ दबा देब, घरक अंदर परिवारक सदस्य द्वारा रोज-रोज मानसिक प्रताड़ना देब,तामसमे ओकर परसल भोजन फेंकि देब, ओकरा संगे गार-मारि करब, ओकर इच्छाक विरुद्ध ओकर पढ़ाइ रोकि देब, सेहो घरेलू हिंसाक रूप अछि। एकर अलावा यौन उत्पीड़न सेहो भारी हिंसा अछि, जाहि हेतु आम तौरपर दूरक रिश्तेदार वा पड़ोसक लोग जिम्मेदार होइत अछि। एहनमे जखन बालिका विरोध करैत अछि, तँ बदनामीक हवाला दए ओकर मुँहबंद कए देल जाइत अछि। एहि तरहक प्रतारणा नैहर, सासुर सभठाम होइत अछि।

घरेलू हिंसापारिवारिक सम्बन्धक परिपेक्ष्यमे एहन व्यवहार ओ सम्बन्धसँ जुड़ल अछि जे अपन जीवन संगीपर अधिकार जताबए एवम् मनमाना नियंत्रण करबाक हेतु कएल जाइत अछि। प्रताड़ना मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, भावात्मक, आर्थिक, किछु भए सकैत अछि। घरेलू हिंसा विवाहित किंवा आपसी सहमतिसँ प्रेम सम्बन्धसँ जुड़लजोड़ी, ककरो संगे भए सकैत अछि।

घरेलू हिंसाक कारण की थिक?

घरेलू हिंसाक प्रारंभ तखने होइत अछि जखन बालिका अपने माए-बापसँ खिलौना मांगैत अछि। हमर समाज ओकरा नेन्नेसँकमजोर बनबैत अछि। जखन बेटा छोट रहैत अछि, तँ हम ओकरा हाथमे बैट-बाल वा स्पोर्टस क सामान दैत छी, जाहिसँ ओ शारीरिक आओर मानसिक रूपसँ मजगूत बनैत अछि। मुदा बालिकाक खेलक हेतु गुड्डा-गुडिया वा चूल्हा बर्तन बला खेलौना देल जाइत अछि जाहिसँ ओ शारीरिक आओर मानसिक रूपसँ कमजोर होइत चलि जाइत अछि। एकर संगे भावनामे भसिआएल चल जाइत अछि। अब बालिका जेना- जेना पैघ होइत अछि घरक पाबंदी आओर समाजक यातना ओकरापर हावी होइत चलि जाइत अछि। दाम्पत्य जीवनमे घरेलू हिंसाक कारण हीन भावना, ईर्ष्या, क्रोधपर नियंत्रणक अभाव,जीवनसंगीसँ शिक्षा किंवा सामाजिक परिवेशमे न्योन होएब किछु भए सकैत अछि।

<u>घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005 किएक लागू करए पड़ल?</u>

घरेलू हिंसाक अनगिनत घटना हमर देशमे होइत अछि, मुदा महज सौ-पचास दर्ज होइत अछि, ओहो चरम पर पहुँचलाक बाद। कतेकोठाम बालिकासभ साँझक बाद घरक अपेक्षा सड़कपर अंजान लोकसंग रहब ज्यादा सुरक्षित अछि कारण घरमे अपन लोक द्वारा बेसी दुर्घटना, हत्या आओर हिंसा करबाक संभावना रहैत अछि, बालिका जखन रस्ता पर बहराइत अछि, तँ ओकरा पता नहि होइछ कि शहरकचकाचौंधमे ओकरा संगे कखन कोनठाम छेड़खानी भए जाएत। बात अगर गामक करी तँ बालिका सुन्न रस्ता पर जएबासँ डराइत अछि मुदा ओहि डरक की करी, जकर जड़ि घरक अंदर होइत अछि आओर बालिकाक संगे पैघ होइत अछि। ओहि डरक की करी जे ओकरा जनमिते ओकर माथामे बैसि जाइत अछि आओर आधा जिनगी धरि रहैत अछि।

घरेलू हिंसा क बात करैत काल ऑनर किलिंगक घटनासभकेँ फराक नहि कए सकैत छी। ऑनर किलिंगक जड़ि असलमे घरेलू हिंसा अछि। किएक तँ कोनो माए-बाप, भाए, काका कखनो सेहो अपनी बेटी वा बहिनके, सोझे मारि नहि देत, ओहिसँ पूर्व नाना प्रकारक यातना ओकरा देल जाइत अछि।

एकटा सांख्यिकीय गणनाक अनुसार :

(i) नित्य चारिटा महिला, एकटा पुरुष, आओर पाँचटा बच्चा घरेलू हिंसाक कारण अकाल मृत्युक शिकार भए जाइत छथि।

(ii) अपन जीवन कालमे प्रत्येक चारिटामेसँ एकटा महिला घेरलू हिंसाक शिकार भए जाइत छथि।

(iii) २०-२४ बर्खक महिलाक उपर घरेलू हिंसाक सभसँ बेसी खतरा रहैत अछि।

घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 स्त्रीक सुरक्षा, ओ स्त्रीक अधिकारक अधिक प्रभावी ढंगसँ लागू करबाक हेतु आनल गेल।

एहि अधिनियमकेँ पारित करएसँ पहिने कानूनी स्थिति की छल?

(i) घरेलू हिंसा कानूनमे कोनो स्पष्ट मान्यता नहि छल,

(ii) (आईपीसी की 498 ए) क तहत घरेलू हिंसाक संपूर्ण अवधारणा विवाहित स्त्रीपर कएल गेल क्रूरताक धरि सीमित छल,

(iii) दुखसंतप्त बहिन, माए, बेटी वा अविवाहित स्त्री एहिमे सामिल नहि छल,

(iv) प्रताड़ित भेलापर विवाहित स्त्रीकेँ सीमित विकल्प छल: तलाक लए लिअए वा धारा 498 ए क अनुसार मोकदमा करए,

घरेलू हिंसा दू प्रकारक होइत अछिःआपराधिक आओर गैर-आपराधिक:

आपराधिक घरेलू हिंसा:

बिना सहमतिकेँ शारीरिक संपर्क जेना यौन उत्पीड़न, लात मारब, अनावश्यक पछोड़कए भयभीत करब, कंप्यूटर हैकिंग, आपराधिक अलगाव

गैर-आपराधिक घरेलू हिंसा:

मित्र वा आन सामाजिक सरोकारीसँ संपर्क बाधित करब, टेलीफोनक संपर्क नहि होमए देब,

घरेलू हिंसा कानूनक तहत कोनो पीड़ित महिलाजे अपराधिक संगे रहैत छथि, एहि कानूनक अनुसार मोकदमा कए सकैत छथि।

घरेलू हिंसाक सबसँ खराब प्रभाव ओहि परिवारक छोट बच्चासभ पर होइत छैक।बच्चा वातावरणक उपज होइत छथि, एहने बच्चा बादमे जाकए घरेलू हिंसा करैत छथि वा ओकर शिकार भए जाइत छथि।

घरेलू हिंसा अधिनियमक धारा२ (क्यु):

घरेलू हिंसा अधिनियमक धारा२ (क्यु)क तहत मात्र पुरुष अपराधीक खिलाफ कार्रबाइक प्रावधानके असंबैधानिक घोषित करैत सुप्रीम कोर्ट न्यायमूर्ति कुरियन जोसेफ और रोहिंटन एफ नरीमनपीठ निर्णय देलक जे एहि कानूनक तहत महिला अपराधीकक खिलाफ सेहो मोकदमा चलि सकैत अछि।माननीय न्यायाधीश लोकनिक कहब छनि:

“स्त्रीगणक खिलाफ कतेकोबेर स्त्रिए साजिसक तहत काजकए घरेलू हिंसामे सामिल होइत छथि, तेँ एहि कानूनक उपरोक्त धारा कानूनक मूल उद्येश्यसँ भुतिआ गेल लगैत अछि, तेँ ओकरा कानूनसँ हटा देल जाइत अछि।”

घरेलू हिंसा कानूनक तहत केना मदति लेल जा सकैत अछि?

(१) कोनो प्रकारक हिंसासँ वचाव हेतु आदेश प्राप्त करब,

(२) निवास करबाक अधिकारक हेतु आदेश प्राप्त करब,

(३) मौद्रिक राहत

(४) हिरासतमे लेब

(५) क्षतिपूर्तिक हेतु आदेश

(६) अन्तरिम आओर एकपक्षीय आदेश

सुरेश बनाम जयबीर (२००९):

सुरेश बनाम जयबीर (२००९)क मामलामे न्यायलय ई आदेश देलक जे घरेलू हिंसा कानूनक धारा 12 कउपखंड (1) कतहत आवेदनक निपटारा करैत अन्तरिम आदेशमे न्यायिक दंडाधिकारी गुजाराक हेतु अन्तरिम राहत दए सकैत अछि।

प्रथम श्रणी न्यायिक दंडाधिकारी वा महानगर दंडाधिकारीक ओतए सिकाइत कएल जा सकैत अछि:

(१) जतए दोषी व्यक्ति रहैत हो,

(२) जतए अपराध कएल गेल होइक,

(३) जतय प्रताड़ित व्यक्ति रहैत हो,

न्यायिक दंडाधिकारीक समक्ष सिकाइतक निपटान:

पीड़त व्यक्ति संरक्षण अधिकारी, पुलिस किंवा सेवा प्रदाता (कल्याण अधिकारी)क मदति लए सकैत छथि। हिनका लोकनिक कर्तव्य अछि जे पीड़त व्यक्तिक जरुरी मार्गदर्शन करथि एवम् न्यायलय द्वारा देल गेल मौद्रिक क्षतिपूर्तिक आदेशक पालन सुनिश्चित कराबथि। संरक्षण अधिकारीक दायित्व अछिजे वो प्रताड़ित व्यक्तिक सिकाइतक घरेलू हिंसा प्रतिवेदन (DIR)तैयारकए न्यायालयकेँ उपलब्ध कराबए।संगहिँ प्रताड़ित व्यक्तिकेँ सेवा प्रदाताक वारेमे उचित मार्गदर्शन दैक जाहिसँ ओ ओहि कानूनी सुविधाक लाभ उठा सकए।सेवा प्रदाता कोनो कंपनी, महिलाक कल्याण हेतु कार्यरत गैर सरकारी संगठन, भए सकैत अछि।सेवा प्रदाताक ई कर्तव्य थिक जे प्रताड़ित व्यक्तिकेँ कानूनमे निहित ओकर अधिकारक बारेमे जानकारी देथि एवम् कानूनी उपचार लेबाकक हेतु उचित व्वस्था करएमे ओकरा मदति करथि। पुलिसक कर्तव्य थिक जे ओ प्रताड़ित व्यक्तिकेँ संरक्षण अधिकारी एवम् सेवा प्रदाताक बारेमे जानकारी देथि। संगहिँ भारतीय दंड संहिताक अनुक्षेद ४९८ (अ) मे प्राप्त अधिकारक जानकारी सेहो देथि।

न्यायिक दंडाधिकारीक समक्ष पीड़िता द्वारा सिकाइत प्राप्त भेलाक तीनदिनक भीतर मामलामे सुनबाइक तारिख तय होएत।न्यायालयसँ समन भेटलाक दूदिनक भीतर संरक्षण अधिकारी तकर जानकारी प्रतिवादीकेँ देत। प्रतिवादीकेँ देल गेल समनक संग घरेलू हिंसा कानूनक धारा 12 कउपखंड (३)क तहत सिकाइतक प्रतिलिपि सेहो देल जाएत।प्रतिवादी द्वारासे प्राप्त भेलाक बादे एकतरफा सुनबाइ भए सकैत अछि आ स्थाइ अन्तरिम आदेश कएल जा सकैत अछि। जरुरी बुझलापर न्यायलय एकतरफा सुनबाइ कए अन्तरिम आदेश दए सकैत छथि। न्यायिक दंडाधिकारी ६० दिनक भीतर एहन सिकाइतक निपटान करताह। हुनकर आदेशक खिलाफ सम्बन्धित पक्ष ३० दिनक भीतर सेशन कोर्टमे अपील दाएर कए सकैत छथि।

प्रतिवादी द्वारा संरक्षण आदेश किंवा अन्तरिम संरक्षण आदेशक पालन नहि करब संज्ञेय एवम् गैर जमनती अपराधक श्रणीमे अबैत अछि। हुनका ताहि कारणसँ एक साल धरि जेल किंवा बीस हजार रुपया जुर्माना भए सकैत अछि। जौं संरक्षण अधिकारी दंडाधिकारी द्वारा देल गेल आदेशक पालन करबामे बिना कोनो वाजिब कारणके आनाकानी करैत छथि तँ हुनको एहि तरहक दंड देल जा सकैत अछि, मुदा ताहि हेतु विभागीय अधिकारीकेँ पूर्व अनुमति आवश्यक थिक। पीड़ित व्यक्तिकेँ संयुक्त परिवारक साझी निवासमे रहबाक हेतु न्यायलय निवास करबाक आदेश दए सकैत अछि भले ओहि घरमेप्रतिवादीक हिस्सा होइक वा नहि होइक।

एस आर बतरा एवम् अन्य बनाम श्रीमती तरुना बतराक मामलामे उच्चतम न्यायालय ई फैसला देलक जे घरेलू हिंसा अधिनियमक धारा १७ (१) क अनुसार प्रताड़ित महिला मात्र साझी आवासमे रहबाक हकदारभए सकैत अछि।साझी आवासक माने पति द्वारा कीनल किंवा किरायापर लेलगेल घर अछि वा एहन साझी घर अछि जाहिमे पतिक हिस्सा होइक। कहक माने जे जाहि घरमे ओकर पतिकेँ कानूनी अधिकार नहि छैक ताहिमे प्रताड़ित व्यक्तिकेँ रहबाक अधिकार न्यायलय एहि कानूनक तहत नहि दए सकैत अछि।

घरेलू हिंसा रोकबाक समाधान :

घरेलू हिंसा रोकबाक एकटा समाधान ई भए सकैत अछि जे पति न्यायिक दंडाधिकारीक समक्ष शपथ-पत्र देथि जे ओ आगा अपन पत्नीक संग सम्मानपूर्ण व्यवहार करताह,एहनकिछु नहि करताह जाहिसँ ओकरा कोनो प्रकारक यंत्रणासँ फेर गुजरए पड़ैक, तकर संपूष्टिमे अपन संपत्तिकेँ गारंटी देथि जाहिसँ घरेलू हिंसाक पुनरावृति भेलापर ओकरा जब्त कए लेल जाएत।

उपसंहार

आपसी सम्बन्ध प्रेम, आदर, ईमान्दारी, एवम भावुक लगावसँ सराबोर हेबाक चाही। आपसी अविश्वाससँ हिंसा ओदुराचर बढ़ैत अछि, एहन दंपति निरंतर आशंकाग्रस्त रहैत छथि जाहिसँ जीवन नर्क भए जाइत अछि। जीवनक ई कटुसत्य अछि जे अहाँ दोसरकेँ नहि बदलि सकैत छी, हम अपनेटाकेँ बदलि सकैत छी।कमसँ कम एतबातँ कइए सकैत छी जे जाहिसम्बन्धमे लज्जति नहि रहि गेल अछि, जतए अविश्वासक पराकाष्ठा पहुँचि गेल अछि, ओतए फसाद बढ़ेनाइ छोड़िकानून सम्मत तरीका अख्तिआर करी।

महिला संगठन सिर्फ जागरूकता पैदा कए सकैत अछि, पुलिस सिर्फ उत्पीड़न करएबलाकेँ जेल पठा सकैत अछि, कोर्ट सिर्फ न्याय दए सकैत अछि, एहिमे सँ कोनो अहाँक घरक हालत ठीक नहि कए सकैत अछि, घरमे पैसि नित्य-प्रतिक समस्याक समाधान नहि कए सकैत अछि। अस्तु सिर्फ सोच बदलक जरूरत अछि।

जीवनक दुखमय परिस्थितिसँ हारि नहि मानि नव ओ सुंदर जीवन जिबाक हेतु सचेष्ट रहैत पिड़ित व्यक्तिकेँ ई विश्वास बनओने रहक चाही जे सुंदर समय आवहिँबला अछि, अएबे करत।q

गिरफ्तारीओ जमानत

कोनो-ने-कोनो झंझटिमे नहिओ चाहैत कए बेर लोक फँसि जाइत अछि। केबेर निर्दोष लोकक खिलाफ झूठ-फूसके मामला बना देल जाइत अछिजाहिमे पुलिसके घाल-मेल सेहो भए जाइक से भारी बात नहि।टेलेविजनकेँ गाम-गाम पसरि गेलासँ अपराधक नव-नव स्वरूप गामो-घरमे फैलिरहल अछि।कैटा कानूनो एहन भए गेल अछिजे बिना गलतिओकेँ कैबेर लोक जहलधरि पहुँचि जाइत छथिएहन परिस्थितिमे लोकके जहल ओ जमानतसँ सम्बन्धित कानूनक जानकारी बहुत आवश्यक भए गेल अछि जाहिसँ व्यर्थक फसादसँ बचि सकथिआ जरूरी भेलापर समाधान कए अपन जीवन ओ इज्जतिक रक्षा करथि।

कैटा कनून एहन अछि जाहिमे पुलिस मामला दाखिल होइते अभियुक्तकेँ गिरफ्तार कएसकैत अछि।उदाहरणस्वरूप भारतीय दणड संहिताक धारा ४९८ (ए)क तहत कएलगेल मोकदमामे अभियुक्तक हालत बहुत पातर भए जाइत छल। ओकरा सभसँ पहिने पुलिस गिरफ्तार करैत छल, तखन आर किछु। बहुत रास मामलामे देखल गेल जे कएल गेल सिकाइत झूट छल, कोर्टमे साबूतक आधारपर साबित नहि भेल, अभियुक्त बरी भए गेल, मुदा ताबति ओकर सभ दशा भए जाइत छल, ओकर इज्जतिकमटियामेट भए जाइत छल। उच्चतम न्यायलय एहि बातक संज्ञान लैति दिशा-निर्देश जारी कएसुनिश्चित करबाक प्रयास केलक जे निर्दोश लोकके एहन मामलामे वेबजह गिरफ्तारी नहि होइक।

संविधानक धारा २२ क अनुसारपुलिस द्वारा गिरफ्तार कएल गेल व्यक्तिकेँ अधिकार अछिजे ओ गिरफ्तारीक कारण जानए, जौं गिरफ्तारी वारंटक आधारपर भेल अछितँ ओकरा वारंट देखाओल जाए, वकील वा निकट सम्बन्धीकेँ संपर्क कए सकए।ओकरा गिरफ्तारीक चौवीस घंटाक भीतर मजिष्ट्रेटक सम्मुखउपस्थित करब जरुरी थिक। ओकरा इहो बताएब जरुरी तिक जे ओ जमानतपर छोड़ल जा सकैत अछिकि नहि।

गिरफ्तार कएलगेल व्यक्तिकेँ हथकड़ीलगाएब:

ऊच्चतम न्यायलयक दिशा निर्देशक अनुसार गिरफ्तार कएलगेल व्यक्तिकेँ हथकड़ीलगाबएसँ बचबाक चाही, कारण एहन व्यक्ति सजाआफ्ता नहि होइत छथि। हथकड़ीक प्रयोग अपवादिकपरिस्थितिमे तखने कएल जाएजखन किअभियुक्त हिंसक हो, पुलिसक गिरफ्तसँ भागि जेबाक संभावना होइक, किंवा आत्महत्यापर उतारु हो।

सीआरपीसीक धारा ७४क अधीनपुलिस अभियुक्तकेँ गिरफ्तार करबाक हेतु घरमे घुसिकए ओकरा पकड़ि सकैतअछि, ताहिलेल जरुरी भेलापर घरकखिड़कीकेँ तोड़िसकैत अछि।

कोनो व्यक्तिकेँ गिरफ्तार केलाकबादेओकर तलाशी कएल जा सकैत अछि, पहिने नहि। जौं गिरफ्तार कएल गेल व्यक्ति महिला छथि तखन महिले पुलिस ई काज कए सकैत अछि।

महिलाक गिरफ्तारी हेतुउच्चतम न्यायलय द्वारा जारी कएलगेलदिशानिर्देश:

उच्चतम न्यायलय द्वारा जारी कएलगेल मार्गदर्शनक अनुसार सामान्यतः कोनो महिलाकेँ साँझक बाद आ भोर हेबासँ पहिने गिरफ्तार नहि कएल जाएत। जौं ततबे आवश्यक भए जाइक आ रातियेमे महिलाक गिरफ्तारी जरूरी होइक, भोरधरि रुकब कानूनक अनुपालन हेतु दिक्कति भए जेबाक संभावना प्रवल होइक, तखन मजिष्ट्रेटक पूर्व अनुमति लए एवम्महिला पुलिस

द्वारा ई काज कएल जाएत। गिरफ्तारीक बाद जौं महिलाकँ तलाशी करब जरूरी होइक तखन ई काज महिला पुलिस द्वारा कराओल जेबाक चाही।पुलिस हाजतिमे महिलाकँ अलग राखबाक चाहीजौं महिलाक हेतु अलग हाजति नहि होइक तखन ओकरा अलग कोठरीमे राखल जेबाक चाही।

विना वारंटकँ गिरफ्तारीः

आपराधिक प्रक्रिया संहिता1 9 73क धारा 41क अनुसार पुलिस कोनो व्यक्तिकँ निम्नलिखित परिस्थितिमे बिना वारंटकँ गिरफ्तार कए सकैत अछि:

(१) जखन ओ कोनो संज्ञेय अपराध केने हो,

(२) कोनो पुलिस अधिकारीकँ कर्तव्य निर्वहनमे व्यवधान ठाढ़ केने होइक,

(३) ओकर घरसँ कोनो चोरीक माल पकड़ल गेल होइक,

(४) कानूनी हिरासतसँ मटिआ रहल हो,

(५) सेना, वायु सेना, जलसेनासँ भागि आएल हो,

(६) जौं ओकरा अपराधी घोषित कएल गेल हो,

(७) जौं ओ अभ्यस्त अपराधी अछि,

(८) जौं ओकरापर संज्ञेय अपराध करबाक शक छैक,

(९) जौं न्यायलय द्वारा छोड़ल गेल अपराधी न्यायलयक शर्तक अनुपालन नहि करैत अछि,

कैटा आओरएहन कानूनसभअछि जाहि सिकाइत भेलापर पुलिसकँ अभियुक्तकँगिरफ्तार करबाक अजस्त्र अधिकार भए जाइत अछि।

संज्ञेय अपराध की थिक?

संज्ञेय अपराधमे पुलिस बिना कोर्ट आदेशकँ अभियुक्तकँ गिरफ्तार कए सकैत अछि।हत्या, वलात्कार, चोरी, राष्ट्रद्रोह, सन अपराधक मामला एहि श्रेणीमे अबैत अछि।

असंज्ञेय अपराध की थिक?

असंज्ञेय अपराध क मामलामे कोर्टक आदेश भेलाक बादे ककरो गिरफ्तार कएल जा सकैत अछि।

जौं अभियुक्त पुलिसक गिरफ्तसँ भागवाक प्रयास करैत अछि, तँ ओकरा पुलिस उपयुक्त वल प्रयोग कए पकड़ि सकैत अछि, परंतु वलक अनावश्यक प्रयोगसँ पुलिसकँ बचबाक चाही।मुदा आवश्यक भेलापर पुलिस जानोलए सकैत अछि, वशर्ते ओकर अपराध मृत्युदंड देबए जोगर होइक।

अग्रिम जमानत:

अग्रिम जमानतदेबाक अधिकारउच्च न्यायलय वा सेशन कोर्टकेँ अछि।अग्रिम जमानत हेतु आवेदन निचला कोर्टमे नहि कएल जा सकैत अछि।अग्रिम जमानत देबाकाल न्यायलय सुनिश्चित करैत अछि जे आवेदक मामलाक विवेचनामे वांछित सहयोग करताह, देश छोड़ि बाहर नहि चलि जेताह, कोनो गवाह वा सबूतकेँ प्रभावित नहि करताह।आवेदककेँ जौं आशंका होइक जे ओकरा कोनो मामलामे फँसाकए गिरफ्तार कएल जा सकैत अछितँ ओ उचित न्यायालयकेँ अग्रिम जमानत हेतु आवेदन कए सकैत छथि।

अग्रिम जमानत ताबते धरिक हेतु देल जेबाक चाही जाधरि चालान कोर्टमे प्रषित नहि कएल गेल अछि, तकर बाद अभियुक्तकेँ नियमित जमानत हेतु सम्बन्धित न्यायलयमे आवेदन देबाक चाही (सजलुद्दीन अब्दुल समद शेखबनाम राज्य महाराष्ट्र)

न्यायक तकाजा थिक जे अग्रिम जमानत देबासँ पूर्व विरोधी पक्षकेँ न्यायलय नोटिस जारी करए जाहिसँ अभियुक्त गलत जानकारि दए किंवा वांछित जानकारीकेँ दबाकए अग्रिम जमानत नहि लए सकए (बालचंद जैन बनाम मध्य प्रदेश)

जमानती वारंट:

गिरफ्तारीक वारंटकोनो कोर्टक पीठासीन अधिकारी द्वारा लिखित रूपमे जारी कएल जाइत अछि।ओहिमे स्पष्ट रूपसँ ई लिखल हेबाक चाही जे कानूनकक कोन धाराक अनुसार ओकर गिरफ्तारीक वारंट जारी कएल गेल अछि, ओकरा कहिआ आ कखन ओहि कोर्टमे हाजिर हेबाक छैक।ओहि आदेशमे इहो लिखल रहत जे ओकरा उचित जमानात देला पर एहि शर्तसंगगिरफ्तारीसँ छूट देल जाइत अछि जे ओ नियत दिन/नियत समय पर कोर्टमे हाजिर भए जाएत, ताहि हेतु एकटा निश्चित रकमक बौंड सेहोओकरादेबए पड़ैतअछि, एकाधिक व्यक्तिकक जमानात सेहो दबए पड़ि सकैत अछि।

गैर जमानती वारंट:

गैर जमानती वारंटमे पुलिस अभियुक्तकेँ गिरफ्तार कए सम्बन्धित कोर्टमे हाजिर करैत अछि, तकर बादे ओकर जमानत पर छोड़वाक आवेदनपर कोर्ट विचारकरत।कोनो मामलामे जमानत पर अभियुक्तकेँ रिहा करबासँ पूर्व कोर्टकेँ मामलाक गंभीर छानबीन कएल जाइत अछि, कोर्ट ई सुनिश्चित करए चाहैत अछि जे जमानतपर छोड़िदेलाक बाद ओ न्यायिक प्रकृयाकेँ प्रभावित नहि करए, जरुरत भरि मामलाक अनुसंधानमे सहयोगकरए, गवाहसभकेँ तोड़बाक प्रयास नहि करए।संगहि ओकर इतिहास एवम् चरित्रक विषयमे सेहो जानकारी लेबाक प्रयोजन होइत अछि जाहिसँ बाहर गेलाकबाद ओ समाजक हेतु समस्या नहि भए जाए।

सेशन कोर्टवा उच्च न्यायालयसँ जमानत:

जौं अभियुक्त एहन अपराध केलक अछि जाहिमे मृत्युदंड वा आजन्मकारावासक प्रावधान थिक, तखन ओकरा जमानत सेशन कोर्टवा उच्च न्यायालयसँ भेटत, ताहिसँ निचला कोर्टसँ नहि।

न्यायलयकेँ जमानत देबाक समय बहुत सावधानीपूर्वक विचारकरबाक प्रयोजन अछि कारण अपराध सिद्ध होयबासँ पूर्वे ककरो जहलमे सड़ादेब मानवीय अधिकारक सरासर उल्लंघन थिक मुदा संगहि समाजके व्यापकहितकेँ ध्यान राखब सेहो जरूरी अछि, जे ओ व्यक्ति बाहर आबिकए एहन ने कए देथि जे कोनो आन व्यक्तिक सम्मानओ जीवन पर संकट उत्पन्न भए जाइक।

उपसंहार

संविधानक अनुक्षेद २१ एवम २२ क तहत प्राप्त मौलिक अधिकारक रक्षाक हेतु आवश्यक अछि जे बेबजह ककरो स्वतंत्रता पर आघात नहि होइक, लोक निर्वाध अपन जीवनक रक्षा कए सकए। गिरफ्तारी निश्चय एहि संवैधानिक अधिकारकेँ सद्यः सीमिते नहि करैत अछि अपितु ग्रहण लगा दैत अछि। मुदा ककरो स्वतंत्रता एहि हद धरि नहि भए सकैत अछि जे कोनो निर्दोष आदमीक जिनाइ कठिन कए दैक, किंबा कोनो अपराधी बेटछुट्ट भेल घुमैत रहए। अस्तु, पुलिस एवम् न्यायालयकेँ एकटा संतुलित रुखि राखि प्रत्येक मामलामे नीर- क्षीर विवेक रखैत काज करक चाही जाहिसँ कोनो निर्दोष व्यक्तिकेँ फिरसान नहि होबए पड़ैक आ दोषी खुल्ला नहि घुमैत रहए। निश्चय ई संतुलन बनाएब एकटा कठिन काज थिक मुदा समस्त कानून ओ न्यायालय एहि प्रयासमे लागल रहैत अछि। q

सूचनाक अधिकार

भारतक संविधानक अनुक्षेद १९ मे निहित मौलिक अधिकारसँ भारतक नागरिककेँ सूचनाक अधिकार प्राप्त अछि। ताहि अधिकारकेँ प्राप्त करबाक व्यवस्था सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अन्तर्गत कएल गेल। सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 प्रत्येक नागरिककेँ ई अधिकार दैत अछि जे ओ सरकारसँ ओकर काजक बारेमे जानकारी मांगि सकैत अछि। एहि तरहें आब भारत सेहो विश्वक ओहि ६० देशमे सामिल भए गेल अछि जे अपन नागरिककेँ सूचनाक अधिकार प्रदान कए पारदर्शी, जवाबदेह एवम् सुशासन स्थापित करबाक चाक-चौबंद व्यवस्था केने अछि।

केन्द्रीय सूचना आयोग

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 मे ई व्यवस्था कएल गेल अछि जे केन्द्र सरकार द्वारा एक केन्द्रीय सूचना आयोगक गठन कएल जाएत जाहिमे एक मुख्य सूचना आयुक्त एवम् अधिक सँ अधिक दसटा केन्द्रीय सूचना आयुक्त होएत। मुख्य सूचना आयुक्त एवम् अन्य सूचना आयुक्तक नियुक्तिक हेतु एकटा समिति गठित होएत जकर अध्यक्ष प्रधानमंत्री एवम् लोकसभामे विपक्षक नेता एवम् प्रधानमंत्री द्वारा मनोनीत केन्द्रीय मंत्रीमंडलक एकटा मंत्री एकर सदस्य हेताह। एकर अतिरिक्त प्रत्येक राज्यमे राज्य सूचना आयोग अलगसँ गठित कएल जाइत अछि।

जौं कोनो केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी बिना कोनो वाजिब कारणसँ सूचनाक हेतु आवेदन नहि लैत अछि, किंवा वाँछित सूचना देबएमे आना-कानी करैत अछि, किंवा जानि-बूझि कए गलत वा अधूरा जानकारी दैत अछि, वा सूचना नष्ट कए देल गेल अछि तँ केन्द्रीय सूचना आयोग सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुक्षेद ७ (१) अन्तर्गत ओकरा खिलाफ

सम्बन्धित विभागकेँ अनुशासनात्मक कारवाई करबाक आदेश दए सकैत अछि। एहन परिस्थितिमे आयोग सम्बन्धित दोषी अधिकारीकेँ सूचना देबाक दिन धरि २५० टाका प्रतिदिनक हिसाबसँ पचीस हजार टाका धरि जुर्माना लागा सकैत अछि।

आयोगक समक्ष सिकाइत सोझे दाखिल कएल जा सकैत अछि? जौं हँ, तँ कोन आधारपर?

निम्नलिखित परिस्थितिमे सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क धारा १८ क अन्तर्गत आयोगक समक्ष सोझे सिकाइत दाखिल कएल जा सकैत अछि:-

(क) जौं ओ ओहि कारणसँ अनुरोध प्रस्तुत करबाक हेतु असमर्थ रहल अछि, कि ओहि अधिनियमक अधीन एहन अधिकारीक नियुक्ति नहि कएल गेल अछि वा केन्द्रीय सहायक लोक सूचना अधिकारी ओहि अधिनियमक अधीन सूचना वा अपीलक हेतु धारा 19 क उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी वा ज्येष्ठ अधिकारीकेँ पठेबाक हेतु स्वीकार करबासँ मना कए देलक अछि;

(ख) जौं ओकरा ओहि अधिनियमक अधीन अनुरोध कएल गेल कोनो जानकारी धरि पहुंचएसँ मना कएल गेल अछि;

(ग) जौं ओकरा ओहि अधिनियमक अधीन विनिर्दिष्ट समय-सीमाक भीतर सूचनाक हेतु वा सूचना धरि पहुँचक हेतु अनुरोधक उत्तर नहि देल गेल अछि;

(घ) जौं ओकरासँ ओहन फ़ीसक रकमक संदाय करबाक हेतु अपेक्षा कएल गेल अछि, जे ओ अनुचित बुझैत अछि;

(ङ) जौं ओ विश्वास करैत अछि कि ओकरा ओहि अधिनियमक अधीन अपूर्ण, भ्रमित करएबला वा मिथ्या सूचना देल गेल अछि; आओर

(च) ओहि अधिनियमक अधीन अभिलेखक हेतु अनुरोध करबाक हेतु वा ओकरा प्राप्त करबासँ सम्बन्धित कोनो अन्य विषयक सम्बन्धमे।

सूचनाक अधिकारक तहत सरकारी विभाग, सरकारी सहायतासँ चलएबला गैर सरकारी संगठन, वा शिक्षण संस्थानसँ जानकारी प्राप्त कएल जा सकैत अछि। सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 धारा 2 (एच) क तहत लोक प्राधिकरण अथवा सार्वजनिक संस्थाक लग उपलब्ध सूचनाक मांग कए सकैत अछि। सार्वजनिक संस्थासभमे संविधान द्वारा स्थापित या गठित, संसद या कोनो राज्य विधायिकाक कानून द्वारा स्थापित वा गठित, केन्द्र वा राज्य सरकारक कोनो अधिसूचना वा आदेशक द्वारा स्थापित वा गठित, राज्य व केन्द्र सरकारक स्वामित्व बला, ओकरा द्वारा नियंत्रित वा पर्याप्त मात्रामे सरकारी धन पाबएबला निकाय सभ, गैर सरकारी संगठन व निजी क्षेत्रक निकाय जे सरकारक द्वारा प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपसँ वित्तपोषित अछि, सामिल अछि।

आवेदक द्वारा सूचनाक अधिकारक उपयोग करैत केहन जानकारी मांगल जा सकैत अछि?

१. कोनो सरकारी दस्ताबेजक प्रति मांगि सकैत छी।

२.कोनो सरकारी दस्ताबेजक जाँच कए सकैत छी।

३. कोनो सरकारी काजकेँ जाँचि सकैत छी।

४. कोनो सरकारी काजमे प्रयुक्त बस्तुक प्रमाणित नमूना मांगि सकैत छी।

एहि कनूनक तहत अहाँ कोनो जानकारी हासिल कए सकैत छी जेनाकि : कोनो सड़ककेँ बनाबएमे सरकार कतेक खर्च केलक, प्रधानमत्रीक रहन- सहन पर कएल गेल खर्च,राष्ट्रपति भवनमे कएल गेल खर्च, कोनो सरकारी योजना पर कएल गेल खर्च, पंचायत द्वारा कोनो योजनामे कएल गेल व्यय वा कोनो प्रकारक अन्य जानकारी वा ओहिसँ सम्बन्धित दस्तावेजक छायाप्रति मांगल जाए सकैत अछि। सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुक्षेद ६ (२) अन्तर्गत आवेदकसँ ई नहि पूछल जा सकैत अछि जे ओ सूचना किएक मांगि रहल छथि।

संगहि व्यक्तिगत विवरण, आय, पैन नंबर, विभिन्न पैरामीटरक तहत विशेषज्ञक व्यक्तिगत पैनल द्वारा देल गेल प्राप्तांक, संपत्तिक रिटर्न आओर संपत्तिक विवरण, आकलन रिपोर्ट,मेडिकल रिपोर्ट, बैंक खातोंका विवरण, प्राधिकरणसँ स्पष्टीकरण मंगैत प्रश्न नहि पूछल जा सकैत अछि।

सूचनाक अधिकारक क्षेत्रमे नहि आवएबला विभाग :

कोनो खुफिया एजेंसीक ओहन जानकारी, जकरा सार्वजनिक भेलासँ देशक सुरक्षा आओर अखंडताकेँ खतरा हो

दोसर देशक संग भारतसँ जुड़ल मामला

थर्ड पार्टी यानी निजी संस्थान सम्बन्धी जानकारी जे सरकारक पास उपलब्ध अछि ओहि संस्थाक जानकारीकेँ सम्बन्धित सरकारी विभागक मार्फत हासिल कएल जा सकैत अछि।

स्वेक्षासँ जानकारी प्रकाशित कएल जाएत:

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुक्षेद ४ (बी) अन्तर्गत प्रत्येक सरकारी विभाग अपन विभागसँ सम्बन्धित अधिकसँ अधिक जानकारी स्वेक्षासँ विभागक वेवसाइटपर प्रकाशित करत। अन्यथा भारतक कोनो नागरिक सूचनाक अधिकारक तहत अनुक्षेद ६क तहत आवेदन दए सूचना प्राप्त कए सकैत छथि।

सूचनाक अधिकारक तहत आवेदन कोना कएल जाएत?

सूचनाक अधिकारक तहत आवेदनक हेतु कोनो निश्चित प्रपत्र नहि अछि। सादा कागज पर अपन आवेदन लिखि कए वांछित जानकारी मांगल जा सकैत अछि।

आवेदन शुल्कक भुगतान कोना कएल जाएत?

सूचनाक अधिकारक तहत आवेदन करबाक हेतु केन्द्र सरकारक अधीन आबएबला मंत्रालय विभागसँ जानकारी प्राप्त करबाक हेतु दसटाकाक शुल्क लगैत अछि जकर भूगतान पोस्टल आर्डर, बैंक ड्राफ्ट, द्वारा कएल जा सकैत अछि। राज्य सरकार सभ अलग- अलग शुल्क रखने अछि।

आरटीआइ ऑन लाइन

आवेदक सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अन्तर्गत सूचना प्राप्त करबाक हेतु, सूचनाक अधिकार (आरटीआई) ऑनलाइन पोर्टलक माध्यम https://rtionline.gov.in.सँ केन्द्रीय मंत्रालय/ विभागसँ एवम् ''ऑनलाइन सूचनामे उल्लिखित अन्य केन्द्रीय लोक प्राधिकरणकेँ अनुरोध कए सकैत छथि।''

आरटीआई नियम, 2012 क अनुसार गरीबी रेखासँ नीचाक लोककेँ आरटीआई शुल्कक भुगतान करबाक आवश्यकता नहि अछि। तथापि, बीपीएल आवेदककेँ अपन आवेदनक संग- संग एहि सम्बन्धमे, उपयुक्त सरकार द्वारा जारी प्रमाण-पत्रक एक प्रति संलग्न करब जरुरी अछि।

प्रथम अपीलीय प्राधिकारीकेँ अपील करबाक हेतु, आवेदककेँ आरटीआई ऑनलाइन पोर्टलमे ''सबमिट फर्स्ट अपील''नामक विकल्पक चयन करए पड़त आओर सामने आबए बला फार्मकेँ भरए पड़त। प्रथम अपीलकेँ दायर करबाक हेतु मूल आवेदनक पंजीकरण संख्या आओर ई-मेल आईडीक आवश्यकता पड़ैत अछि। आरटीआई अधिनियमक अनुसार, प्रथम अपीलक हेतु कोनो शुल्क नहि देबाक अछि। ऑनलाइन दायर आरटीआई आवेदन या प्रथम अपीलक स्थिति/ जवाब ''स्थिति'' पर क्लिक कए आवेदक द्वारा देखल जाए सकैत अछि।

सूचना के देत?

प्रत्येक सरकारी विभागमे एकाधिक लोक सूचना अधिकारी/सहायक लोक सूचना अधिकारी नियुक्त कएल जाइत छथि जिनकर जानकारी सम्बन्धित विभागक वेबसाइट किंबा सूचना पट्ट वा विभागमे पूछ-ताछ कए प्राप्त कएल जा सकैत अछि। लोक सूचना अधिकारी/सहायक लोक सूचना अधिकारी विभागक हेतु सूचनाक अधिकारक अधीन कएल गेल आवेदन प्राप्त करैत छथि, ओकरा सम्बन्धित अधिकारीकेँ पठाए सूचना संकलित करैत छथि एवम् नियत समय (आवेदन केलाक वाद एक मासक अधीन, कोनो- कोनो मामलामे ४५ दिन) मे जानकारी आवेदककेँ पहुँचवैत छथि।

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुक्षेद ६(३) अन्तर्गत जौं मांगल गेल सूचना आंशिक वा पूर्ण रूपसँ कोनो दोसर लोक प्राधिकरणसँ सम्बन्धित अछि तँ आवेदन प्राप्त केनिहार लोक प्राधिकरण ओकरा संविधित लोक प्राधिकरणकेँ पाँच दिनक भीतर स्थानान्तरित कए सकैत अछि। तकर सूचना आवेदककेँ सेहो देल जाएत।

प्रथम अपील

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुक्षेद १९ (१) अन्तर्गत प्रत्येक सरकारी विभाग ओहि अधिकारीक नाम अधिसूचित करत जकरा लग प्रथम अपील कएल जा सकैत अछि। जौं आवेदककेँ तीस दिनक भीतर जबाब नहि भेटैत छैक, किंबा भेटल जबाब अपूर्ण वा भ्रामक छैक तँ आवेदक तीस दिनक भीतर प्रथम अपीलीए अधिकारीक ओतए अपील कए सकैत अछि। एहि हेतु ओकरा फेरसँ फीस नहि देबए पड़तैक।

द्वितीय अपील

प्रथम अपीलीय प्राधिकारीक द्वारा देल गेल निर्णयसँ जौं आवेदक संतुष्ट नहि छथि तँ ओ द्वितीय अपीलीय प्राधिकारी (राज्य सूचना आयोग किंवा केन्द्रीय सूचना आयोग)केँ द्वितीय अपील कए सकैत छथि। ध्यान रहए जे एजन कोनो अपीलक समय सीमा ९० दिन अछि।

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुक्षेद २३ अन्तर्गत कोनो न्यायालय ताधरि कोनो मामला नहि सूनत जाधरि प्रथम अपील द्वितीय अपील/ क प्रकृया पूरा नहि भेल अछि।

उच्चतम न्यायलयक किछु महत्वपूर्ण निर्णय: उच्चतम न्यायलय हालमे सिवील अपील संख्या ६१५९-६१६२(२०१३)मे संघ लोक सेवा आयोग बनाम अग्नेश कुमार एवम् अन्यक (CIVIL APPEAL NO.(s).6159-6162 OF 2013

मामलामे स्पष्ट केलक अछि जे अनर्गल, अनावस्यक एवम् अव्यवहारिक सूचनाक मांग कए सरकारी विभागकेँ एतेक फिरसान नहि कएल जा सैत अछि जे सरकारक अधिकांश समय ओहि सूचनाकेँ उपलब्ध करेबामे एहि हद तक नष्ट भए जाइक जे रचनात्मक/सकारात्मक काज केनाइ पराभव भए जाए।

उच्चतम न्यायालयक न्यायमुर्ति आदर्श कुमार गोयल एवम् न्यायमुर्ति उदय उमेश ललितक पीठ द्वारा २० मार्च २०१८क एनजीओ कॉमन कॉजक याचिकाक निस्तारण करैत फैसला देलक अछि जे कोनो हालतमे पचासटा टकासँ बेसी शुल्क नहि लेल जा सकैत अछि। एकर अतिरिक्त जौं कोनो दस्तावेजक प्रतिलिपिक मांग कएल जाइत अछि तँ प्रति पृष्ठ पाँच टका अतिरिक्त शुल्क लेल जा सकैत अछि। ई आदेश उच्च न्यायालय, विधान सभा आओर अन्य सरकारी आओर स्वायत्त निकाय सहित सभ संस्थापर बाध्यकारी होएत जे सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 क अन्तर्गत अबैत अछि।

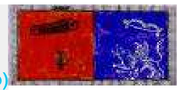
उच्चतम न्यायलय हालमे सिवील अपील संख्या ९०१७(२०१३) थालप्पलम सहकारी बैंक एवम् अन्य बनाम् केराल राज्य एवम् अन्य (मामलामे स्पष्ट केलक अछि जे सहकारी समिति सभ सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अन्तर्गत नहि अबैत अछि।

सूचना अधिकार कानून स्पष्टताक आवश्यकता: सूचना अधिकार कानूनक सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू लोक प्राधिकरणक मुद्दा पर स्पष्टताक आवश्यकता अछि। सूचनाक अधिकारमे अखनो कैटा त्रुटि अछि, जेना सरकारी अधिकारी द्वारा जबाब देबाक हेतु भारी भरकम फीसक मांग कए देब, आवेदनकेँ एहि विभागसँ ओहि विभाग स्थानान्तरिक करैत रहब, सामिल अछि। प्रथम अपील विभागेकक अधिकारीक समक्ष कएल जाइत अछि जाहिसँ मामलामे कोनो नव बात नहि भए पबैत अछि। समान्यतः ओ पहिने लेल गेल निर्णयक पुष्टि कए दैत छथि। तकर बाद दोसर आ अन्तिम अपील राज्य वा केन्द्रीय सूचना आयोगक समक्ष करबाक प्रावधान अछि। मुदा समस्या अछि जे ओहिठाम आवेदनक भरमार अछि आ निर्णय लेबामे बहुत समय लागि जाइत अछि जाहिसँ कैबेर गलत लोक बँचि जाइत अछि। सरकारकेँ बहुत रास मामलामे सूचना नहि देबाक छूट भेटि जाइत अछि। कानूनक एहि प्रावधानक कतेको मामलामे दुरूपयोग होइत अछि। कोनो-ने- कोनो बहाना बनाए सूचना नहि देबाक प्रयास होइत रहल अछि। हलाकि आयोग एहन मामलामे बहुत सख्त रुखि रखैत अछि आ दोषी अधिकारीकेँ जुर्माना सेहो लगबैत अछि।मुदा तैँ की? विलंब तँ भैए जाइत अछि। फेरसभ लोक ओतेक धैर्य पूर्वक लागलो नहि रहि पबैत छथि।

जे होउ, सूचनाक अधिकार कानूनकेँ बनि गेलासँ भारतक नागरिककेँ सरकारी काम-काजक जानकारी लेब आसान भए गेल अछि। कतेको तरहक जरूरी सेवामे निर्णयमे पारदर्शिता आएल अछि। बहुत तरहक कदाचारक मामला सभ पकड़ल गेल अछि। सरकारी अधिकारी गलत काज करबामे डराइत छथि। कतेको मंत्री धरिकेँ इस्तिफा दबए पड़लनि अछि। निश्चय एहि कनूनसँ आम नागरिकक महत्व वढ़ल अछि। मुदा दिक्कति एहि बातक अछि जे एखनो बहुत रास नागरिक एहि कानूनक जानकारीसँ वंचित छथि। ताहि हेतु जरुरी अछि जे एकर पर्याप्त प्रचार होइक। सूचना लेबाक आ आवेदन करबाक प्रकृयाकेँ आओर सरल बनाओल जाइक।q

२५.०३.२०१८

रबीन्द्र नारयण मिश्रक



दूटा लघुकथा

जीबी तँ की की ने देखी !

लोक की की ने देखलक। मुदा दू-चारि बर्खसँ जे सभ गाममे भए रहल छल से एकदम अप्रत्याशित छलैक। नव-नव गुलंजर नित्य उठैत रहैक।

रबि दिन हाट लगल रहैक। सभ पुरुष हाट करए गेल रहए। अरूण बाबू सपरिवार गाम आएल छलाह। हुनकर भाए मोहन बाबू बेस अगरजित छलाह। मैट्रिक उतीर्ण केने छलाह। ओना, खेत-पथार बहुत तँ नहि रहनि मुदा गुजर होयबामे कोनो दिक्कत नहि होइक। गाम घरक झगड़ा फड़िछाबएमे ओस्ताद छलाह मुदा अपना घरक झगड़ा नहि फड़िछा पबैत छलाह। घरवाली बड़ड तेज छलखिन। गोर-नार दप-दप। बी.ए. केने छलखिन। पिता गरीब मुदा विवेकी छलखिन। हुनकर एक मात्र कन्या छलखिन शीला, जिनक बिआह मोहन बाबूसँ भेल छलनि। मुदा बिआहक बाद हुनका लोकनिक आन्तरिक मतभेद बढ़ले चल जाइत छलनि। एहि बातसँ शीला बड़ दुखी ओ उदास रहैत छलीह।

अरूण बाबू बहुत दिनक बाद आएल छलाह। दूनू भाए आपसमे गप्प-सप्प करैत छलाह कि क्यो स्त्रीगण रिक्सापर आएल आ ओकरा संगे दोसर स्त्रीगण घरसँ बहराएल आ रिक्सापर बैस चुप्पे चलि गेलथि। किछु कालक बाद मोहन बाबू आँगन गेलाह तँ घरक जिंजीर बन्द छल। आँगन सुन्न। कतहुँ क्यो नहि। मोहन बाबू गुम्म। ने हुनका आगा सुझनि आ ने पाछा। की करी,की नहि करी किछु फुराइते ने छलनि। क्रमशः ई गप्प सौसे गाम पसरि गेल।

ई घटना कोनो नव नहि छल। एक मास पहिने एकटा एहने घटना भेल जे पूरा इलाकाकेँ झकझोड़ि देलक। पूरबरिया गामवाली बड़ सात्विक छली। दुरागमनसँ पहिने बिधबा भए गेल छलीह। तहिआसँ आइ धरि सात बर्ख बीति गेल। मुदा कतहुँ हुनक चर्चा नहि भेल। नित्य प्रात: चारिये बजे उठि जाइत छली। गामक सभ लोक सूतले रहए कि अन्हरिएमे नहा-सोना कए पूजा-पाठ करए लगैत छलीह। सम्पूर्ण शरीर तेजमय। मुदा किछु दिनसँ दर्द दर्दक सिकाइत करैत छलीह। लोककेँ होइक जे पेटमे अल्सर भए गेलनि अछि। लाजे ओ किछु बजथिन नहि। अन्ततोगत्वा पढुआ काका नहि मानलखिन। हुनका जबरदस्ती अस्पताल लए गेलखिन। डाक्टर अस्पतालमे भर्ती कए देलकनि। ओकरा भर्ती करा कए पढुआ काका किछु पैसा-कौड़ी जोगार करए गाम आपस अएलाह। प्रात:काल अस्पताल पहुँचला तँ रोगीक

कतहुँ पत्ते नहि। पता नहि रोगी केतए चल गेलीह। सौंसे इलाकामे एहि बातक गर्द पड़ि गेल।

ओना तँ गाम-घरक लोक बेस नेम-टेमबला। मुदा बेसीलोकक मोन सिआह। क्यो ककरोसँ कम नहि मुदा भीतरे-भीतर सभकेँ घून पकड़ने। मुदा इलाकामे एक्के बिहाड़ि। स्त्रीगण सभ घोघ उठाबए लेल बेहाल। बेटा सभक पिताक कुंजी छिनए लेल बेहाल। पुतोहु सभ सासुक गट्टा पकड़ए लेल बेहाल। घरे-घरे भिन्नक हाबा से जोरगर बहल अछि जे बयन परसैत-परसैत सभ परेशान। घरे-घर कै-कै गोट चूल्हा भए गेलैक अछि।

खैर!ई तँ जे भेलैकसे भेलैक। मुदा सभसँ आश्चर्य ओहि दिन भेल जहन पुरुषोत्तम बाबूक घरवाली हनहनायल थाना पहुँचि गेलैक। ओकरा देखए लेल चौगामका हजारो लोक जमा भए गेल। करमान लागल लोक आ तैयो दनदनाइत दरोगाजीक ऑफिसमे प्रवेश कए गेल। दरोगाजी पुलिसकेँ आदेश देलखिनजे भीड़केँ भगा दौक आ अपने ओहि कन्याक इजहार लेबए लगलाह। सँए-बहुमे गम्भीर मतभेद भए गेल छलैक। घरवाली कनिक्को रौ सहए वाली नहि छलैक। बाते-बातमे दूनू व्यक्तिमे मारि -पीट भए गेलैक। घरवाली थानामे आबि कए एफआइआर कए देलकैक- “हमारा जान का खतरा है।”

तकर बाद ओ रिक्सा पकड़ि मधुबनी चल गेलि। बहुत दिनक बाद सुनल गेल जे ओ कतहुँ आनठाम बिआह कए लेलक अछि।

गाममे ओझा-गुनी आ भगैतक चर्चा अखनो जोर पकड़ने छल। फुदरक घरवालीकेँ हाथक चाटी चलैत छलैक आ कनेक-मनेक मंत्र-तंत्र सेहो ओ जनैत छल। मुदा एहि बेर अष्टमीक दिन बेस ताल भए गेलैक। ओकर घरवाली साफे बकए लगलैक। खुलि कए देवी खेलाए लगलैक। गाम-गामक भगता आएल। मुदा ककरो बुते देवी नहि पकड़मे अएलैक। गाममे ओहि दिन पछवारि गामक ओझाजी आएल छलाह। हुनको तंत्रे-मंत्र बेस जोरगर छलनि। दौड़ल-दौड़ल लोक हुनका बजौने आएल। ओझाजी अएलाह। अनुष्ठान भरि राति भेलैक। देवी बन्हेबे नहि करैक। अन्ततोगत्वा भोरुकबा रातिमे आबि कए ओ देवी पकड़मे अएलैक। गटागट बाजए लगलैक-

“एक मास धरि अनुष्ठान कर। ई कर, ओ कर, नहि तँ सौंसे गामकेँ पीस कए धए देबौक।” इत्यादि-इत्यादि...।

औ बाबू! आब तँ सौंसे गौंआ ओझाजीक अनुनय-विनय करए लागल। ओझाजी अपन भाव बढ़बए लगलाह-

“हमरा तँ ओतए जेबाक अछि। ई करबाक अछि, ओ करबाक अछि। हम परसू जेबे करब। एक्को दिन नहि रूकि सकैत छी।”

बड़ड मोसकिलसँ ओ रूकलाह। नित्य साँझसँ देवीक अनुष्ठान घरमे शुरू होइक आ भोर धरि चलैत रहैक। ओहि अनुष्ठानक दौरान ओतए ककरो आएब मनाही छलैक। देवी रहि-रहि कए गरजै-

“सभकेँ देखबौ। एक-एककेँ देखबौ..!”

फूहर बाबू बाहर दरबाजापर सभ सुनैत रहथि आ देवीक आराधना करैत-करैत औँघा जाथि। ओमहर ओझाजी अनुष्ठानमे लीन। अनुष्ठानक अन्तिम दिन छल। नि:शब्द राति। ओझाजी आ फूहरक घरवाली अनुष्ठानमे लीन। सभ क्यो औँघाइत छल। एही समयमे दूनू देवी-देवता एकाएक गाएब। गामसँ पूब दिस सड़क छलैक। से पकड़ने-पकड़ने ने जानि कतए चल गेल। भोर भेने गाममे फेर एकटा गुलंजर छुटि गेल।

गाममे आब की की ने अछि। इंजीनियर, प्रोफेसर आ बीए-एमए केर तँ गप्पे जाए दिअ। गामक लोक बेस टेटियाह। एकदम नियमसँ रहब आ नियमसँ जीब। भोरे उठि कए सुतबाक काल धरि मंत्रोच्चार करैत रहताह। गरीबक घर कोनो अधलाह काज भेल नहि कि ओकरा चट्टे बारि देताह। मुदा धनिक लेल सातटा खूनो माफ।

प्रोफेसर साहेबकेँ घरवालीसँ नहि पटलनि। तलाकक मोकदमा भए गेल। घरक लोकमे सँ क्यो कनियाँक पक्षधर नहि भेलैक। तलाक पास भए गेलैक। प्रोफेसर साहेब धराक दए दोसर बिआह केलाह। ओहिसँ बच्चो भेलनि ओ ओहि बच्चाकेँ विआहो भए गेलैक।

सोचियौक समय कतए-सँ-कतए पहुँचि गेल। जीबी तँ की की ने देखी!

¦

तुषारपात

सभागाछीसँ बरक सिद्धान्त लिखाकए आबि गेल छलैक। सौंसे गाम हँगामा भए गेलैक। हीराबाबूक बेटीक बिआह आइ.ए.एस. अधिकारीसँ हेतैक। पिता हो तँ एहन। लाख रूपैआ तिलक लगलैक।

हीराक पिता शीतल बाबू नामी ठीकेदार छलाह। एक मात्र सन्तान एक बेटी छलखिन। कतेको बरखसँ बरक खोजमे भिरल छलाह मुदा कतहुँ किछु कमी तँ कतहुँ किछु...। ओहि दिन पुरबारि गाम दिस बिदा भेल छलाह कि रस्तामे अकस्मात किछु गोटेसँ परिचय भए गेलनि। वएह सभ ओहि बरक परिचय देलकनि। बर जहिना देखैत सुन्नर तहिना सौम्य स्वभाव। शीतल बाबू तय कए लेलाह जे जान रहए कि जाए मुदा ई काज करक अछि।

अन्तोगत्वा एक लाख टकापर गप्प गेल। पन्द्रह जुलाईक दिन सेहो निश्चित भेल। बड़ उत्साहसँ बिआहक विधि सभ पूर्ण भेल ओ शीतल बाबूक ओहिठामसँ चौगामा लोककेँ हकार देल गेल।

हीरा बाबू नीलिमाक बिआहक चर्च इलाका भरिमे पसरि गेल। जकरे देखू सएह ओहि बिआहक चर्च करैत छल। बिआहक चारि-पाँच दिनक बाद हीरा बाबू आइ.ए.एस.क प्रशिक्षण करए चल गेलाह। बेस मौज कटलैक ओहि प्रशिक्षणमे। हीरा बाबू गोरनार ओ अतीव सुन्दर छलाह। हुनक व्यक्तित्वमे आकर्षण छलनि। बेस मौजी लोक छलाह एवम् विचारसँ अत्याधुनिक। आइ.ए.एस.क प्रशिक्षण करैत-करैत ओ दुनियाँसँ पूर्ण परिचित भए गेल छलाह। प्रशिक्षण समाप्त भेलापर हुनकर पदस्थापन लखनउ भेलनि।

हीराबाबूक पराक्रम दिन दुगुन्ना ओ राति चौगुन्ना बढ़िते जा रहल छल। नीलिमाक पालन-पोषण संयत वातावरणमे भेल छल। ठीकेदार साहेब यद्यपि सुखी सम्पन्न लोक छलाह, मुदा स्वभावसँ अतिशय संयत। धिया-पुतापर हुनके संस्कारक छाप छल। नीलिमा जहिना देखैत सुन्दर छलीह, स्वभावो ओहिना मधुर। बिआहसँ साल भरि पूर्वे वो स्नातकक परीक्षा प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण केने छलीह। बिआहक बादसँ हुनका अपूर्व प्रशन्नता छलनि। यद्यपि वो सभ काज पूर्ववते करैत छलीह। मुदा मोन सदिखन हुनकेपर टांगल रहनि।

ओमहर हीराबाबू भोग-विलासमे नीलिमाकेँ बिसरि गेलाह। प्रयोजने कोन छलनि जे वो नीलिमा हेतु व्यग्र होइतथि।

नीलिमाक आँखि चिर प्रतीक्षासँ असोथकित भए गेल छलनि। एक दिन अपन माएकँ संग कए हीराबाबूक डेरापर स्वयं पहुँच गेलीह। डेरापर पहुँचिते ओतएसँ एकटा बेस सुन्दरिकँ बाहर जाइत देखि हुनकर माथा ठनकलनि। हीराबाबू ओकरे संग कोठरीसँ बहराएल छलाह। नीलिमाकेँ देख वो गुम्म पड़ि गेलाह। फेर बजलाह-

“हलो!नीलिमाजी। आउ, आउ। हम तँ अहींक प्रतीक्षा कए रहल छलहुँ।”

किछु दिन हीराबाबूकँ नीलिमाक संग खूब नीक लगलनि। किन्तु मासक धक लगिते हीराबाबूक पुरना आदति सभ पछोड़ करए लगलनि। किछु दिन नीलिमा चुप्प रहलीह, किन्तु जहन मामला हदसँ बाहर भए गेल तँ वो सोचलीह जे हीराबाबूकँ बुझाएल जाए।

“अहाँ एतेक राति धरि कतए रहैत छी?”

“कतहुँ रहैत छी ताहिसँ अहाँकँ मतलब?”

“जरूर मतलव अछि! आखिर हम अहाँक अर्द्धांगिनी थिकहुँ। अहाँक सुख-दुखमे हाथ बटायब हमर हक ओ कर्तव्य अछि।”

नीलिमा सेहो तावमे आबि गेल छलीह। बाते-बातमे हीराबाबू शराबक नशामे धुत एक चाटी चला देलखिन। नीलिमा ओतहि पसरल ओछाओनपर जा खसलीह। हीरा बाबू दोसर कोठरीमे जाए किदनि बजैत आराम करए लगलाह। ओहि दिनसँ जे दूनू गोटेमे शास्त्रार्थ शुरूआत भेल से अविरल चलिते रहल। घरक वातावरण कलहसँ नर्क भए गेल छल। नीलिमा हीराबाबूकँ सुधारक हेतु कृतसंकल्प छलीह ओ हीरा बाबू सेहो अपने रस्तापर चलबाक हेतु अड़ल रहलाह। निरन्तर तनाव ओ कलहमे रहलासँ नीलिमाक स्वास्थ्य खसए लगलनि। ओ एक मास धरि लगातार ज्वरसँ पीड़ित रहलीह।

नीलिमाक विमारीक खवरि ठीकेदार बाबूक कान धरि पहुँचल। पहिने तँ हुनका विश्वासे नहि भेलनि मुदा जखन हुनका नीलिमाक पत्र प्राप्त भेलनि तँ ओ गुम रहि गेलाह।

तेजस्वी, चंचल ओ सतत प्रशन्न रहए वाली नीलिमा पीयर, निस्तेज ओ शुष्क पड़ि गेल छलीह। फटकियेसँ अपन पिताकँ अबैत देखि जान-मे-जान आबि गेलनि। ओ दौड़लीह आ अपन पितासँ स्नेहवश सटि गेलीह। ठीकेदार साहेबकँ अश्रुपात होमए लगलनि। हीराबाबूक कार सेहो संयोगसँ ओहि समयमे बाहरसँ आएल एवम् ओहीठाम ठहरल।

बाप-बेटीक एहि मधुर मिलनक कोनो प्रभाव हीराबाबूपर नहि पड़ल आओर वो ससुरकेँ बिना गोर लगने अपन निवास स्थित कार्यालयमे दनदनाइत चल गेलाह। ठीकेदार साहेब बुजुर्ग छलाह। हीरा बाबूक रंग-ढंग ओ नीलिमाक निस्तेज देहकेँ देखि ओ स्थितिकेँ तुरन्त बुझि गेलाह। मोनमे भयंकर क्रोध होमए लगलनि। मुदा अपन आवेगकेँ बेस मोसकिलसँ रोकलाह। फेर नीलिमाक संगे हुनकर कोठरीमे चलि गेलाह।

पता नहि, कतेक काल धरि ठीकेदार साहेब नीलिमाक संगे बैसल रहलाह। स्नेह मिश्रित अपन गप्पसँ हुनका सुखी करैत रहलाह। एहि गप्प सभसँ नीलिमाकेँ प्रर्याप्त मानसिक विश्राम भेलनि। वो सुति रहलीह। ठीकेदार साहेब पता नहि, की की सोचैत रहलाह?

भोरे आठे बजे ओ ओहिठाम पहुँचल रहथि। दुपहरियाक एक बाजि रहल मुदा हीरा बाबू अखन धरि ससुरक पुछारि नहि केलाह। नीलिमाक संग भोजन कए ठीकेदार साहेब स्वयं हीरा बाबूसँ भेँट करए गेलाह। हीरा बाबू अपन आवासीय कार्यालयमे फाइलक बीच डूबल छलाह। ठीकेदार साहेब हुनका देखि ठिठकि गेलाह। मुदा हीरा बाबू अविचल रहि हुनक तिरस्कार करैत रहलखिन।

नीलिमा आगू बढ़ैत कहलखिन-

"बाबूजी, अएलाह अछि।"

हीरा बाबू ठीकेदार साहेबकेँ इसारा कए बैसबाक आग्रह कएलनि। ठीकेदार साहेब पुछलखिन-

"की हाल अछि?"

"ठीके। कोना अएलहुँ?" हीरा बाबू बाजि उठलाह।

"ओहिना शहरमे किछु काज छल। सोचलहुँ अहुँसँ भेँट केनहि चली।"

नीलिमाकेँ अपन पिताक उपेक्षा नहि सहल गेलनि। ओ तमतमाइत अपन पिताकेँ घिचने ओहिठामसँ उठि गेलीह। हीरा बाबू पुन: फाइलमे डुबि गेलाह।

गाड़ी मधुबनी टीशनपर आबि गेल छलैक। नीलिमाकेँ औँघी लागि रहल छलनि। ठीकेदार साहेब उठौलखिन-

"उठू नीसू उठू। मधुबनी आबि गेल।"

नीलिमा थाकल, झमार लउतरलीह। निस्तेज, उत्साहहीन, नीलिमाक एक्का जौं-जौं गाम दिसि बढ़ए लागल, नीलिमाकेँ भूतकालक दृश्य सभ मोन पड़ए लगलनि। कतेक दुलारू छली ओ। गामक लोक सभ जे क्यो ओमहरसँ गुजरए, नीलिमा दिस तकिते रहि जाए। जेहने सज्जन तेहने सुन्दरि। स्वभाव ओ गुणक अपूर्व समन्वय। पिताक एकलौता सन्तान। ठीकेदार साहेब जे किछु कमेलाह तकर प्रेरणा नीलिमेक छल। कतेक गरीब छलाह वो। नीलिमा लक्ष्मी बनि कए आएल छलि हुनका ओतए। नीलिमाक जन्म होइतहि ओ बढ़ए लगलाह। मुदा आइ संगे-संग एक्कापर चलैत-चलैत ओहो गुम छलाह। किछु कालमे गाम आबि गेल। ठीकेदार साहेब ओ नीलिमा एकपेरिया रस्तापर अपन घर दिस बढ़ैत गेलाह। लगैत छलैन जेना हुनकर सभ आशापर तुषारपात भए गेल हो।

¦

रबीन्द्र नारायण मिश्रक

नमस्तस्यै

आगाँ...

३२.

गाम अबितहिं ओकरा पुष्पाक समाचार भेटलैक। पुष्पा मास्टर साहेबक नवजागरण मंचक सदस्यता लए लेने छलि। बेटा राजकुमारक उग्रवादी सोचक प्रगतिशील विचारमंचक मूर्धन्य नेता छलैक मुदा ओ मास्टर साहेबक इमान्दार छबिसँ प्रभावित रहए। फेर दुनू गोटे संगे मनोरोगी अस्पताल काँकेमे साल भरि समय बितौने छल। बादमे डाक्टर भेद खोललक जे दुनू स्वस्थे छल। ककरो दिमाग खराप नहि रहैक। मानसिक अवसादक कारण व्यवहार गड़बड़ा गेल रहैक।

जे होइक, मुदा घरेमे वैचारिक मतभेद ओहो माएक संग राजकुमारक हेतु एकटा कठिन परिस्थिति जरूर उत्पन्न कए देने छल। तकर समाधान हेतु राजकुमार मास्टर साहेब ओहिठाम पहुँचल। मास्टर साहेब राजकुमारकेँ देखि बहुत प्रशन्न भेलाह। राजकुमार सभटा बात मास्टर साहेबकेँ कहलकनि। आखिर ओ हुनकर विद्यार्थी रहि चुकल छल। मास्टर साहेबक कोनो बात काटए जोगर नहि होइत छलैक। ओजनाधार पार्टीक रुखिसँ असहमत छलाह। कारण ओकरामे वैचारिक इमान्दारीक अभाव रहैक। मुदा प्रगतिशील विचारमंचक सेहो समर्थन नहि कए

सकैत छलाह। कारण उग्रवादसँ फिरंगीक लोहा लेब सम्भव नहि छल। सामाजिक परिवर्त्तन तँ मास्टर साहेबक मूलमंत्र छलनि।

सैद्धान्तिक रूपसँ राजकुमार मास्टर साहेबसँ सहमत छल। मुदा एकर कार्यान्वयन कोनो होएत। कारण ओकरा गुटमे आधा आदमी तँ भूतपूर्व डकैत छल जे गाहे-बगाहे ओकर संग भए गेल छल। डकैती आब छोड़ि देने छल मुदा अतीत ओकरा सभक पछोड़ कए रहल छल।

एहि सभक समाधान हेतु मास्टरे साहेब विचार देलखिन जे अरुणसँ भेँट कए एहन लोक सभकेँ आम माफी दिआबक प्रयास कएल जाए जाहिसँ ओ सभ खुलिकए राष्ट्रक मुख्यधारासँ जुड़ि सकए।

राजकुमारकेँ ई विचार बहुत नीक बुझेलैक। मास्टर साहेबक संग कए अरुणक डाक बंगला दिस विदा भए गेल। मोन भेल जे एक बेर अरुणसँ भेँट कएल जाए। बच्चाक दोस्तछल, हमर नैहरक छल, तँ जिज्ञासा स्वभाविक। हुनका कहलिअनि तँ सहर्ष तैयार भए गेलाह। हम सभ बिना कोनो पूर्व सूचनाकेँ दड़िभंगा कलक्टरक डेरापर पहुँच गेलहुँ। ओहि डेराक रूप-रंग देखिकए लगैक जे कोनो पैघ आदमी ओतए आबि गेल छी। कतेको नोकर-चाकर सभ लागल छल। फुल, फलहरीसँ भरल छल। कतेको गोटे कलक्टर साहेबसँ भेँट करए आएल रहथि। मुदा पीए जहाँ हमर नाम कहलकै ओ तुरन्त अपने बाहर आबि गेलाह आओर हमरा देखिते बहुत प्रशन्न भेलाह। हम सभ अन्दर अतिथि कक्षमे बैसिले रही कि मास्टर साहेब, राजकुमारक ओहिठाम आगमनक सूचना भेटल। अरुण हुनकर विद्यार्थी रहि चुकल अछि।

राजकुमार तँ स्कूलिया संगी रहैक। अरुणकेँ जहाँ खबरि भेटलैक, तुरन्त ओकरो सभकेँ ओहीठाम बजा अनलक। तीनटा स्कूलिआ संगी, हम, अरुण आओर राजकुमार मास्टर साहेबक संगे एकट्ठा भए गेल रही। सभक बहुत खातिर भेल। ओकर अंग्रेजी पत्नी एंगल जरूरी काजसँ पटना गेल रहैक। सौंसे डेरा खालिए छल।

गप्प-सप्पक क्रममे मास्टर साहेब प्रगतिशील विचारमंचक चर्चा केलथि। ओ जहाँ से बात शुरू केलथि तँ अरुण टोकलकनि जे अहाँ तँ नव जागरण मंच बनौने छी। फेर प्रगतिशील विचारमंचसँ की लेना-देना?

ताहिपर मास्टर साहेब कहलखिन जे दुनू संस्था अलग-अलग काज कए रहल अछि। दुनूक उद्देश्यमे कोनो बेसी अन्तर नहि छैक। हम सभ आपसमे मिलि कए फिरंगीसँ संघर्ष करए चाहैत छी। मुदा एहिमे दिक्कत आबि रहल अछि।

ताहिपर अरुण हुनका दुनू गोटेकेँ दोसर कोठरीमे लए गेल आओर सभ बात विस्तारसँ सुनि कहलक जे हम फिरंगीसँ प्रगतिशील विचारमंचक कार्यकर्त्ता सभपरसँ पुरना केस सभ हटा लेबाक अनुशंसा कए देबैक मुदा भविष्यमे हिंसाक रस्ता छोड़ए पड़तैक। सभकेँ लिखित शपथपत्र देबए पड़तैक जे ओ सभ आगा एहि तरहक काज नहि करत। मास्टर साहेब आओर राजकुमार तुरन्त एहि बातमे सहमति दए देलथि। एहिसँ नीक प्रस्ताव भइए की सकैत छल?

गप्प-सप्पक बाद ओ सभ हमर कोठरीमे आबि गेलाह। ताबे हम सभ चाह-जलखै कए लेने रही। कनीकाल आरामो केने रही। मास्टर साहेब अतिशय प्रशन्न रहथि। राजकुमार सेहो आश्वस्त छल। सभ अपन-अपन जगहपर

बैसि आगूक कार्रबाइक योजना बना रहल छलाह कि क्यो धरफराएल अन्दर आएल। ओ राजकुमारक हाथमे एकटा पुर्जी देलक। राजकुमार ओकरा पढ़ि चिन्तित भए गेल। सभ पूछए लगलैक- ‘‘की भेल?’’

मास्टर साहेबकेँ सेहो चिन्ता होमए लगलनि। राजकुमारक माए पुष्पा बहुत दुखित छलैक। जखन राजकुमार गामसँ विदा भेल रहए तखनो ओकर हालत ठीक नहि रहैक। ओ मास्टर साहेबक संगे चोट्टे गाम विदा भए गेल।

हम सभ ओतहि अटकि गेलहुँ। कारण नीकसँ गप्प करक इच्छा छल। एक युगक बाद ओकरासँ भेँट भेल छल। स्कूलिआ संगी तँ छलहे, हमर पितिऔतो छल आओर से ओकर व्यवहारमे लक्षित भए रहल छल।

हमरा सभ अरुणक सत्कारसँ बहुत प्रशन्न रही। सभ तरहक सुविधासँ सम्पन्न ओहि डेरामे अभाव छल तँ ओकर पहिल पत्नीक जे तमसाकए किंवा आक्रोशमे डेरा छोड़ि नैहर चलि गेल रहथिन।

भोर होइते हमरा लोकनिक हेतु गरम-गरम चाह आबि गेल। सर्किट हाउसक डिलक्स कोठरीमे हम दुनू गोटे रही। लगए जेना दोसर देश पहुँचि गेल छी। कतए गामक परिवेश, कहाँ कलक्टरक आवासक सम्पन्न परिसर ओ सुसज्जत सर्किट हाउस।

कनीकालमे अरुण अपने आएल। सभ गोटे संगे चाह पीलहुँ। चाह पीबैतकाल गप्प-सप्पक क्रममे धिया-पुताक चर्च स्वाभाविकसँ भेलैक। बच्चा सभक, खास कए बेटी सभक पढ़ाइ लए कए हम बहुत चिन्तामे रही।

अरुणक उदारताक वर्णन लोकक मुहेँ सुनैत रहिऐक। से सद्य: तखन देखलिऐक जखन ओ तुरन्त बच्चासभक पढ़ाइक जिम्मा उठा लेलक। सरकार दिससँ बहुत रास छात्रवृत्ति अबैत छलैक आओर एमहर-ओमहर भए जाइत छलैक।

अरुणक एहि आश्वासनसँ मोन प्रशन्न भए गेल। फेर आओर-आओर प्रकरण सभपर गप्प होमए लागल। हम सभ भोरे जे बैसलहुँ से ९ बाजि गेल। अरुणकेँ कार्यालय जेबाक रहैक। पहिनेसँ तय कैटा बैसारमे से जेबाक रहैक। जाइत-जाइत अपन पहिल पत्नी उमाक चर्च कए गेल आओर आग्रह केलक जे ओकरा मनाओल जाए। अरुण ओकरो अपना ओहिठाम राखबाक हेतु तैयार छल। उमाक नैहर हाजीपुर लग नवगाम हमर सभक गामसँ फटकी रहैक तथापि ओकरा आश्वासन दए हम सभ गाम विदा भेलहुँ।

समस्या जटिल तँ भइए गेल रहैक। उमाक नैहर बेस धनाढ्‍य छलैक। ओ सभ कोनो मामलामे अरुणसँ उन्नैस नहि रहैक, बीसे रहैक। उमाक भाए सभ बड़का-बड़का पदपर रहैक। बाप धनीक ओ प्रतिष्ठित जमींदार रहथिन। तखने मोतीपुर ड्योढ़ीमे अरुणसन बरसँ बेटीक बिआह केलथि। मुदा समय बलवान होइत अछि। लोक सोचैत अछि किछु, भए जाइत छैक किछु।

ओमहर गाम पहुँचतहिं राजकुमारक मोन कोनादन भए गेल। जेना किछु असगुन घटित भए गेल हो। पोखरिक लग पहुँचले छल कि रमुआ भेटलैक। ओकरा देखिते भोकासी पाड़ि कए कानए लगलैक रमुआ। कनैत-कनैत बाजल-

‘‘मालकिन नहि रहलीह... ।’’

एतबा कहैत-कहैत ओ फेरसँ कानए लागल, राजकुमारसँ लपटि गेल। की-की कहैत रहल। राजकुमार तँ अपने अबाक रहए, एना असमयमे माए चलि जेथिन से नहि सोचि सकल रहए। मुदा भावी...। राजकुमारक कनैत-कनैत आँखि लाल भए गेल। जमीनपर प्राणहीन, नि:शब्द, अचल पड़ल ओकर माए तुलसी चौरा लग उत्तर मुहेँ राखल छलीह। चारुकातसँ लोक सभ घेरने छलाह। राजकुमार दण्डवत भए हुनका प्रणाम करबक हेतु उद्धत भेल आओर ठामहि खसि पड़ल।

q

३३.

अरुण कार्यालय गेल मुदा ओकर मोनमे काल्हिसँ आइ धरि भेल घटनाक्रम बेर-बेर मोनमे घुमैत रहलैक। क्यो ई नहि सोचि सकैत छल जे मास्टर साहेब सन नीक लोकक खिलाफ जासूसी चलैत हो। मुदा सत सएह रहैक। अंग्रेजक राज रहैक। जे क्यो देश भक्त छल ओकरा सभपर फिरंगीक वक्र दृष्टि रहैक। लोककेँ पता होइक नहि होइक मुदा ओकर हिसाब-किताब फिरंगीक ओहिठाम राखल जाइत छल। के कतए गेल,ककरा ककरासँ भेँट केलक- सभ बातक जानकारी ओकरा रहैत छल।

कार्यालयमे प्रगतिशील विचार मंच एवम् नव जागरण मंच सहित अन्य एहन संचिका सभ मंगओलक। संचिका देखि ओ दंग रहि गेल। आश्चर्य लगलैक जे एतेक असत्य खबरि सभ कोना आओर ककरा माध्यमसँ अबैत रहल। एताबत ई बुझा गेलैक जे मास्टर साहेबक बातपर अमल करैत तथाकथित विद्रोही सभकेँ माफी देब आसान नहि छलैक। मुदा ओ प्रयास करैत रहल।

किछु दिनक बाद फेर घुमैत फिरैत हम सभ अरुणक डेरापर पहुँचलहुँ। एहि बेर हमर चारू बच्चा संगे छल। तीनू बेटीक कालेजमे नाम लिखाबक छलैक। एहि बातक चर्च होइतहि अरुण तुरन्त अपन पीएकेँ घण्टी दए बजओलक आओर आदेश देलक जे तीनू बच्चाक नाम पटना कालेजमे लिखा देल जाए एवम् तीनूक रहबाक ओ अन्य खर्चाक प्रबन्ध हेतु पर्याप्त छात्रवृति स्वीकृत सेहो कए देल जाए। आखिर तँ ओ जिलाक कलक्टर छल। तीनू बेटीक नाम पटना कालेजमे लिखा गेल। छात्रावासमे रहबाक व्यवस्था भए गेल एवम् मासिक छात्रवृत्तिक पहिल अग्रिम भूगतान सेहो भए गेल।

हमरा उमीदसँ बेसी मदति अरुणसँ भेटल। ओकरा हृदयसँ धन्यवाद दैत हमसभ दोसर दिन गाम आपस विदा होइत रही। अरुण उमाक हाल चाल पूछए लागल। हम सभ हाजीपुर लग स्थित नवगाम जाए उमासँ भेँट कए आएल रही, मुदा ओहिठाम भेल बातकेँ कहबाक हिम्मत नहि भए रहल छल। मुदा अरुण तँ तेज आदमी छल। ओ हमरा लोकनिक भाव भंगिमासँ सभ बात अखिआसि लेलक आओर एतबे आग्रह केलक जे एकबेर ओकरा उमासँ भेँट करबा दैक, कारण व्यक्तिगत स्तरसँ ओ एहिमे सफल नहि भए सकल छल।

एमहर हम सभ गाम पहुँचले छलहुँ कि मास्टर साहेब, राजकुमारक शीघ्रे एक हेबाक समाचार भेटल। मास्टर साहेब ओ राजकुमारक वैचारिक मतभेद परिस्थितिजन्य कारणसँ कम भेल जा रहल छलनि। ओ सभ तँ

जनाधार पार्टीक मुखिआ चेतनसँ सेहो गप्प करए चाहैत छलाह। उद्देश्य ई छल जे समस्त राष्ट्रवादी शक्ति एक भए फिरंगीकेँ देशक बाहर करए। देश स्वतंत्र होएत तँ सभ रस्ता अपने खुजत। पराधीन सपनहुँ सुख नाही। से बात आब सभक मोनमे धसि गेल छलैक। पहिनहुँ ई बात सभ जनैत छल, मानैत छल, मुदा आपसी मतान्तरक नफा फिरंगी सभ उठबैत रहल।

फिरंगी सभकेँ जासूसी खबरि भेटि गेलैक जे राष्ट्रवादीसभ एक भए रहल अछि। ओकरा सभहक हेतु ई कोनो शुभ समाचार नहि छल। सभ वरिष्ठ अधिकारी सभक बैसार भेल। विचार रहैक जे जनाधार पार्टीक प्रगतिशीलमंचसँ फराके रखबाक प्रयास होइक। ताहि लेल मास्टर साहेब ओ राजकुमारक एकटाकेँ प्रोत्साहित कएल जाए। ताहिपर अरुण अपन बात रखैत जोर देलक जे ई तखने सम्भव होएत जखन कि ओकरा सभक खिलाफ मोकदमा सभ आपस लेल जाए। कहक मतलब जे आम माफीक एलान कए देल जाए। सभ अरुणक प्रस्ताव मानि गेल। किछुए दिनमे मास्टर साहेब ओ राजकुमारकेँ अरुणक कार्यालयसँ बजाओल गेल आओर सरकारी एलानक चिट्ठी देल गेल जाहिमे प्रगतिशील विचार मंच एवम् नव जागरण मंचक कार्यकार्त्ताक नाम तमाम मोकदमा सभसँ हटा देल गेल। ओकरा सभकेँ आम माफी दए देल गेल।

डिगडिगिआ पिटि कए एहि बातक एलान गाम-गाम कए देल गेल। निश्चय ई मास्टर साहेब ओ राजकुमारक हेतु बहुत नीक दिन छल। परिपट्टामे ओकर सभहक नारा लागि रहल छल। हमरा लोकनि अपन गामसँ सिमरिआ मास करए गेल रही। गाम-गामक लोक सभ ओहिठाम एक मास गंगाक कछारमे टेंट खसाए भोरे-भोर गंगा स्नान कए पूजा पाठ करैत अछि। नव नव लोकसँ परिचयक अवसर भेटैत छैक। गाम घरक चिन्तासँ किछु दिनक हेतु मुक्ति भए जाइत अछि।

ओहि माघ मेलामे नवगामक लोक सभ सेहो रहैक। हमर नैहरक लोक सेहो रहैक। सभक आपसमे क्रमश: भेँट-घाँट होइत होइत बात खुजलैक जे उमा सेहो मास करए आएल छथि। हम एक दिन असगरे हुनकर बासा दिस गेलहुँ। संयोगसँ ओ बाहर निकलिते रहथि। नवगाम लोकक डेरा दूरेसँ क्यो देखा देने रहए। हमरा हुनका एकबेर भेँट भेल रहए, मुदा एक्कहि बेरमे कतेक गप्प कएल जाइत। अपना भरि बुझाबक प्रयास केने रहिऐक। एहिबेर एसगरि पाबि विस्तारसँ गप्प भेल।

उमाक संग अन्याय तँ भेले रहैक। ओ चुपचाप से सहि जाएवाली नहि रहथि। हुनकामे दृढ़ता ओ निष्ठा भरल छल। सत्य ओ न्यायक हेतु ओ कोनो हद धरि लड़ि सकैत छलीह। हुनकर इएह व्यक्तित्व तँ अरुणक डरक कारण छल। ओ जनैत छल जे उमा प्रतिकार करतीह। एही भयसँ ग्रसित भए ओ किछु बीचक रस्ता निकालबाक प्रयासमे छल। मुदा उमा तँ एकदम एहि पार वा ओहिपारक तैयारीमे छलि। ओकर तर्कक आगू हम किछु नहि कहि सकलिऐक। अरुण गलती तँ केनहि रहए।

q

३४.

आममाफीक एलानमे भजनानन्ददास उर्फ गरम सिंहक नाम सेहो रहैक। ई शुभ समाचार देबए मास्टर साहेब राजकुमारक संग कए स्वयं देबए गेलाह। ई तँ एकटा बहाना रहैक, असलमे हुनका सभक इच्छा रहनि जे भजनानन्ददासजी महराजसँ भेँट कए स्वतंत्रता आन्दोलनकेँ आग बढ़ाबक जोगार कएल जाए। किछु आर्थिक मदतिक सेहो प्रयोजन रहनि।

भजनानन्ददासक यश चारूकात पसरि गेल छल। देशक कोन-कोनसँ भक्तगण ओहि आश्रममे आबि शान्ति लाभ करैत छलाह। भजनानन्दजीक व्यक्तित्व ओ चरित्र दिन प्रति दिन चमकि रहल छल। लोकसँ स्वेच्छासँ प्राप्त अकूत धनक उपयोग ओ जन कल्याणमे करैत छल। ओकर आश्रममे अध्यात्मक व्यवहारिक स्वरुप देखबामे अबैत छल। आश्रममे रहनिहार बिधवा सभ पूर्ण सुरक्षित ओ आनन्दमे रहैत छलीह। दू सएसँ बेसीए बिधवाक पालन पोषण हुनकर आश्रममे होइत छल। वृन्दावनेमे नहि अपितु चारूकात भजनानन्ददासक आश्रमक यश छल।

भजनानन्ददास भजन करैत-करैत वस्तुत: संत भए गेल छलाह। संगहि विशुद्ध राष्ट्रवादी विचारक छलाह। फिरंगी सभकेँ हुनकर बढ़ैत प्रतापसँ डर होइत छलैक। तेँ हुनका केसमे फसाबए चाहलक मुदा सत्यक विजय भेल। ओ ई बात बुझैत रहथि।

दोसर दिन साँझमे मास्टर साहेब ओ राजकुमार आश्रम पहुँचलह। ओहि समय आश्रममे आरती चलैत रहैक। भजनानन्दजी इशारासँ हिनका सभकेँ ओतहि रुकबाक हेतु कहलखिन।

आश्रमक आरती तँ नामी छल। सैंकड़ो संत, महात्मा, गृहस्थ, बिधवा सभ मगन भए आरती करथि ओ राधे! राधे!क भजन सेहो। हारमोनियम, ढोल, झाइलक संग सूरदासक भजन सुनि तँ कतेको भक्तगण भाव विह्वल भए नृत्य करए लगैत छलाह। करीब डेढ़, घन्टा भरि ई कार्यक्रम चलल।

तकर बाद प्रसाद वितरण भेल। हमरो सभकेँ प्रसाद भेटल। प्रसाद अति स्वादिष्ट होइत छल। होइत छल जे खाइते रही।

आरतीक बाद भजनानन्दजी हमरा सभकेँ अपन कक्षमे बजा लेलथि आओर सभ बात ध्यानसँ सुनलथि। ओ एहि बातसँ बहुत प्रशन्न भेलथि जे हुनका एवम् आश्रममे हुनका संगे रहनिहार हुनकरचेला सभपर सँ पुरनका मोकदमा सभ सरकार आपस लए लेलक। मास्टर साहेब बात आगू बढ़बैत कहलखिन जे स्वतंत्रता आन्दोलनमे गति देबाक काज छैक।

आपसी संगठन मजगूत कए फिरंगी सरकारपर आक्रमणक प्रयोजन छैक। ताहि हेतु ओ सभ प्रगतिशील विचार मंच ओ जनजागरण मंचक विलय करए चाहैत छथि।

प्रयास तँ ईहो भए रहल अछि जे जनाधार पार्टीक सेहो सामिल कए समस्त जनशक्तिकेँ संगठित कएल जाए मुदा जनाधार पार्टीबला सभ आगा- पाछा कए रहल छल। ओकरा सभमे असलमे सही नेतृत्वक अभाव छल।

भजनानन्ददास एहि बात सभसँ बहुत प्रशन्न भेलाह जे स्वतंत्रता आन्दोलन आब गति पकड़ि रहल अछि। अपना तरफसँ ओ सभ प्रकारसँ सहयोगक आश्वासन देलाह। तय ईहो भेल जे एकमास बाद दड़िभंगामे एकटा सम्मेलन कएल जाएत जाहिमे प्रगतिशील विचार मंच ओ जनजागरण मंचक आपसी विलय भए जाएत।

ऐ **रचनापर अपन मतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु आ आमक गाछी (उपन्यास) धारावाहिक आ दूटा लघुकथा

१

जगदीश प्रसाद मण्डलक

पंगु

उपन्याससँ...

7.

देश स्वतंत्र भेला पछाइत, जमीनक लड़ाइ सौंसे देशमे पसैर गेल। 1947 इस्वीसँ पूर्व जहिना एकमुरही लड़ाइ अंगरेजी शासनक खिलाफ उठल छल तहिना स्वतंत्र भेला पछाइतदेशमे जमीनक लड़ाइ पसैर गेल। लड़ाइ केना ने पसरैत, आखिर कृषि प्रधान देशो तँ छीहे किने। बिनोवा भावेक नेतृत्वमे भूदानी आन्दोलन शुरू भेल। आन्दोलनक नारा छल- जमीनबला अपन कुल जमीनक छठम हिस्सा स्वेच्छासँ दान करैथ। ओ जमीन खेतीपर जीवन बसर करैबला भूमिहीनक बीच देल जाए।

ओना, जमीनक लड़ाइ दू रूपमे चलल।पहिल, जमीनबलासँ बकास्त जमीन खेती करैबला बँटेदारकेँ देल जाए, आ दोसर भूदानमे प्राप्त जमीनक बँटबारा सेहो हुअए। भूदानकेँ यज्ञ रूपमे स्थापित कएल गेल।

खेत ओहन सम्पैत छी, जइमे एक धुर-आध-धुर लेल खून-खराबी, मारि-पीट गामे-गाम होइते आबि रहल छल। हजारो मुकदमा जहिना कोर्टमे फँसल छल तहिना हजारो भूमिहीन सेहो कानूनी शिकंजामे फँसि जहल जाइत-अबैत रहला।

ओना, गाम-गामक संग जिला आ राज्य स्तरपर सेहो भूदान कमिटी बनलछल, तैसंग सरकारी कार्यालय सेहो बनल, मुदा जइ ढंगसँ भूदानी नारा छल तेकर ठीक विपरीत ओकर कार्यान्वयन हुअ लगल। लेन-देनक अड्डा सरकारियो कार्यालय आ भूदानियो कमिटी बनि गेल। जेकर परिणाम हुअ लगल जे एक-एक जमीनक सबूत[i] तीन-तीन, चारि-चारि आदमीकेँ भेटए लगल। एक दिस जमीन देनिहार दाता अपन जमीन छोड़ए नहि चाहै छल, तँ दोसर दिस प्राप्तकर्ताक बीच सबूत लऽ कऽ तेहेन ओझरी लागि गेलजे गामे-गाम लड़ाइ फँसि गेल।

भूदान कमिटीक जे सदस्य लोकैन छला ओहो आगिमे घी दइक काज करबे केलैन। ओना, गामे-गाम किछु एहेन दाता सेहो छेलाहे जे अपन देल जमीन, अपना विचारसँ भूमिहीनकेँ सुपुर्दो केलैन आ अपने हाथे दखल-कब्जा सेहो करबा देलखिन। मुदा एहेन लोक एक्की-दुक्की भेला। गाम-समाजक जेहेन समस्या जमीनक छल ओइ अनुपातमे पाँच-दस प्रतिशत एहेन भेल।

छठम हिस्सा, जमीनदान करैमे सेहो एकरूपता नहि रहल। हथ-उठाइ भीख जकाँ छठम हिस्साक जगह मात्र किछु जमीनक नाम-पत्रटा दऽ देलखिन। सेहो ओहन जमीन देलखिन जे उपजाउ भूमि नहि छल। चौर-चाँचर, परती-पराँत जमीन छल। ओना, गाम-गाममे गरीबकेँ मात्र जमीन उपजबैयेक समस्या नहि, बसो-बासक समस्या सेहो छल। गामक चौथाइ आवादी ओहन छल, जेकरा घर बन्हैक अपन घरारियो ने छेलइ।

गामे-गाम तँ नहि, मुदा किछु गाम मिला-मिला खादी भण्डार सेहो बनल। गाम-गामक समाजक किछु जाति विशेष ओहन छल जे खादी कपड़ा बुनै छल। खादी भण्डार ओकरा कच्चा माल[ii] दइ छेलै आ ओकरासँ बुनल कपड़ा कीनै छल। ओना, कपड़ा बुनैक लूरि मात्र किछु जाति-विशेषकेँ छल, एकर[iii] समाजीकरण नइ भेल छल, जइसँ किछु जाति-विशेषक बीच

उद्योग सीमित भऽ गेल। कपड़ा बनबैक जे कच्चा माल छेलै ओ जातिक बन्धन तोड़ि अधिकांश जातिक बेवसाय जरूर बनल छल, मुदा वएह बेवसाय आगू बढ़िते कपड़ा बुनब समाजिक बन्धनमे फँसि गेल छल। तहूमे खास कऽ मुस्लिम जातिक बीच 'जोलहा आ धुनिया'क बेवसाय बुझए जाए लगल। हिन्दू-मुसलमानक बीच समाज बनले अछि। हिन्दू ऐ बेवसायकेँ नहि अपनौलक। मुसलमानोक बीच सैयो जाति अछि। ओइ सैयो जातिमे मात्र दू जाति- जोलहा-धुनियाक रोजगार मात्र बनि कऽ रहि गेल। जोलहा-धुनिया सभ गाममे अछिसेहो बात नहियेँ अछि। किछु-किछु खास गाममे अछि। तहूमे परिवारक संख्याक हिसाबसँ सेहो ठेकान नहियेँ अछि। जइसँ सभ गामक जोलहा-धुनियाक बेवसायो नहियेँ बनल। जइ-जइ गामक जोलहा-धुनियाक रोजगार कपड़ा बुनब नहि छल, ओ सभ अपन-अपन आन-आन रोजगार जीवकोपार्जन लेल करबे करै छल।

गाम-गामक खादी भण्डार भूदानी सबहक अड्डा बनि गेल। माने ई जे भूदान कमिटीक जे सदस्य सभ छला, ओ सभ खादिये भण्डारमे खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ अपन डेरा रखै छला आ खादिये भण्डारक वस्त्र सेहो प्राप्त करै छला। जइसँ एकाएकी खादी भण्डार टुटए लगल, अन्तो-अन्त सभ टुटि गेल। गाम-गामक एकटा बेवसाय मरि गेल। खादी भण्डारकेँ टुटने जहिना कपड़ा बुनकरक रोजगार गेल तहिना सूत कटनिहारक रोजगार सेहो मरबे कएल। एक तँ ओहिना गाम-गाममे बेरोजगारी पसरल छल, तैपर एकटा आरो बढ़ि गेल। ओना, मिथिलांचलमे अनेको साधन कल-कारखानाक लेल मौजूद अछि मुदा साधन रहितो कल-कारखानाक अभाव रहबे कएल। ठाम-ठीम चीनीक मिलआ धानसँ चाउर बनबैक मिलटा मात्र छल। ओना, लघु उद्योगक रूपमे सेरसो-तोरीसँ तेल बनबैक संग कुशियारसँ गुड़ बनबैक हथकर्घा[iv] रूपमे सेहो छल, मुदा ओहो वृहत् रूपमे नहि छल। चीनी मिल सेहो सालो भरि नहियेँ चलै छल, सालक मात्र छह मास चलै छल। छह मास बन्न रहै छल, जइसँ मिलमे काज करैबला श्रमिक सबहक बीच ईहो समस्या[v] छेलैहे। ओना, कहैले बैसारीक समय श्रमिककेँ आधा वेतन देल जाइ छेलै, मुदा ओहूमे अनेको रूकाबट छेलइ। ओहो नियमित रूपसँ नहियेँ चलै छल।

गाम-गाममेनगदी खेतीक रूपमे कुशियारक फसिल छल, मुदा कुशियारो तँ सभ खेतमे नहियेँ उपजैए। नीचरस खेत, जइमे पानि बसैए तइमे कुशियारक खेती नहियेँ होइए। कुशियारक खेती-ले ऊँचरस जमीन चाही। जे सभ गाममे नहियेँ अछि। ओना, जैठाम-जैठाम चीनी मिल बैसौल गेल ओ कुशियार उपजैबला जमीन देख-देख बैसौल गेल, मुदा मिलसँ दूर-दूर हटलो गाम सबहक किसान, नगदी खेती बुझि कुशियारक खेती थोड़-थाड़ करबे करै छला। गामक खेतसँ मिल तक कुशियार पहुँचबैक साधन रेलोक माल गाड़ी छल आ बैल गाड़ी सेहो छल। रेलक स्टेशने-स्टेशन मिलक राटन बनल छेलइ। जैठाम इलाकाक किसान बैलगाड़ीसँ कुशियार पहुँचबै छला। ओना,कुशियारक रेट मिलक जेते रहै छल तइमे ढुलाइ खर्च सेहो ओही मूल्यमे कटौती होइ छेलै, जइसँ स्थानीय किसान आ दूरक किसानक दरमे अन्तर होइते छल। तहूमे नगद कारोबार सेहो नहियेँ होइत छल।

कुशियारोक खेती करैमे किसानकेँ अनेको समस्या छेलैन्हे। एक तँ सीजनल फसिल रहने एकेबेर सभ किसानक कुशियार तैयार होइ छेलैन, जे समयपर नहि कटने वजनमे कमी अबै छल, तैसंग मिलक जेतेक क्षमता, कुशियार पेरैक छल तेही अनुकूल कुशियारक पुर्जा[vi] भेटै छेलै जइसँ किसानकेँ अबै-जाइक समस्या छेलैन्हे। तेकर पछातियो नगदा-नगदी कारोबार नहियेँ छल। मासक-मास,सालक-साल किसानक कुशियारक दाम पछुआइत छल, जइसँ कुशियार उपजौला पछातियो समयपर किसान अपन पाइसँ काज नहि कऽ पबै छला। ओना, जइ मिलकेँ जेतेक कुशियारसँ चीनी बनबैक क्षमता छल, ओ ओतबे ने पेरत। जँ किसान बेसी खेती केलैन तँ ओहिना खेतमे रहि जाइ छेलैन, जइसँ खेती अनबिसबासू बनैत गेल आ मिलो बन्न हुअ लगल।

q

शब्द संख्या : 911, तिथि : 30 मई 2018

जारी....

---

[i]कानूनी अधिकार

[ii]सूत

[iii]कपड़ा बनबैकेँ

[iv]बिनु इंजिनक

[v]माने छह मास बैसारीक समस्या

[vi]राटनपर कुशियार आबैक आदेश पत्र

आमक गाछी

आरम्भ...

1.

बीस जून। ओना, बीस जून गोटे साल शुरू जेठमे पड़ैए तँ गोटे साल उतार जेठमे, तैसंग कोनो-कोनो साल अखाढ़क शुरूमे सेहो पड़िते अछिमुदा से नहि, ऐ साल 'बीस जून' उतार जेठमे पड़ल। सप्ताहसँ बेसी बैरसाइत[i]केँ सेहो भइये गेल छल...।

बीघा भरिक देवचन्द्रक गाछी-कलममे तीनटा आमक गाछ भरखैर पकैत, बाँकी सात-गाछमे गोटि-पङ्गरा आ शेषमे कोनो-कोनोमे बोनाइत तँ कोनो-कोनोमे अखन खिच्चे सुआदक रंग पकड़ने। ओना, प्रेमनगरक किसान आन गामक किसानसँ कनी बुधिगरो आ श्रमगरो[ii] नइ छैथ सेहो केना नइ कहल जाए। प्रेमनगरक चारूकातक जे गाम सभ अछि, जेना-रामपुर, कृष्णपुर, महमदपुर आ रूद्रपुरइत्यादिगामक किसान सभ जे कलम-गाछी लगबै छैथ, तइमे कलमी आम हुअ कि सरही, जामुन हुअ कि बैर, बेल हुअ कि बरहर,शीशो हुअ कि गमहाइर, सभ कियो सहरगंजा रोपै छैथ, मुदा प्रेमनगरक किसान सभ जे गाछी-कलम लगौने छैथ आकि लगबै छैथ ओ एकदम कतारबन्दी रूपमे। कतारबन्दीक माने ई जे कलमी आमक कलममे जहिना कलमी आम छोड़िदोसर ने कोनो आमे गाछ आ ने बेखे-बुनियादिक। बेख-बुनायादि भेल लकड़ी उपयोगी वृक्ष। ओना, कलमियो आम सइयो रंगक अपन गुण-धर्मबला अछिए, तँए एक गुणक मिलान आ एक धर्मक मिलान ओहूमे बेसी नीक होइत अछि। किएक तँ ओकर सभ किछु एक रूपे चलैए आ से नइ रहने जहिना बहुधर्मीकेँ एकठाम भेने होइए तहिना केतौ नहाइकाल झगड़ा तँ केतौ खाइकाल झगड़ा, केतौ चाहक झगड़ा तँ केतौ अनचाहक झगड़ा होइतो अछि आ अरबेधलो रहिते अछि। अरबेधब भेल- आगियो आ खढ़-पातसँ लऽ कऽ ठहुरी-चेरा धरिक सुखाएल जरनोकेँ एकठाम राखि देब, भलेँ किए ने कनी-कनी हटाइये कऽ रखलौं आ पूरबा-पछबा हवामे ऊड़ि-पुरि एकठाम भऽ सुनैग कऽ पजैर जाइते अछि।
खाएर.., प्रेमनगरक किसान श्रेष्ठ किसान छथियो आ मानलो जाइते छैथ। इलाकामे जखन कखनो आमक गाछी-कलम वा बेख-बुनियादिक चर्च केतौ होइए तँ प्रेमनगरक चर्च जहिना होइए तहिना रामपुरोक चर्च होइते अछि मुदा से प्रेमनगरक विपरीत दिशामे। विपरीत दिशा भेल- जहिना भगवान रामक नाम शुभ रहितो गन्दा-सँ-गन्दा वस्तु देख 'राम-राम' कहि गबाही रखि दइ छिऐन, जहिना मृत्युक बरियातीमे 'राम-नाम सत् छी' कहैत असमसानक पार लगबै छी तहिना ने जुआन-जहानक बरियातीमे

रसगुल्ला खाइत-खाइत राम-धाम सेहो पार लगबैबते छी। खाएर जे छी से छी, सभ नीके छी आ सभ अधले छीमुदा सभ कियो तँ छीहे किने।

पनरह जूनकेँ कौलेजमे गरमी छुट्टी भेल, ओना किछु गोरे एकरा 'अमैया छुट्टी' आ किछु गोरे 'ग्रीष्मावकाश' सेहो कहिते छैथ मुदा जाए दियौ ऐ बातकेँ, बात तँ बाते छी, अपना मनक मौजी बहुकेँ कहलौं भौजीआ लोको लग अपन निर्लजताक नाच नचैत रहलौं। भाय,पत्नी पत्नी छैथ किने, ओ तँ जहिना जीवन संगिनी भेली, अर्द्धांगिनी भेली तहिनाप्रेमिका सेहो भेबे केली, मुदा तैठाम जँ कियो दिन-राति टी.भी.मे खेले वा सिनेमे देखती तँ देखौथ आ अपन कर्मक समय विधाताक हाथमे दऽ दौथ..!

गरमी छुट्टी होइते धीरेन्द्र सोझे गाम आबि गेल। बीस जूनकेँ जगमोही सेहो आम खाइक बहन्ने अपन मातृक पहुँचल।

धीरेन्द्र आ जगमोही पटनेमे रहि पटने कौलेजमे बी.ए. फाइनल इयरमे पढ़ितो अछि आ एक्के विषय दुनूक रहने संग-संग किलासोमे आ ट्यूटोरियलमे सेहो एक-दोसरकेँ देखतो अछिए। मुदा जहिना जेनरल क्लासमे तहिना ट्यूटोरियल क्लासमे सेहो दुनूक बैइसैक ब्रेंच अलग-अगल अछिए। जइसँ लगक गपो-सप्प कहियो किए हएत। ओना, अखन तक ने धीरेन्द्र अपन अंगीत जगमोहीकेँ बुझैत आ ने जगमोहीए धीरेन्द्रकेँ बुझैए। तेहेन जुग-जमाना आबि गेल अछि जे ने कियो नामक टाइटिलसँ केकरो परेख सकैए आ ने जाति-पाँजिसँ, केकरा एते छुट्टी छै जे अनेरेक रमझौआमे लागल रहत। नव पीढ़ीक लोक खेलाड़ी आ सिनेमा-कलाकार सबहक नामधुन करत आकि अपन बाप-पुरुखाक..! कोन मतलब ओकरा छै जे अपन बाप-पुरुखाक वंश आ जीवनकेँ बिटिया अपन वंशक इतिहासक संग देश-दुनियाँक इतिहासकेँ बुझत। मुदा ईहो तँ बात सबहक सोझेमे अछि जे जे जेते जिनगीक रस पीबए चाहैए ओ ओते बेचैन सेहो भेले जाइए।

ओना, समाजशास्त्र विषयक जेनरल क्लासमे पचाससँ ऊपर विद्यार्थी अछि, मुदा शनियेँ-शनि जे ट्यूटोरियल क्लास चलैए ओ उनटा पाठक, तँए ओ क्लास मात्र पान-सातटा विद्यार्थी करैए बाँकी अधिकांश मैटिनी शो सिनेमा देखैए वा किछु गोरे घुमि-फिर शहरे-बजार देखैए। मैटिनी शो सिनेमा देखैक कारण टिकटक कन्शेसन सेहो अछिए। उनटा पाठ जे ट्यूटोरियल क्लासमे होइए ओ ई होइए जे आन दिन माने सोमसँ शुक्र धरि शिक्षक जे पढ़बै छैथ ओकर उत्तर ओइ क्लासमे विद्यार्थीसँ लेल जाइए। आइक परिवेशमे माने शिक्षण संस्थानक परिवेशमे, ट्यूटोरियल क्लासक नामो भरिसक छात्र सभ नइ बुझैत हएत जखन कौलेजमे पढ़ाइये नहि भऽ रहल अछि तखन ओकर उत्तर की भेटत।

ट्यूटोरियल क्लासक पान-सातटा विद्यार्थीमे जहिना धीरेन्द्रक तहिना जगमोहीक उपस्थिति अनिवार्य रूपसँ रहैए। बाँकी पान-सातक बीच नव-पुरान होइत रहैए। सभ शिक्षकक अलग-अलग सप्ताहमे ट्यूटोरियल क्लास होइ छैन, तँए ऐ बातकेँ शिक्षक सभ नहि बुझि पबै छैथ। ओना, छात्रो सभमे किछु गोरेक सम्बन्ध शिक्षको सभ संग छैन्हे, तँए अपन-अपन ट्यूटोरियलमे अपन-अपन परिचित छात्र रहिते छैन जइसँ नव-पुरान हएब सोभाविके अछि। जहिना धीरेन्द्र अपनाकेँ ओते सक्कत बना क्लास पहुँचै छल जे जे किछु शिक्षक पुछतातइमे जे पढ़ौने छैथ ओकर अतिरिक्त अपनो विचार राखब, तहिना जगमोही सेहो अपन तैयारीक संग क्लास पहुँचै छल। ओना,ट्यूटोरियल क्लासमे कम विद्यार्थी रहने आगूक जे दुनू ब्रेंच बैसैक अछि, तहीपर दहिना भागक ब्रेंचपर धीरेन्द्र बैसैत आ बामा भागक ब्रेंचपर जगमोही। समयक मिलानी दुनूकेँ रस्तोक मिलानी करबैत आ ट्यूटोरियल क्लासक सेहो। माने भेल एक गाड़ी पकड़ैले जहिना दूटा यात्री अपन निर्धारित समयपर घरसँ विदा होइ छैथ जइसँ रस्तामे गप-सप्प भलेँ नहियोँ होइत हौनु मुदा मुँह-मिलानी तँ होइते छैन। कहैकालमे भलेँ सभ कहि दइ छिऐ जे शरीरक पाँच इन्द्रीमे जहिना मुँह भेल, आँखि भेल तहिना कानो भेल। मुदा की तीनूक जीवन क्रिया एक्केरंग अछि? मुँहमे मुंगबाक सुआदसँ लऽ कऽ तेतैरक खट-मीठ आ नीमक तीतपन तकक रस भेटते अछि, जखन कि आँखि सोझे देखैबला भेल। नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधला देख-देख आँखि कखनो कानि-कानि नोरो चुबबैए तँ कखनो मिरचाइक कडुपनसँ पानियोँ तँ बहैबते अछि। मुदा कान तँ काने छी, खा-पीब कऽ रस चुसैक कोन बात जे आँखि जकाँ ने देखिये सकैए आ ने मुँह जकाँ सुआदे पाबि सकैए, लऽ दऽ कऽ हवामे उड़ल नीक-बेजाएकेँ खाली सुनिटा सकैए। जइसँ, जहिना बहिरा अपने ताले नचैए तहिना नाच करत। मुदा ऐ सभसँ कोन मतलब धीरेन्द्रकेँ आकि जगमोहीए-केँ छइ। दुनू गोरे कौलेजमे पढ़ैए, कौलेजिया संगी कहियौ आकि क्लासक संगी,एक-दोसरक छी। अट्ठारह बर्खक उमेर सेहो दुनू टपिये गेल अछि, किए ने खुलि कऽ खेलाएत। मुदा से नहि, दुनू अपन-अपन सीमाक बीच अनुबन्ध अछि। ओना, दुनूक प्रश्नोत्तर दुनू तँ सुनिते अछि, तैसंग शिक्षक

सेहो ट्यूटोरियल क्लासमे सुनै छथिन जइसँ एक-दोसरक अध्ययनक गहराइ सेहो एक-दोसर बुझिये रहल अछि। ओना, क्लासमे शिक्षक निर्धारित पाठ्यक्रममे जे पोथी निर्धारित अछि ओकरे आधार बना पढ़बै छैथ मुदा शिक्षको तँ शिक्षके ने भेला। कियो जेतबो सिलेबशमे अछि तेतबो ने पढ़बै छैथ आ किये किये एहनो तँ छथिए जे ओरिकासँ घी परसै छैथ। 'ओरिकासँ घी परसब'क माने भेल सिलेबशसँ अतिरिक्तो पढ़ाएब, हुनका कोन मतलब छैन जे दालिक सुआद रहल कि मेटाएल। ओ तँ सिलेबशक कोन बात जे दुनियाँक सिलेबश आगूमे रखिये दइ छैथ। शिक्षकेक अनुकरण ने शिक्षार्थी करत। ओहो ने वएह बुझत। भलेँ किए ने ओ शिक्षकक पठनकेँ निर्णित करए जे जहिना शिक्षक जुग-स्रष्टा छैथ तहिना जुग-द्रष्टो तँ होइते छैथ। तँए शिक्षार्थियोकेँ तहिना ने जिनगीक बाट भेटत।

ओना, शिक्षको अपन सिखपनसँ सीखिये नेने छैथ जे ट्यूटोरियल क्लासमे अनेरे जे माथक बोझ बढ़ाएब (माथक बोझ बढ़ाएब भेल- एक-एक छात्रसँ प्रश्न पुछब) तइसँ नीक जे पैंतालीस मिनटक घन्टीमे दस मिनट रीब-रीबेमे गेलबँचल पैंतीस मिनट, से नहि तँ एक-एक छात्र-छात्रासँ प्रश्न पुछि समय ससारि लेब। जे लाभ धीरेन्द्रोकेँ आ जगमोहीकेँ सेहो भेटिये जाए। जहिना कहल जाइए जे करत-करत अभ्याससँ जड़-मूढ़ सेहो सुजान भइये जाइए। मनुख तँ सहजे मनुख छी, अन्न-खाइबला आ पानि पीबैबला। घोड़ा घास खाइए तखन तँ एते हिहिआइए, मनुख तँ सहजे मनुख छी जेकर सभ जीव-जन्तुसँ अतिरिक्त गुण भेल हँसब।

ट्यूटोरियल क्लासक शिक्षक भेला प्रश्नकर्त्ता, धीरेन्द्र आ जगमोही भेल उत्तर देनिहार। बाँकी सभ शिक्षकोक भाषण आ विद्यार्थियोक 'उत्तर-भाषण' सुननिहार भेल। तँए खुलल वा झाँपल भेल निर्णयकर्त्ता। किए अनेरे कोनो पक्षमे ठाढ़ हएत। किए ओ प्रश्नकर्त्ता प्रश्न अङ्केजत आ किए ओकर जवाबदेह बनत। सभ ने सुविधानुसार जीबए चाहैए। जखन अवसर भेटल तखन वएह सभ किए छोड़ि देत। अपन उत्तरमे जहिना शिक्षकक भाषण सिलेबशकेँ अतिक्रमण करै छेलैन तहिना धीरेन्द्रो आ जगमोहीओ उत्तर दइते छल। तेकरा शिक्षक लोकैन, ट्यूटोरियल क्लासक विषय कहि परीक्षामे लिखैसँ परहेज करैक सलाह दुनूकेँ दैत क्लास अन्त करै छला।

दुनियाँमे प्रेमोक अपन रंग-रूप छइ। सात अरब लोकमे जगमोहीक जेहेन रूप धीरेन्द्र देख रहल छल ओहन रूप धीरेन्द्रक जगमोही नहि देख पेब रहल छल। दुनूक अपन-अपन नजरियो आ दृष्टिकोणो छेलैहे। मुदा ट्यूटोरियल क्लासक जे सिख (अध्ययन) छल ओ दुनूकेँ जरूर नव सिखपन (अध्ययनशीलता) दिस बढ़ौलक, जइसँ एक-दोसरक बीच, भिन्न दृष्टि रहितो आकर्षित करबे करै छल।

ओना, आकर्षणोक अपन गुण-धर्म अछि। कोनो आकर्षण ओहन होइए जइमे विकर्षणो समान रूपमे संगे चलैए आ कोनो एहनो आकर्षण अछिए जइमे विकर्षणक मात्रा कम रहने हेराएल-हेराएल सन रहैए। जइसँ आकर्षणे-आकर्षण बुझि पड़ैए। तहिना विकर्षणोक तँ छइहे जे बेसी मात्रामे भेने आकर्षणकेँ दाबि दइए। जखन लोहा सन निर्जीव धातुक चुम्बकीय आकर्षण ओहन होइए जे अपना सन-सन भतलोहोकेँ अपना संगमे रंगि अपन गुण-धर्मसँ भरिये दइए। भलेँ ओ ओतबेकालक किए ने होउजेतेकाल चुमकलोहमे सटि अपनो चुम्बकत्वमे किए ने बदैल गेल हुअए। खाएर जेतए जे होइ से तेतए हुअए। अजगर सन साँपो जखन अपन नजैरक कनखी आ मुँहक सूसकारीसँ आन साँपकेँ लगमे आनि भक्षे किए ने कऽ लैत हुअए मुदा तइसँ कोन मतलब धीरेन्द्रकेँ आकि जगमोहीएकेँ अछि। अखन तँ जिनगीक एको टपान दुनूमे सँ एको ने टपि सकल अछि, तखन जिनगीक टपानक बाते केना बुझत।

जहिना धीरेन्द्रक मनमे जगमोहीक प्रति जिज्ञासा जागल तहिना जगमोहीकेँ सेहो धीरेन्द्रक प्रति जागल। एक रस्ताक राही माने एक विषयक विद्यार्थी भेने दुनूक मनमे एते तँ जिज्ञासा जगिये चुकल अछि जे जखन दुनू गोरे एक कौलेजक एक क्लासमे पढ़ै छी तखन बुधियो-ज्ञान ने एकरंग हुअए। एकर माने ईहो नहि जे आनसँ बेसी नइ हुअए, आ ने यएह माने हएत जे आनसँ कम्मो नइ हुअए। एक स्थानक यात्रीक बीच एहेन कोनो सीमा थोड़े अछि जे सभकेँ एक्केरंग चलए पड़त। कौलेजोमे तँ तहिना होइते छै जे किये प्रथम श्रेणीमे उतीर्ण होइए, किये दोसर श्रेणीमे आ किये तेसर श्रेणीमे। मुदा जिनगीक अध्येता अपन जिनगीक अध्याय ओहीठामसँ शुरू करैक चेष्टा करै छैथ जैठाम मजगूत नीवक जरूरत अछि। औझुके नीवपर

ने काल्हि ठाढ़ हएत। तँए, भविसवेत्ता भलेँ जे हुअए मुदा भविसक निर्माता नइ छी सेहो केना नइ कहल जाएत। औझुके रोपल गाछ ने काल्हि फल देत।

धीरेन्द्रो आ जगमोहीयो एक-दोसरक जीवन परिचय गुप्त रूपसँ भाँज लगबए लगल। मुदा दुनूक प्रतिबन्धित बाट, प्रतिबन्धित ऐ मानेमे जे जानकारी पबैमे कहीं सीमोलंघन ने भऽ जाए, नइ तँ जगहँसी हएत। एक तँ पटनामे ने धीरेन्द्रकेँ बेसी चिन्ह-पहचीनक लोक आ ने जगमोहीएकेँ। ओना, कौलेजो आ हाइयो स्कूल, सइयो-हजारो अपरिचित चेहराक परिचित करबैक गड़ छीहे, मुदा परिचय-पात करैक जगह तँ छी नहि, छी तँ पढ़ै-लिखैक जगह। जेकर अपन निर्धारित सीमा-सरहद अछि। तँए, एक सिमानक बीच रहि कियो अपनाकेँ पार-घाट लगैबतो अछि आ लगबौ चाहैए।

धीरेन्द्रकेँ पिता-पुत्रक बीच जे सीमा अछि तइमे जहिना पिता जीबेन्द्र छथिन तहिना पुत्र धीरेन्द्रो अछि। माने ई जे अनेको क्रिया-कलापक बीच पिता-पुत्रक जीवन अछिए। मुदा अखन से नहि। अखन एतबे जे जेतेक उचित खर्च विद्यार्थीक छल ओ धीरेन्द्र जहिना निमाहि रहल अछि तहिना जीबेन्द्र सेहो अपन पुत्रक हिसाबसँ अपन माहवारी खर्चो आ स्वतंत्रतो देब निमाहि रहल छैथ। मुदा ऐ सीमाक बीच धीरेन्द्र अपन कोर्सक किताब सिलेबशक अनुसार पिताक पाइसँ कीनि नेने छल मुदा शिक्षकक मुहसँ अनेको अन्य किताबक नाओं सुनि मन तँ उछटबे कएल। जइसँ धीरेन्द्र प्रतिदिन एक घन्टा कौलेजक रीडिंग रूममे बैस नव-नव पोथी पढ़ैत रहल अछि। कौलेजक रीडिंग रूम, पुस्तकालय आ कार्यालय तीनू कोठरी एक्के मकानमे जुड़ल अछि। तीनूक बीचक देवालमे शीशा लागल अछि जइसँ एक दोसर कोठरीकेँ नीक जकाँ देखल जाइए।

धीरेन्द्र रीडिंग रूममे कुर्सीपर बैस टेबुलपर तीन-चारिटा किताब रखि एकटाकेँ उनटा रहल छल, तहीकाल जगमोही पुस्तकालयक पैछला किताब जमा करैत ऐगला लइले आलमारी देखए लगल। ओना, पुस्तकालयक सभ पोथी रजिष्टरमे अंकित ऐछे मुदा ओ दोसर विद्यार्थी देख रहल छल।

नमगर-चौड़गर रीडिंग रूमक कोठरी, दर्जनो आलमारी किताबसँ सजल अछिए। एकसँ दू आलमारी प्रति विषयक किताबसँ सजौल फुटा-फुटा लगौल अछि। बीचमे बइसैले कुरसीक संग टेबुल सेहो लगले अछि। जइसँ बिनु बँटवारा केनहुँ बैइसैक जगह बँटाइये गेल अछि। माने ई जे आलमारीक लगेमे कियो बैस कऽ पढ़बकेँ नीक बुझबे करैए। धीरेन्द्र अपन समयानुसार रीडिंग रूममे किताब सभ टेबुलपर रखि कलमसँ कॉपीमे लिख पुन: किताब उनटबैत रहए। पुस्तकालयक आलमारीमे जगमोही किताब खोजि रहल छल। पुस्तकालयो आ रीडिंगो रूमक आलमारी हाथ-हाथ भरिक दूरीमे सजल अछि। पुस्तकालयक दुनू आलमारी खोलि जगमोही किताब खोजि रहल छल आ दोसर दिस धीरेन्द्र दुनू आलमारी खोलि किताब निकालि टेबुल सजौने छल।

दू आलमारीक बीचक जे जगह अछि ओइ बीच होइत जगमोही धीरेन्द्रकेँ देख रहल छल। तही बीच पुस्तकालयक किछु किताब गड़बड़ भऽ गेल रहै तेकर कहाकही ऑफिसमे उठल। मुदा किताब तँ किताब छी, आगियोमे जरैबला, पानियोमे गलैबला आ दिबारो-दिम्मककेँ खाइबला, तैठाम अनेरेक ने कहा-कही भेल। खाएर.., जेकरा माए-बाप जन्म दइए से तँ माए-बापकेँ बिसैर जाइए, ई तँकौलेजक पुस्तकालयक किताब छी, एकर के माए-बाप छै! अनेरे के एते आलमारीकेँ उधेसत। ओना, देवालक बीच शीशा लगल रहने जहिना जगमोही पुस्तकालयमे बन्न अछि तहिना रीडिंग रूपमे धीरेन्द्रो बन्ने अछि मुदा देख रहल छल दुनू एक-दोसरकेँ।

ओना, अखन तकक तरपेसकी जानकारीमे जहिना जगमोही अपन मामा गामक धीरेन्द्रकेँ बुझैत तहिना धीरेन्द्रो अपना गामक भगिनी जगमोहीकेँ बुझैत। मुदा अखन धरि एको दिन बात-चीत नहि भेल।

पुस्तकालयक कार्यालयमे कहा-कही भेने सबहक धियान ओइ दिस भेल आ जगमोहीक धियान धीरेन्द्र दिस भेल। शुरूमे जगमोही मोट-मोट किताब धीरेन्द्रक टेबुलपर राखल देख थोड़ेक सहमल जरूर मुदा एते तँ आत्म-शक्ति जगिये गेल छेलै जे धीरेन्द्र मामा गामक छी। चाहे तँ नाना दाखिलमे हुअए वा मामा दाखिलमे वा भाइक दाखिलमे, मुदा अंगीत तँ छीहे। जँ सेहो नइ छी तैयो एक कौलेजक एक क्लासक आ एक विषयक संगी तँ भेबे कएल। जखन एक्के विषयक संगी छी तखन जीवनक क्रियो-कलाप तँ एक्केरंग ने हएत। केना कोयलाखानक श्रमिक अपनाकेँ लेबर क्लास कहि एकठाम बैसार-उसार करैए। केना खेतक धान रोपनिहार धनरोपनिया कहबैए। कहाँ केतौ मर्द-औरतक भेद छइ। एक दिस मातृकक

सम्बन्ध, दोसर दिस कौलेजक सम्बन्ध अछिए, तैसंग एक उमेरक सियान सेहो दुनू गोरे छीहे। तखन गप-सप्प करैमे बाधा की? चोरनुकबा प्रेममे कोनो दम होइए, ओ तँ चोर सबहक क्रिया भेल। प्रेम तँ सार्वभौम अछि।विचारक प्रेम, बेवहारक प्रेम, जिनगी जीबैक प्रेमइत्यादि, जे लोकचोरा-नुका कऽ किए करत।

दू आलमारीक बीचक रस्ता देने शीशाक देवाल पार करैत जगमोही धीरेन्द्रक अनुकरण करए लगल। धीरेन्द्र जहिना किताबमे आँखि गाड़ि, समुद्री हीरा जकाँ पाँति खोजि कॉपीमे नोट कए रहल छल, तेकर हू-ब-हू फोटोग्राफी जगमोही अपन बुधिक डायरीमे उतारए लगल। दस मिनटक फोटोग्राफीक रील जगमोही मनमे गढ़ि नेने छल।

संजोग भेल, पाँच बाजि गेल। आब सभ किछु बन्द हएत। जगमोहीकेँ दूटा किताब लेबाक छेलै जे इसू करा चुकल छल। धीरेन्द्र आलमारीमे किताब रखि कॉपी नेने बाहर निकलल। ओना, लोको पतराएले छलइ। मात्र दू गोरे कौलेजक स्टाफ आ चारि-पाँचटा विद्यार्थी अछि। पुस्तकालयक सीढ़ीसँ निच्चाँ उतैरते जहिना धीरेन्द्रक नजैर खिर जगमोहीपर छिछलल तहिना जगमोहीक नजैर सेहो धीरेन्द्रपर छिछलए लगल। ओना, दुनूकेँ अपन-अपन नैतिक अनुशासनक विचार मनमे दौड़िये रहल छल। अही गुन-धुनमे दुनू बिना किछु बजने-भुकने कौलेजक अन्तिम गेट लग पहुँच गेल। चौबट्टी जगह, तँए के किमहर जाएत तेकर जानकारी दुनूकेँ अपन-अपन।

ओना, एहेन कोनो प्रतिकूल मौसम नहियेँ अछि जे दुनूक बीच गप-सप्प नइ भऽ सकैए।मुदा ग्रामीण परिवेशक उपज दुनू, माने दुनूक जन्म गाम देहातमेभेनेदुनूक मनमे गाम गमैया सम्बन्ध सेहो बनियेँ गेल अछि। तँए दुनूक बीच किछु ओझरौठ अछिए। जे ने जगमोही बुझि सकल अछि जे धीरेन्द्रक संग कोन तरहक सम्बन्ध मानि बाजल जाए, आ ने धीरेन्द्रे से बुझि रहल अछि। तैसंग दुनूक मनमे ईहो बेवधान छैहे जे अपनासँ उमेरमे जेठ मानल जाए वा छोट। तेकर कारण दुनूक अपन-अपन अछि। धीरेन्द्रक मनमे नचै छै- जखन दुनू गोरे कौलेजक एक क्लासमे पढ़ै छीतखन ई मानि लेब जे जगमोहीक उम्र हमरासँ कम हेतैई तँ बालबोधक विचार भेल! किएक तँ जेतेक समय हमरा 'अ-आ' सँ अबैमे अखन धरि लागल तेते तँ जगमोहीकेँ सेहो लगल हेबे करत, तखन छोट मानल जाए वा पैघ? आइ जँ कौलेजमे एको क्लास आगू-पाछू रहितौं तखन तँ एकटा देखौआ सीमा भेटैत, जहिना कोनो गामक जमीनक नापी लेल पैछला सर्वेक कोनो पहचान भेटला बाद अमीनकेँ कोनो खेतक आड़ि-मेड़ बनबैमे असान होइए तहिना। मुदा धीरेन्द्रक मनमे एकटा विचार उठल। उठल ई जे जइ गाममे बाढ़िक कारणे वा भुमकमक कारणे सिमानक पहचान मेटा गेल रहैए तँ ओइ सीमाकेँ पकड़ै तँ दोसर गामक सिमानक सहारा लेले जाइए।

जगहमोही जखन अपन पैछला इतिहास दिस नजैर खिरौलक तँ साफ-साफ देखए लगल जे जहिया पाँच बर्खक रही तहिये बाबा लोअर प्राइमरी स्कूलमे नाओं लिखा देलैन, तहियासँ ने कहियो फेल केलौं आ ने कोनो क्लासे फानि कऽ टपलौं।मनमे उठलै- तहिना ने धीरेन्द्रोकेँ भेल हएत। बीचमे मातृकक सम्बन्ध सेहो अछि, जँ नानाक सम्बन्धमे हएत आ तखन जँ भैयारीक सम्बन्धे बाजबईहो तँ नीक नहियेँ हएत। आ तहूमे जँमाए बुझती तखन तँ ओहो गनजन करबे करती..!

ओना, धीरेन्द्रोक मन सकताइये रहल छल जे अनजान-सुनजान महाकल्याण। गप-सप्पक पछाइत जखन सम्बन्धक असल परिचय हएत तखन अपन विचारकेँ सुधारि लेब। तहिना जगमोहीक मन सेहो रसे-रसे ओहन सीमापर पहुँच गेल। तँए दुनूकेँ मुँह खोलैक अनुकूल मौसम बनि गेल। एक तँ ओहुना जखन संगे-संग पढ़ै छी तखन बजा-भुकी करैमे कोन एहेन पहाड़े आकि समुद्रे बीचमे बाधक अछि।

गेटपर पहुँच धीरेन्द्र जगमोही दिस तकलक। ओना, जगमोही सेहो धीरेन्द्रे दिस ताकि रहल छल।दुनूक आँखि मीलि गेल। आँखि मिलिते दुनूक मुँह टुस्कियाएल। जहिना पत्ता-कलश वा फूल-फलक टुसी चलिते अपन सुगन्ध निकालए लगैए तहिना दुनूक मनसँ निकलए लगल...। जगमोही बाजल-

"डेरा केतए रखने छी?"

जहिना जगमोही बाजल तहिना धीरेन्द्र उत्तर देलक-

"ऐठामसँ साए मीटर हएत।"

धीरेन्द्रक बात सुनि जगमोही घड़ी देखलक। पाँच बाजि कऽ पाँच मिनट भेल छेलइ। मने-मन अपन समयक अँटकार लगौलक तँ बुझि पड़लै आधा घन्टा समय बीचमे खाली अछि। जगमोहीक ऐगला समयक सीमा निर्धारित छेलै, किएक तँ सचिवालयमे जगमोहीक पिता- गोविन्द कार्यरत छथिन जे नित्य छअ-पौने छअ बजे तक डेरा अबै छथिन। पिताजीकेँ अबैसँ पहिनहि जगमोही अपन कौलेजक काज निवटा डेरा पहुँच जाइए। तैबीच जगमोहीक माइयो बजारक काज कऽ आबि जाइ छथिन।

जगमोही बाजल-

“रस्ते-रस्ते चलि कऽ अपन डेरा देखा दिअ। दोसर दिन समय पेलापर आगूक किछु गप-सप्प करब।”

सोल्होअना जगमोहीक बात नहि सुनि धीरेन्द्र बिच्चेमे बाजल-

“चलू, संगे-संग चलबो करू आ अहाँ अपनो डेराक जानकारी दिअ।”

साइए मीटरपर धीरेन्द्रक डेरा, गपे-सप्पमे दुनू गोरे पहुँच गेल। डेरा लग ठाढ़ होइत धीरेन्द्र असमंजसमे पड़ि गेल। असमंजस ई जे शहर-बजार छी। ऐठाम सभ तरहक प्रतियोगिता अछि! मुदा लगले मनमे उठि गेलै जे अखन विद्यार्थी जीवनमे छी, तँए अखन वर्त्तमानक विचार करब अछि नहि कि भविसक। धीरेन्द्र बाजल-

“डेरामे चाह-ताह तँ नइ बनबै छी मुदा जलखैक ओरियान तँ रहिते अछि, चलू पहिने जलखै कऽ लेबतखन जाएब।”

ओना, दुनूक मन गवाही दइते रहै जे कौलेजसँ लऽ कऽ गाम धरिक सम्बन्ध अछिए, तखन खेबे-पीबेमे कोन हर्ज...। जगमोही बाजल-

“डेरा तँ भीतर जा कऽ देख लेब मुदा जलखै नइ करब। बेसीसँ बेसी एक गिलास पानि पीब लेब।”

दुनू गोरे कोठरीमे पहुँचल। कोठरीमे कुरसी नहि, छोट-क्षीण कोठरीमे धीरेन्द्रक पूर्ण जिनगी समटल अछि। एक्के चौकीपर बैस धीरेन्द्र बाजल-

“गाममे ऐबेर आम खूब फड़ल अछि, अमैया छुट्टी हेबे करत...।”

जगमोही बाजल-

“अहाँक घर प्रेमनगर छी आ हमरो...।”

‘हमरो’ सँ आगाँ नहि बढ़ि जगमोही चुप भऽ गेल।

अपन गामक नाओं सुनि धीरेन्द्र बाजल-

“अहूँक मातृक तँ प्रेमनगरे ने छी?”

जगमोही-

“आइ एतबेपर रहए दियौ। पनरह जूनसँ अमैया छुट्टी भऽ रहल अछि, माइयो नैहर जेती, हुनके संग बीस जूनकेँ अहाँक गाम पहुँच जाएब।”

मुस्की दैत धीरेन्द्र बाजल-

“हमरा गाम पहुँचब आकि अपन मातृक?”

जगमोही-

“अहाँ जे बुझिऐ...।”

q

शब्द संख्या : 3068, तिथि : 10 अगस्त 2018

जारी....

---

[i]बटसावित्री

[ii]मेहनत करैबला

२

जगदीश प्रसाद मण्डल

दूटा लघुकथा

कियो ने पुछैए

एकतीस साल नोकरी केलाक बाद रामानन्द भाय घुमि कऽ गाम एला। एकतीस सालक बीच ए.एस.पी. सँ लऽ कऽ चारि मास आइ.जी.क पद सेहो सुशोभित केने छला। तैबीच ऑफिसक कर्मचारी जरूर बुझैन जे खिशियाह अफसर छैथ तँए काजमे कोताही केने बिगड़बो करता आ भऽ सकैए जे लाल कलम चला देता तँ नोकरियोमे जड़ब हेबे करत। किछु गोरे इमानदार सेहो बुझिते छेलैन। पचीस दिसम्बरकेँ रामानन्द भाय सेवा निवृत्त भेला आ अपन पेंशनक सभ काज सम्हारि दस जनवरीकेँ डेराक सभ वस्तु जात नेने पत्नीक संग गाम आबि गेला। तेसर दिन माने बारह जनवरीकेँ, भिनसुरका चाह पीब रामानन्द भाय अपन ऐगला[i] जिनगीक विषयमे गौर करए लगला। तही बीच पत्नी- सुलेखा सेहो कोठरीसँ निकैल दरबज्जापर पहुँचली। पत्नीपर नजैर पड़िते रामानन्द भाय बजला-

“गामक कियो ने पूछ करैए..!”

ओना, सुलेखाक जे बीतल जिनगी छेलैन ओ तँ अफसर परिवारक रहैन तँए कोनो बात वा कोनो बेवहारकेँ देखै-बुझैक तरीका अप्पन बनि गेल छेलैन। जइ अनुकूल ओ बजली-

“अखन दुइये दिन एना भेल अछि तइमे केना ई बुझि गेलिऐ?”

अपन समझसँ सुलेखा बाजल छेली, मुदा सेवा निवृत्तिसँ पूर्वक विचार जिनगीक अनुकूल जहिना रहैए तहिना सेवा निवृत्तिक पछाइत मृत्युक सम्भावनासँ प्रभावित भेने जीवन-मृत्युक बीचक सम्भावनाक संक्रमण भेने अनुकूल विचार सेहो प्रभावित होइते अछि। जइसँ विचारमे किछु-ने-किछु संक्रमण होइते अछि। हेबो केना ने करत, जीता-जिनगी लोक दोसरक सहारा बनैए आ मृत्युक आगमन देख लोक दोसराक सहारा चाहिते अछि। तँए रामानन्द भाइक विचार पत्नीक विचारसँ सहमेलू नहि भऽ सहखेलू जकाँबुझि पड़लैन। मुदा समस्या किछु हुअ आकि केहनो हुअ ओ तँ समस्याग्रस्त लोककेँ भोगै-विचारै पड़ैए।

रामानन्द भायकेँ पत्नीक विचारमे जे आसरस भेटक चाही से नइ भेटने मन थोड़ेक निरस जकाँ भइये गेलैन। मुदा जे विचार रामानन्द भाइक मनमे पनैप गेल छेलैन ओकर पेंपीकेँ ओतै रोकि, मनकेँ दोसर दिस बहटारैत बजला-

“जइ दिन गामसँ नोकरी करए विदा भेल रही ओ दिन आ आइ जखन नोकरी छुटला पछाइत गाम एलौं हेन तइमे केतेक अन्तर आबि गेल अछि से अनुमान करै छिऐ?”

पतिक बात सुनि सुलेखा थोड़ेक सिरसिरेली जरूर मुदा किछु लोकक एहेन सोभाव होइते अछि जे जहिना खुशी रहलापर बोली-वाणीकस्वर रहल तहिना नाखुशी भेलापर सेहो ओहिना रहल। सुलेखो तहिना अपन मुँह बन्न कऽ लेली, किछु बजली नहि। भऽ सकैए जे मने-मन गुड़-चाउर फाँकए लगल होइथ।

लक्ष्मणपुर गाममे पहिल-पहिल आइ.पी.एस. रामानन्द भाय भेला। ओना, पढ़ै-लिखैक खियालसँ लक्ष्मणपुर बहुत पछुआएल अछि। सोल्होअना बिनु पढ़ल-लिखल गाम नहियेँ अछि मुदा जनसंख्याक चौथाइयोसँ कम जरूरे अछि। पनरह-सँ-बीस प्रतिशत साक्षर पुरुख वर्ग आ दू-सँ-पाँच प्रतिशत महिला वर्ग साक्षर अछि। रामानन्द भाय विद्यार्थीए जीवनमे लक्ष्मणपुरक वातावरणसँ अलग भऽ मात्रिकक वातावरणमे जा पढ़ला, बढ़ला आ पालल-पोसल गेला, जैठाम पढ़ाइ-लिखाइक औसत अधिक अछि आ तहूमे खासकए रामानन्द भाइक मामा-नानाक परिवार तँ आरो बेसी अगुआएल छेलैन। रामानन्द भाइक मामाक परिवारमे ई सातम पीढ़ी चलि रहल छैन जे पढ़ै-लिखैक धारासँ नीक जकाँ जुड़ल अछि। माने अक्षर-बोध आ अध्ययन बोधक सातम पीढ़ीक नम्बरपर रामानन्द भाइक मामा सभ भेलखिन। मामक चारि भाँइक भैयारी छैन। जे चारू चारि दिशाक अध्येता। किएक तँ हुनक पिता- रघुनन्दन बाबाक अपन खास सोच रहैन। रघुनन्दन बाबाक अपन खास सोच परिवारक खियालसँ रहल होनि वा समाजक जरूरतक खियालसँ जे चारू बेटा रूपलाल, भूपलाल, दुखलाल आ सुखलाल केँ चारि दिशाक अध्ययन दिस झुकौलैन, जइसँ

एकटा बेटा किसानी ज्ञान, दोसर मशीनी ज्ञान, तेसर चिकित्सा आ चारिम वकालत दिस बढ़ला। किछु दिनक पछाइत चारिम बेटा- सुखलाल जिला जज बनला। वएह वातावरण रामानन्दकेँ भेटल छेलैन जइसँ आइ.पी.एस. बनला। ओना, लक्ष्मणपुरक अपन धरतीक उपज, माने शिक्षाक दौरमे एक गोरे मैट्रिक पास करि कोसी प्रोजेक्टक किरानी, दोसर मैट्रिक पास लोअर प्राइमरी विद्यालयमे शिक्षा मित्र आ तेसर बेकती बी.ए. पास केला पछाइत बेरोजगारे रहि गेल। वएह कलकत्तासँ दिल्ली तक घुमि-फीरि नोकरी नइ भेने सठिया-कठिया कऽ बी.एल.मे नाओं लिखौलक आ वकील बनि झंझारपुर कोर्टमे कार्यरत अछि। बाँकी गामक लोक छोट-मोट बेपारक संग खेती-गिरहस्ती करैए। तँए की गाममे सम्पन्नता नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। झोरे छाप डॉक्टर किए ने हुअए मुदा लक्ष्मणपुरक डॉक्टर तँ वएह छी किने। जेकरा काजमे समाजक बिसवास छइ। भगवान रच्छ रखथुन लक्ष्मणपुरवासीकेँ जे टाटा हॉस्पीटल बम्बई आ आयुर्वेद संस्थान दिल्लीक मुँह नहि देखए पड़इ। कियो सुखे थोड़े जाइए। दमकल-बोरिंगसँ लऽ कऽ ट्रेक्टर धरिक मिस्त्री, बिजलीक मैकेनिकक संग मोबाइलक मैकेनिक सेहो लक्ष्मणपुरमे अछिए। तौला-कराही बनबैबला माने बरतन-बासनक सृजनकर्त्ताक रूपमे कुम्हार-पण्डित सेहो अछिए। दुर्गा स्थानक दुर्गा माताक संग ब्रह्म स्थानक रेमन्तक संग घोड़ो गढ़बे करैए। तहिना केबाड़-चौकैठक संग चौकी आ सजल-धजन पलंग धरिक सृजेता कर्मकार कलाकार लक्ष्मणपुरमे नहि अछिसेहो केना नइ कहल जाए। तहिना काँच-कड़चीसँ काँच बाँसक फुलडालीसँ लऽ कऽ पनडालीक संग पतडालीक[ii] अतिरिक्त डाला-धनडाला तकक निर्माणकर्त्ता नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। जइ गाममे सभ कथुक सम्पन्नता रहत तइ गामकेँ जँ सम्पन्न नइ कहबै तँ ओइ गामक तौहीनक संग बेइमानी सेहो भेबे कएल किने। मुदा से बात नहि, गौँओं आ अनगौँओं सभ लक्ष्मणपुरकेँ सम्पन्न समाज मानिते अछि। जँ से नइ मानैत अछि तँ कियो अनगौँओं किए अपन बेटी-बेटाक संग भाइयो-बहिनक बिआह लक्ष्मणपुरमे करैए। किनका मनमे एहेन इच्छा नइ रहै छैन जे अपन बहिन वा बेटीक जिनगी नीक जकाँ नहि चलए। ओना, जिनगियो-जिनगीमे अन्तर होइते अछि। एक्के गाममे एक परिवारक जिनगी खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ कपड़ा-लत्ता, घर-दुआरिक संग पढ़ै-लिखै तक सम्पन्न रहैए आ ओहीठाम माने बगलेमे, दोसरकेँ केकरो पढ़ै-लिखैक खर्च नइ जुटै छै तँ केकरो रहैक नीक घर नहि छइ। तहिना केकरो कपड़ा-लत्ताक अभाव अछि तँ केकरो खेबा-पीबाक। मुदा किछु अछि, गाम तँ सबहक छिऐन्हे। सभकेँ अपन-अपन अधिकारो आ कर्तव्यो छैन्हे। तइमे जे जेहेन विचारक छैथ ओ ओइ अनुकूल अपन परिवारक सिरजनो-प्रतिपाल करै छैथ आ नष्टो-संहार करिते छैथ।

आइसँ बतीस बर्ख पूर्व रामानन्द भाय जखन आइ.पी.एस. कम्पीट केलैनतँगामक जेते बुझै-सुझैबला लोक छला सभ खुशीसँ झूमि उठल छला। किनको झुमैक खुशी छेलैन जे गाम समाजक लोक उठि कऽ सत्ता तक पहुँचला, तँ किनको खुशी जे गाममे कोनो भीड़-कुभीड़ पड़त तेकर रक्षक गोबरधन धारी कृष्ण जकाँ अवतार लइये लेलैन। किनको मनमे खुशी ऐ दुआरे रहैन जे देखा-देखी दुनियाँ चलैए, जखने एक गोरे धरतीसँ उठि अकास छुबि लेलैन तखने दोसरो-तेसरो छुबे करत। आ किनको मनमे ई आशा छेलैन जे बिनु पढ़ल-लिखलकेँ ने नोकरी[iii] नइ भेटैए आकि नइ भेटत मुदा ओइ संग पढ़लो-लिखल जे टौआएल फिरैए कमसँ कम आब ओकरा सबहक बेरा पार हेबे करत। जखन एते पैघ डिग्री रामानन्द भाय हाँसिल केलैन तखने ने पैघ पदक प्राप्ति सेहो हेबे करतैनजइसँ दबल-कुचललकेँ लाभ हेबे करत।

रामानन्द भाइक पिता जनकनन्द साधारण पाँच बीघा जोत जमीनक गिरहस्थ, जिनका अपन होश-हवास एते नहि जे रामानन्द भाइक पदक गरिमाकेँ बुझितैथ मुदा सासुरक जे परिवार रहैन ओइसँ किछु-ने-किछु अंकैत तँ जरूर छेलाहे। बेटाक डिग्रीक खुशीमे समाजे नाचि उठल छल जइसँ जनकनन्द सेहो झूमि उठला। बेटाक प्रतिष्ठाक खुशीमे जनकनन्द समाजक संग कुटुम्बो-परिवारकेँ भोज खुएबाक विचार मनमे रोपि लेलैन।

ट्रेनिंग सम्पन्न केला पछाइत रामानन्द भाय गाम एला। परसू जुआइन करए जेता। बीचमे काल्हि भरि समय अछि। जनकनन्दकेँ भोज करैक अवसर भेटलैन। ओना,रामानन्द भाय पनरह दिन पहिनहि अपन कार्यक्रमक जानकारी पिताकेँ दए देने रहैन। भोजो तँ भोज छी, अपन-अपन गुण-धर्म तँ ओकरो छइहे। बिआहक भोज बरियातीक भोज भेलजइमे दू समाजक बीच मनुख-मनुखक कान्हक मिलानीक संग लड़का-लड़कीक बिआह होइत अछि।तँए ऐ भोजमे रस्सा-कस्सी सोभाविक अछि, जइसँ खेबा-पीबाक ओहन रूप पकड़बे करत। किए ने लोक (बरियाती) बाजत जे जहिना अँठियाहा रसगुल्ला छल तहिना लालमोहनो आ डलनामे सेहो डलडेक छौंक पड़ल छेलइ। मुदा ओहीठाम श्राधक भोजक महात्म बदैल जाइए। बदलबो केना ने करत, जैठाम मृत-आत्माकेँ स्वर्ग-नर्कक भागी बनैक प्रश्न अछितैठामक पंच जँ भोजमे तीमन-तरकारीक परिचय करए लगत तखन अनेरे ने भोजखौक सभ भेल-गेलमे ओइ आत्माकेँ नर्क पठौत। मुदा जनकनन्दक भोज तँ से छेलैन नहि, ओ तँ रामानन्द भायकेँ शुभकामनाक छेलैन। तँए ऐठाम जँ भोज खाइबला शुभकामना छोड़ि अड़कच-बथुआ बाजत से की लक्ष्मणपुरक लोक बेकूफ अछि। एते खुशी तँ सबहक मनमे छेलैन्हे जे गामक धरतीसँ अकास टेकै धरिक खाम्ही गाममे बनि ठाढ़ भेला अछि।

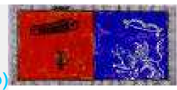
तेसर दिन चारि बजे रामानन्द गामसँ विदा हेता। दुपहरक पछातियेसँ समाजक एका-एकी लोक शुभकामनाक संग रामानन्दकेँ अरियातै-ले आबए लगला। ओना,काजुल लोक जँ चारि बजे यात्रा करता तँ ओइसँ पनरह मिनट पहिने तैयारी करैमे लगता आ समयसँ पाँच मिनट पहिने पहुँचैक परियास करता, मुदा अकाजुल तँ बेरक चारि बजेक यात्रा-ले भोरेसँ सिंगार-पेटार नहि करत तँ ओकरा-ले ओ यात्राक सगुन की भेल। मुदा से नहि, रामानन्द भाय ट्रेनिंग कऽ चुकल छला, काज करैक ढंगमे नवपन आबि गेल छेलैन। दुपहरक पछातियेसँ समाजक शुभेच्छुकेँ देख-देख अपन यात्रा मन पड़ए लगलैन। मुदा ओ तँ चारि बजे हएत। तँए खुला देहक संग रामानन्द अपन शुभचिन्तकक शुभकामना ग्रहण कऽ रहल छला। समाजो तँ समाज छी, जखन बेटियोकेँ लोक धान, हरदी आ दूभिक खोंइछ भरि विदा करैत तखन बेटा तँ सहजे बेटा छी, तहूमे ओहन बेटा जे धरतीसँ उठि अकासक सोंगर बनि ठाढ़ अछि, तँए कियो नववस्त्र तँ कियो बटखरचा, भाड़ा लेल नगद-नारायण सेहो अरपनक संग अर्पित कइये रहल छेलैन।

घरसँ निकलैकाल रामानन्द भाय घर-जनसँ लऽ कऽ गाम-जन तक शुभेक्षुक रूपमे देख रहला अछि। सबहक सेवा सबहक कल्याण मनमे नाचि रहल छेलैन। सीमा टपबैत जहिना रामकेँ अयोध्यावासी अरियातलकैन तहिना रामानन्द भायकेँ लक्ष्मणपुरवासी अपन गामक सीमान धरि अरियाइत देने रहैन।

पान खेला पछाइत रामानन्द भाय पत्नीकेँ सोर पाड़लैन। ओना, सुलेखाक मन भीतरे-भीतर थौआ भऽ गेल रहैन, मुदा पदक अन्तिम सीढ़ीक रोब तँ अर्द्धमृतो जीवित छेलैन्हे। लगमे अबिते सुलेखा बजली-

"किए एना डकबाहि केलौं?"

पत्नीक शब्दक स्वाद जेना रामानन्द भायकेँ कडुआएल बुझि पड़लैन मुदा जहिना चढ़न्त धारक वेग आ उतरन्त धारक वेगक गति बदैल जाइ छै तहिना रामानन्द भायकेँ हुअ लगलैन। मुदा एकटा नमहर जिनगीक भुक्त भोग तँ बनियेँ गेल छलातँए सोचैयो-विचारैक आ बुझबो-सुझबोक नजैर तँ बनियेँ गेल छेलैन। बजला-



“दुनियाँमे हमरा-ले अहाँ सँ लगक दोसर कियो ने अछि, तँए अहाँकेँ एकटा बात कहए चाहै छी।”

दर-दरसँ गुजरल रामानन्द भाइक मन अनुभूतिक संग अनुभव कऽ नेने छेलैन जे जिगनीमे चूक जरूर भेल, जँ से नहि भेल तँ एकतीस बर्ख पूर्वक समाज आइ किए कुद-रूप चेहरा देख भटैक गेल? पतिक कल्पित भाव बुझि सुलेखा अपन गुरुत्वक भाव जगबैत पुछलकैन-

“की कहए चाहै छी?”

विस्मित होइत रामानन्द भाय बजला-

“पदक मदमे समाजक संग भारी चूक भेल!”

सुलेखा बजली-

“की चूक भेल?”

रामानन्द भाय बजला-

“मन बोझिल अछि, काल्हि कहब।”

q

शब्द संख्या : 1584, तिथि : 9 जुलाई 2018

केकरो कियो ने

एक तँ ओहुना मधुबनी जाइसँ पहिने पत्नीसँ खूब रक्का-टोकी भेल। रक्का-टोकीक कारण छल एकटा मुकदमा। रक्का-टोकी होइत-होइत रका-टोकहुअ लगल। आ ओहो एते बढ़ि गेल जे दुनू परानी दू दिस भऽ गेलौं। माने ई जे पत्नी बजली-

“हमरा एहेन ठाँठ महींस आकि ठाँठ गाए पोसैक जरूरत नइ अछि जे भरि दिन ओकरा पाछू लागल रहू आ दूधक बेरमे फूल सुँघा देत।”

एक मानेमे पत्नीक विचार जँचल। जँचल ई जे गाए आकि महींस कियो पोसैए धनक उगाही बुझि।ओ भलेँ कम दुधगैर हुअए आकि बेसी ई दीगर बात भेल। मुदा साफे किछु ने हुअए ई तँ कनी कठाइन भइये गेल। मुदा पत्नी बाजल छेली एकटा केसक उदाहरणमे।

आइसँ तीस बर्ख पहिने गाममे दू गोरेक झगड़ाक पनचैतीमे पंच बनि गेलौं। ले बडौर!गुर केतौ आ पह केतौ पड़ि गेल! जइ झगड़े पनचैतीमे गेल रही ओकर चर्च पंच सभकेँ अबै दुआरे पछुआएले छल तइसँ पहिने गामक दोसर गप उखैड़ गेल। जेते गोरे पनचैतीमे पहुँचल रही तहीमे दू पार्टी बनि गेल। दू पार्टी जँ विचारे धरि रहैत तखन तँ कोनो बात नहि। गाम-घरमे एना होइते छइ। कोनो घटना गाममे किए ने हुअए, जहाँ-तहाँ दू गोरे चारि गोरेक बीच कहा-कही होइते अछि, भलेँ ओइ कहा-कहीक कोनो कारगर परिणाम नइ निकलौ। मुदा एतए से नहि भेल। दुनू पार्टीक बीच हाथा-बाँही होइत थापर-मुक्का चलि गेल। धरमागती जँ पुछी तँ मारि बेसी हमरे पार्टी माने हम जइ पार्टीमे रही सएह सभ खेलक। मुदा बेकतीगत रूपमे हम बेसी हाथ चलेलौं, हाथ कि चलेलौं जे दुनू हाथमे ऑंगुरक मुक्का बान्हि बेसुमार चलेलौं जइसँ एक गोरेकेँ बेसी चोट लगि गेलै, वएह केस कऽ देलक, सएह केस आइ तीस बर्खसँ लड़ैत आबि रहल छी। लड़ैत की आबि रहल छी, मधुबनी जाइ-अबै छी। कहियो हाकिम नहि, तँ कहियो पेशकारक हड़ताल, कहियो वकीलक वहिष्कार, तँ कहियो चपरासीक हड़तालक दुआरे कोर्ट लगबे ने कएल, जइसँ तारीक-पर-तारीक होइत-होइत आइ तीसम बरख बीति रहल अछि।

मासे-मास तारीक भेने परिवारक अनिवार्य खर्चमे, माने मासक बजटमे केसक खर्च साए रूपैआ जोड़ाइये गेल अछि। ओना, परिवारमे पाँच-दस, पचीस-पचास रूपैआक केते काज खगि जाइए से बरदास करैत आबि रहल छी।

पत्नीक प्रश्नक उत्तर देब जरूरी छेलएहे। जँ से नहि देब तखन तँ पत्नीक संग हारबे ने भेल। आ जखने घरमे पत्नीक जीत हएत तखने ने पुरुख-जुइतिक घर मौगी-जुइतिक भऽ जाएत वा पुरुखाह घर मौगियाह भऽ जाएत। आ जँ से हएत तँ गाम-समाजक मुँह रोकि देबै, कहबे करत किने- ‘फल्लाँ घर मौगियाहक घर छी।’ मनमे कोनो ताले-मेल नइ बैइसए। पछाइत घाल-मेल करैत बजलौं-

“केस-मोकदमाक हाल अहाँ थोड़बे बुझबैओ इज्जतक लड़ाइ छी, बिनु लड़ने केकरो इज्जत होइ छइ।”

आमक गाछक सराइर हुअए आकि लत्तीक फोंकगर मुडी, ओकरा तोड़ि देने जहिना मुड़िये बदैल जाइए तहिना भेल। पत्नी बजली-

“हमरा ऐ केससँ कोनो मतलब नइ अछि, सात गोरे फँसल अछि, जे गति ओइ छबोकेँ हेतै से हमरो हएत।”

बजैक क्रममे तँ पत्नीक विचार नीक छेलैन्हे। किएक तँ सम्मिलित परिवार ने छी। दुनू गोरे मिलि कऽ ने ठाढ़ो केने छी आ आगू मुहेँ चलाइयो रहल छी। मुदा जँ केसक पैरवी छोड़ि देबै तखन तँ अनेरे गैर-हाजिरीमे वारंट हएत, जब्ती-कुर्की हएत! आजेँ कहीं पुरान केस बुझि हाकिम फैसले लिखि देलैनतखन तँ सजो भऽ सकैए। तैकाल मे हमर साती पत्नियो पूरि पौती आकि अपने पुरए पड़त?

ओना, एते चलाकी दुनू परानीक गप-सप्पमे कइये नेने छेलौं जे पत्नीकेँ बेतुकार उत्तर नहि दए, कहने रहिऐन जे मधुबनीसँ ऐ बेरक तारीक केने अबै छी, तखन निचेनसँ दुनू परानी विचारि लेब।

अपने मधुबनीए-मे रही। जेठुआ लगन जखन एहेन अछि, तखन फगुआ मासक फागुनक लगन केहेन भेल छल से सभकेँ बुझले अछि। अपना बुझल नइ छल जे औझुका लगन अपनो लगल अछि, तँए थोड़े निचेन रहबे करी। आठ-नअ बजे रातिमे जखन घरपर पहुँचलौं तँ देखलिऐ जे साँसे अन्हार पसरल अछि। घरमे एकोटा मनुख नहि। गुण अछि जे गाए-महींस नइ पोसने छी, एकटा जँ पीलिया कुत्ता अछियो तँ ओकरा-ले समाजे खुजल अछि। ओना, जखन दरबज्जापर पएर देलौं तखन ओ दरबज्जाक आगूमे अन्हारेमे बैसल छल। हारि-थाकि निर्णय केलौं जे अनका भरोसे लोक केते दिन जीब सकैए, से नै तँ भेल ते चारिटा रोटी बनाएब अछि। अनेरे तीमन-तरकारी बनबैक भाँजमे की पड़ब से नै तँ जखन अपने उपजौल तरकारी अछि, तखन किए ने ओकरा उसैनिये वा पकाइये कऽ पुष्टगरसँ चहटगर सन्ना बना ली। एते करब कोन असाध भेल।

तेसर दिन हहाएल-फुहाएल पत्नी धिया-पुताक संग नेने पहुँचली। बजलौं- “लगन कटबए केतए गेल छेलौं?”

पत्नी बजली-

“बहिनक बेटीक सासुर। बिआह छेलइ।”

मनक विचारकेँ मनेमे दाबि, मुँह बन्न कऽ लेलौं। किएक तँ मनमे आबि गेल- 'च-र-र-अ सरोकारे करहर मौसा।'

q

शब्द संख्या : 718, तिथि : 11 जुलाई 2018

---

[i]अबैबला

[ii]पत-पथिया

[iii]सरकारी नोकरी

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

नन्द विलास राय

अछैत पुत्र निपुत्र

पेट पीठमे सटल
कपड़ा ठाम-ठाम फटल
केश-दाढ़ी बढ़ल
डाँर सेहो झुकल
गाल पचकल
आँखि धँसल
बिनु ठेंग
नइ होइत रहैन चलल
छातीक हार
झक-झक देखाइत
देह कँपैत
दमाक रोगी जकाँ हँफैत
अँगने-अँगने भीख मंगैत
मुहसँ कहैत
मलिकाइन किछ दअ
दियौ निपुतराहाकेँ
मास-दू मासपर अबैत
आ यएह बात बजैत...।

हम जलखै खा, खेलौं पान
आ जाइत रही दलान
तखने ओ देढ़ियापर आएल
आ देलक अवाज
मलिकाइन किछु दअ दियौ
निपुतराहाकेँ।

तैपर हमर पत्नी बजली
ऐ भिखमंगाकेँ कनिक्को

नहि होइ छै लाज
से नहि होइ छै
जे करतै केकरो कोनो काज।

पत्नीक बात सुनि
हम भिखमंगा दिस ताकि
देखलौं ओकर काया
ओकर देह-दशा देख
लागल हमरा बड़ माया।

हमरा मनमे भेल
किए नहि सुनिऐ
भिखमंगाक बेथा
अपनाकेँ निपुतराहा
किए कहैत अछि
की छै ओकर जीवनक कथा।

की वास्तवमे नै छै ओकरा बेटा
आकि छै ऐमे कोनो राज?

हम ओकरा दलानपर लऽ गेलौं
बड़ आदरसँ जलखै करेलौं
पछाइत ओकरासँ पुछलिऐ
'बाबा, अहाँ अपनाकेँ किए
कहै छी निपुतराहा
की नइ अछि अहाँकेँ बेटा?

हमर बात सुनि
ओकरा आँखिसँ
गिरए लगल दहो-बहो नोर।

बाबा जुनि कानू
कनलासँ नहि हएत
समस्याक निदान
ई कहैत आरो
देलिऐ बोल-भरोष
हमरा बातसँ भेलै
ओकरा बड़ संतोष।

बौआ चारि बेटा रामकँ
एको नहि काम-कँ
बौआ रहमर नाम
छी राम परसाद
आ घर अछि लदनियाँ
जहिये पत्नी मरल हमर
तहिये अन्हार भऽ गेल
हमर सौंसे दुनियाँ
बौआ हमरो छल
चारिटा
जमीन-जत्था बेच
सभकँ पढ़ेलौं
पढ़ा-लिखा कऽ
मनुख बनेलौं
चारू बेटा नौकरी करैए
सभ अपन परिवारक संग
बाहरे रहैए
मुदा हमरा कियो ने देखैए
मान दिन पहिने ओ
भगवानक घर चल गेली
मुदा हमरा भीख मांगऽ
लेल छोड़ि गेली।

बौआ, जेठका बेटा
अपन सासुक मृत्युपर
केलक रसगुल्ला-लालमोहनक भोज
मुदा माए-बापक नहि
कहियो केलक खोज।

दोसर बेटा सारिक बिआहमे
लाख टाक खर्च करि
केलक कन्यादान
मुदा ओहो नहि कहियो देलक
हमरा सभपर धियान
तेसर बेटा अपना सारकेँ
पूनामे एमबीए पढ़बै छै
सुनै छिऐ दस हजार टका
मासे-मास पठबै छै
सभसँ छोटका बेटा अछि
पत्नीक बड़का भक्त
हमरा जे चिट्ठियो लिखैत
सेहो ने भेटलै वक्त।
सासु-ससुरकेँ संगे राखि
करैत अछि पतिपाल
एम्हर बाप भीख मंगै छै
तेकर नहि छै कनिक्को खियाल।

हम पुछलिऐ
की अहाँकेँ नै अछि बेटी
तैपर ओ बाजल
बेटी अछि
वएह तँ केलक

माइक क्रिया-कर्म
भगवान नीक करथुन ओकरा
ओकरे भेलै सभसँ
पैघ धर्म।

फेर पुछलिऐ-
बेटीए ओइठाम किए
चलि जा रहै छी
गामे-गाम भीख किए
टहैल-टहैल मंगै छी?

तैपर ओ बाजल-
बेटीक दुआरिपर रहबकैँ
हम कखनो नै बुझै छी नीक
तइसँ बढ़ियाँ गुजर करै छी
मांगि-चाँगि भीख।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

कविप्रीतम कुमार निषादक

किछु कविता

हाय भूकम्प

माऽए गै बाप रौ सुनैत देखलौं
मचैत छल हड़कम्प
थड़ थड़ गूंजैत धरती हिलल
चिकरल जन भूकम्प
तन मन थड़ थड़ हमरो काँपल
डँरल दिल दिमाग।
नेना भुटका जनि पुरुखकैँ

देखल भागम-भाग।।

हमहूँ थकमक करैत सोची
हेहरि कत्त जाऊ।
जाँघो काँपैत थिर नहि होअए
कोन सहारा पाऊ।।

किछु मिनटेपर लोक हकमितें
सकपक्की संग बाजल
केक्कर घर गिड़लै बाजै ने
कालचक्र छल साजल।।

केओ कहथि जे हम्मर औरदा
नहिं छल एक्खन पूरल।
मृत्युकालकँ मुँहसँ जेना
देह प्राण अछि धूड़ल।।

आइ शनिचरा ग्रह खेलैछल
देश विदेशमे सगरो।
अपने हाल व्यथामे हकमैत
सुइध कहाँ छल केकरो।।

बेरा-बेरी देखैत रहलौं
सभ मोबाइलमे भींड़ल।
घर-कुटुमैताक जिज्ञासामे
अपस्याँत टहलल फिड़ल।।

केओ बाजए सन चौंतीस ईस्वीसँ
भूकम्प छल बड़का।
कहए केओ फेर हिलतै धरती
लगतै कत्तहुँ दड़क्का।।

बूढ़ पुरान कहथि हे बौआ
भागि कऽ कत्तऽ जएबह।
सभतरि एहनेहालबनल छै
नव बुइध कोन लएबह।।

दिन भरि गुनधुन भय आशंका
जनमन भेल हेहरू।
किछु नहिं फूरए अल्लाह ईश्वर
हे दैबा किछु करू।।

टीभी रेडियोक समाचार संग
जनजीवन भऽ गेल बेहाल।
अखबारोक सुर्खीमे दारूण
तहस-नहस देखल नेपाल।।

हिलल हिमालय केर हिम खण्डो
काठमाण्डूकँ फूटल कपार।
तिब्बत चीन भूटान औ यूपी
काँपल रहि-रहि बंग-बिहार।।

एवरेस्टक पर्वत आरोही
बेस कैम्पमे चिकरि मरल।
हिम खण्डक चट्टान पिघलिते
पैघ प्रलयसँ रहय अड़ल।।

धरहारा मीनार नौ मंजिला
काठमाण्डूकँ कुतुब मीनार।
गिरल धड़ाम ओ जमीन्दोज भऽ
झहुड़ा होइते लागल किनार।।

मन्दिर-मण्डप कोठा-सोफा
दरकैत गिरैत मलवा भेल।
मलवा संगे सैंकड़ो मुर्दा
प्रलय कालकेँ बलवा भेल।।

एहि घटना केर हाल बखानै
नासा केर वैज्ञानिकगण।
सात दशमलव नौ रिक्टर संग
घटना चक्रसँ सिसकए मन।।

भेल चौकन्ना विश्व मित्रजन
भारत अमरीका चीन सकल
रैस्क्यू ऑपरेशन रत भारत
देखा देलक सहयोग अकल।।

भू-वैज्ञानिक आंकि बतौलक
विमुख प्रकृतिकेँ देखल कोप।
मानव अपनेहि प्रलय पुकारल
तैं धमकए भूकम्प प्रकोप।।

प्रीतम गोहरए विश्वमान्यवर
ग्लोबल वॉर्मिंग हड़पैए।
आपदा-विपदा धरती कोइखसँ
भू-तापीय द्रव तड़पैए।।

विकासक दम्भ

हम विकास कऽ रहल छी
मुदा ह्रास भऽ रहल अछि।
ई, विसंगतिकेँ मानय केँ

यश-अपयश के लऽ रहल अछि।
की..! हम अहिना विकास कऽ रहल छी?
सभ देखैछ कालचक्र
युग चापक प्रभावसँ
प्राकृतिक पराभव औ प्रभाव सेहो
आजुक पिछलग्गू जकाँ
सदिखन चटपटाएल, धड़फड़ाएल...
कखनों अलसाएल, तँ कखनो महुराएल...
हम्मर स्वार्थक बलैया लऽ रहल अछि।
ई, विसंगतिकँ जानय के..?
यश-अपयश के? लऽ रहल अछि
की..? अहिना हम विकास कऽ रहल छी?

हम, उसास कऽ रहल छी
मुदा खटास भऽ रहल अछि।
ई, विसंगतिकँ मानय के?
उपकार-जनसेवा सिनेह आ मम्मत जानए के
आई-माई, मित्तिन सासुक, सम्मत मानए के
गोतनी सौतिन ननदि नटिनियाँ
देखि पड़ोसिन जरए डकिनियाँ
गौरवे आन्हर गृहिणी कनियाँ
उकटा पैंची सभ कऽ रहल अछि
की..? एहने हम विकास कऽ रहल छी..?
हम, उसास कऽ रहल छी
मुदा खग्रास भऽ रहल अछि..!
जहिना, चान-सुरुजक ग्रहणसँ
पसरल अन्हार
तहिना, अन्धविश्वासक चौपाइरमे
कहाली बनल परिवार
सरकारी संग्रहणक पंजीमे अछि दर्ज

ढोवैत, रोवैत रहए लोग जिनगी भरि कर्ज...
जाहिसँ फलय-फूलय...
छल-प्रपंचक राजनीति...
फूइस, पेंच, गलबैहिया धेने
गाम-घरमे रीत-कुरीति
ज्ञानक मन्दिर इसकुल जर्जर
दसगरजा घर सभटा गड़बर
जत्तय अन्हरा डिठरा बमकै
चतुर चलाको चुगला चमकै
दाँव-पेँच दोगलई कँ दलाली
औनी पथारी सभ दऽ रहल अछि
तँ नँ हम विकासक प्रयास कऽ रहल छी
मुदा सर्वग्रास भऽ रहल अछि
ई विसंगति कँ मानए के?
ई विसगतिकँ जानए के?
कीऽऽऽ एहने हम विकास कऽ रहल छी?
जे सर्वग्रास औ ह्रास भऽ रहल अछि?

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

राम विलास साहुक

किछु कविता

मनक मोलि

तन-मनकँ केतबो धोलौं

छुटल नहि कहियो मनक मोलि
तीर्थक पूण्य बहुत कमेलौं
नदी, कुण्डमे स्नानो भेल
तन रंगेलौं मन रमेलौं
तैयो ने छुटल मनक मोलि
तन-मनक मोलि रहए खरकटल
कुपित मन जे छेलाए बेकल
तखने एकटा युक्ति भेटल
गोंता लगा साहित्य पढ़लौं
ज्ञान रूपी गंगामे डुमकी लगेलौं
मिथिला धामक तीरपेखन केलौं
गामे-गाम भरल छला विद्वान
जे करै छला जगतकेँ ज्ञानवान
दूर कऽ देलैन मनक कलेश
बिनु जप-तप केनहि हमरा
तन-मन निर्मल भऽ गेल
तखने छुटि गेल मनक मोलि। q

तृष्णा

तृष्णाक तृप्ति जलसँ होइए
अन्नसँ मिटैए पेटक भूख
दूध फल मेवा काया पोसैए
औषधि करैए दुख दूर
हीरा-मोती छी धनक भूख
मनक तृष्णा कहियो ने मिटैए
मरने जाइए संगे क्रिया-कलाप
सत्यक सौरि पतालमे होइए
यश स्वर्ग धरि पसरैए
सभ किछु छोड़ि सुरधाम जाइए
मुदा कर्म-कुकर्म दुनू संगे रहैए
नहि बाँटैए अपनो कियो

अधर्मी फलहीन वृक्ष सन
सुकर्मी अमृत सभ दिन पीबैए
अज्ञान अन्हरिया राति होइए
ज्ञान पूनमक चान कहबैए
लोभ पापक असली खान छी
सत्य जीवनक प्राण होइए
धनक तृष्णा जंजाल बनैए
तृष्णा मृगतृष्णा बनि कऽ
लोभीकेँ लइए क्षणमे प्राण
तृष्णाक तृप्ति स्वर्गोमे नै होइए
भटैक जीव नरक भोगैए
संतोखसँ परमानन्दक सुख भेटैए। q

बेटी

बेटी देख किए झखै छी
नै छी बेटी अभिशाप यौ
दिन बहुड़लै सभ बेटीकेँ
घरमे हेतै लक्ष्मी समान यौ
माइयो बापक मति सुधरलै
सरकारो दइ छै धियान यौ
बेटा-बेटीमे फर्क नै रहतै
अधिकार लेतै समान यौ
शिक्षा पाबि दहेज मिटतै
बढ़तै समाजक मान यौ
बेटी बचाउ केर नारा लगै छै
हेतै सरस्वतीक घरमे बास यौ
जनक नन्दनी सीता बनि कऽ
देशक रखती मान यौ
एक्कैसम सदी बेटीक युग एलै
बनतै देशक नव इतिहास यौ
देशक बेटी देवी स्वरूपा
जगत केर करत कल्याण यौ

उपेक्षित भऽ बेटी जान गमेती
केना हेतै सृष्टिक निर्माण यौ
दुखित भऽ कवि कहै छैथ
बचाउ बेटीक जान-मान यौ
बेटी देख किए झखै छी
नै छी बेटी अभिशाप यौ।q

वसंतक गीत

आएल वसन्त कोइली कुहकैए
मधु बरसैए चहुओर हे
मह-मह महुआ रस टपकैए
आमक मज्जरसँ मधु बरसैए हे
पूरबा-पछिया मस्ती मारैए
गुंजैत भ्रमरा मन भरमाबैए हे
खग कलख वसन्त गीत गाबए
तोड़ीक फूलसँ खेत करैए सृंगार हे
आएल वसन्त कोइली कुहकैए
मधु बरसैए चहुओर हे...।

सखी-सहेली बगिया घुमैए
कली खिल करैए सृंगार हे
मातल मधुकर तांडव करैए
रितुराज बाँटैए पुष्प पराग हे
मनक पियाससँ करेज जरैए
पिया बिनु मन तरसैए हे
वसन्त बनल अछि चित्तचोर जखन
केकरापर करब सृंगार हे
आएल वसन्त कोइली कुहकैए
मधु बरसैए चहुओर हे। q

केकरा लेल

महगी घूसखोरीसँ चैन उड़ल

दहेजसँ समाज दबल टुटल
भेद-भावक बीच जिनगी मरल
लूट हत्या अपहरण होइत रहल
ई देश केकरा लेल बनल।

धर्मक नामपर कट्टरपंथी लड़ल
जाति-पातिमे समाज बँटल
धनीक-गरीबक बीच खाधि बढ़ल
काज बिनु मजदुर मरि रहल
ई देश केकरा लेल बनल।

देशक मालिक नेता, अधिकारी बनल
काला धनमे बेहाल नेहाल रहल
खान खजाना कारखाना हुनके सटल
गरीबक बेटा शहीद होइत रहल
ई देश केकरा लेल बनल।

पानि बिनु खेत परती पड़ल
घर छोड़ि किसान परदेश खटल
सुखले नहर टुटले पड़ल

सुभाष, भगत, चन्द्रशेखर, गाँधी

केकरा ले बलिदान पड़ल।
गरीबक नाओंपर योजना बनल
शिक्षा स्वास्थमे घुन लगल
माटि-पानि दवाइमे जहर घोरल
धरासँ अम्बर धरि इंसान बदलल
ई देश केकरा लेल बनल। ०

धर्मक उपदेश की भेल

जेतए इंसानक कातिल इंसाने होइए
तेतए धर्मक उपदेश की भेल-ए
विवेक अविवेकक द्वन्दमे फँसल-ए
सूर तुलसी कबीर मीराकेँ बिसैर गेल
नीति उपदेश वेद पुराण शास्त्र
जेना कलियुगमे तर पड़ि गेल-ए
जेतए इंसानक कातिल इंसाने होइए
तेतए धर्मक उपदेश की भेल-ए।

सज्जन संत महंथ तपसी बनि कऽ
वन पर्वतमे नुकाएल फिरैए
रावण रामपाल, गुरमित सिंह राम रहीम
नारी संग अत्याचारक रास नचैए
चारू युगमे कलियुग भारी पडल-ए
धर्मक आड़िक पाछू इंसानो शैतान
जेतए इंसानक कातिल इंसाने होइए
तेतए धर्मक उपदेश की भेल-ए।

जेतए माय मातृभाषा पछुआएल-ए
दहेजक खातिर बेटी जीबिते जरैए
अपन कलंक लोक गंगामे धोइए
देवी देवताक पूजा सभ दिन करैए
वल धन ज्ञानक वरदान मंगैए
तेतए इंसानक इंसान किए मरल-ए
जेतए इंसानक इमान इंसाने होइए
तेतए धर्मक उपदेश की भेल-ए। q

जीबिते जी मरै छी

की कहूँ सखी
पियाक वियोगमे
जुआनी जरबै छी
जीबिते जी मरै छी।

चढ़ल यौवन
ढरल जाइए
जेना सौन भादोमे
मेघो ने देखाइए।

नहि पड़ल बून्न
झिसियो ने पड़ैए
धरती पियासे
धधैक जरैए।

बून्न-बून्न लेल बेकल
प्राण तियागने जाइए
तहिना हमर मन पियासे
पिया बिनु जरैए।

आशक बाट तकै छी
आँखि ताकि निरारि
हिया हारि बैसल छी
आँखिसँ नोर झरैए।

उमरल यौवन
मनमे लहैर मारैए
तन मनक आगि
सहजे सहल नै जाइए।

दुनियाँक नजैर
बदलल लगैए
लोक देख-देख कऽ
नजैर-मे-नजैर लड़बैए।

मजधारमे जिनगी
दलदलमे फँसल-ए

भविष्यक बाट
अन्हाराएले सन लगैए।

पियाक सनेस
बाटे हेराएल-ए
केना कटत दिन-राति
सौंसे देह आगि लगल-ए।

केकरा देख जीअब
दुनियाँ अन्हार लगैए
की कहूँ सखी
कहल नहि जाइए
जुआनी जरबै छी
जीबिते जी मरै छी।। q

माघक जाड़- 2

बाप रौ बाप
माघक जाड़
गलेलक हाड़
छुबैए प्राण
लेत जान
ओस-कुहेसमे
धरती डुमल
चिड़ै चुनमुन
खोंतामे सुटकल
कहुना बँचबैए
अपन जान
बिलसँ निकैल
फणधारी सभ
मुँह पटैक-पटैक
तेजैए प्राण
जीब जन्तु सभ
ठिठुर रहल-ए
सुटकल पड़ल-ए
अवग्रहमे अछि

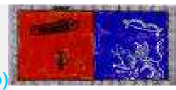
सभक जान
कनकनी चलैए
काल समान
सुरुज-चानक
दर्शनो ने होइए
दिन-राति अछि
एक्के समान
पानि छुबै छी
देह सिहरैए
कान ठरि
गलि कटैए
देहक रूईयाँ
काँटो-काँट होइए
संकटमे अछि जान
केना बँचाएब प्राण
एहेन जाड़
जिनगीमे देखलौं
बुढ़ो-पुरान सभ
अद्भुते कहैए
केतेकोकेँ लेलक
क्षणेमे प्राण
कलपैत मुहेँ
सभ कियो कहैए
भगवानो दुख दइए
बाप रौ बाप
माघक जाड़। q

किसानक मजबुरी

बाप रौ बाप, केना जीअब आब
रौदे बसाते खेत खटै छी
अदहे पेट खाए सुतै छी

दुखे पकैड़ लेलौं खाट
रौदी-दाहीसँ लड़ैत
महगीक मारि सहैत
शोगमे कुहरैत
माथ ठोकैत रहै छी
कर्जामे डुमल छी
दुखे-दुख सहै छी
जिनगी ढहैत
कोसीक धारमे बहै छी
चौपट्ट भेल खेती
धिया-पुत्ता बिलैट गेल
जीवन तबाह भेल
मजदुरियो ने भेटैए
मजबुरीमे परदेश खटै छी
पढ़लो-लिखल विदेश रहैए
गाम-समाजकेँ के देखत
केना बँचत गामक इज्जत
किसानी जिनगी दुखदायी भेल
के सुधारत किसानक समस्या
सौंगरपर सरकार चलैए
कमीशनपर योजना बनैए
पूजीपतिक खेल होइए
कृषि काज नै सुधरल आइ धरि
ओकरे बिगाड़ैमे सभ भिड़ल-ए
उपजासँ लगता बेसी
नै उचित बजार मिलैए
अधमरू जीवन जीबै छी
आत्महत्या करैले सोचै छी
केतेक दुख सहब जिनगी धरि
की दुखे सहैले जनमल छी
आब आगूक जीवन हारि चुकल छी
डुमि मरैले मजबूर छी। q

बैशाखक विष



चैत बितल बैशाख चढ़ल
मुरझल फूल सुखल पात
बाँसक पात सेहो झड़ल
घास सुखि मरल पड़ल
चौर-चाँचर सुखि फटल
खत्ता-डबरा मरता पड़ल
धार नदी सेहो सुखल
खेतमे दरारि दरकल
चढ़ल गर्मी दुख बढ़ल
तबधल धरती तबा समान
चिड़ै-चुनमुन पानि खोजैले
वौआए रहल-ए कोसक कोस
पोखैर-इनार पहिने सुखल
पतालक पानि तर पड़ल
पानि बिनु जीवन केना चलत
त्राससँ सभक मन तरसैए
बैशाखक विष चढ़ले जाइए
केना बँचत जीवक जान
सभ खोजैए पानिए-पानि
प्रदूषित धरती अपने दुखी अछि
बैशाखक रौद उगलैए विष
सभकेँ लेत अखने प्राण। q

कोसीक कहर

आएल कोसीक कहर
पसैर गेल बाढ़िक पानि
विलिन भऽ गेल गाम-घर
नहि बँचल नाम-निशान
मचि रहल कोसीक कोहराम
देखते भाँसि गेल बच्चा-बेदरू
गाए-महींसक गेल जान
अपन जान बँचबै खातिर
लपैक पकड़लौं मोटका गाछ
तैपर लपटल फणधारी

फुफकार काटैत करैए पहरेदारी
देखते हमर प्राण उड़ि गेल
मुदा दयावान बनेलक शरणधारी
मानवसँ ओ साँप हितकारी
प्राण नै लऽ रक्षा केलक
संगे केतेक दिन-राति बितल
नीचामे अथाह बाढ़िक पानि
ऊपर बहै छल बर्खाक झॉंट
जाड़क मारल भूखक हारल
मौतक मुँहमे फँसल रहूँ
भूखले प्राण टगै छेलौं
केतेक दिनक भूखल कोसी
लाखक लाख जान खाए गेल
हमरो हाथ छुटि गेल गाछसँ
धब दए गीरलौं बाढ़िक पानि
सभ दिनक लेल कोसीमे समाए गेलौं। q

केकरापर करब श्रृंगार

अपन घर छोड़ि पिया
किए गेलौं जानि परदेश
मनमे बढ़ेलौं कतेक कलेश
मुदा नै देलौं बोल भरोष
मन हमर अपचंग होइए
रहि-रहि करेज डोलैए
सिनेह बिनु देह हहरैए
जिनगी बनल-ए दुखक पहाड़
की वैरणी केलक अहॉंक शिकार
बिनु अहॉं
केकरापर करब हम श्रृंगार।

पात जकाँ तन-मन डोलैए
धीर मन अधीर होइए
सबूरक बान्ह ढहि गीरैए
प्रेम विरहमे जरै-मरै छी
अबगरहमे अछि हमर जान

जगतमे देखै छी शैताने शैतान
आशक बाट लगैए सुनशान
जिनगी बनल अछि बीरान
आब केते करब आओर इंतजार
बिनु अहाँ
केकरापर करब हम श्रृंगार।

अछैते औरुदे दुख सहै छी
चढ़ल उमेर ढहल जाइए
केतेक करब अहाँसँ परहेज
केकरा लगाएब हम करेज
नि:सन्तान छी मन वौआइए
बाट देखैत भेल छी निराश
जेना फूलसँ तूबि गेल पराग
दोसर देख कऽ अबलट जोड़ैए
प्रेम रोगक हम छी शिकार
बिनु अहाँ
केकरापर करब हम श्रृंगार। q

करमक खेल

देखू भाइ करमक खेल
कियो बेचए नून तेल
अमीर करैए कठखेल
गरीबसँ नै रहल मेल
केकरो रोटियोपर ने तेल
अखनो बेवस्था अछि गरमेल
कियो खेलैए होरी खेल
देखू भाइ करमक खेल।

अखनो धरि खेती नै सुधरल
मजदूर सभटा पलायन भेल
राम भरोसे जनता जीबैए
हिंसक करैए हिंसाक खेल
नीति-कुनीतिक बीचबिचौआमे
गरीब जनता पिसाए गेल

समाजसँ सरकार बेमुख भेल
देखू भाइ करमक खेल।

शिक्षाक नाओंपर ठगी होइए
शिक्षालयमे होटल खुजि गेल
पढ़ै बेरमे खेलैए गदहाक खेल
धिया-पुत्ताक करम फुटि गेल
स्वास्थ्य सेवा अछि नाओं लेल
अस्पतालसँ भरोस उठि गेल
देखू भाइ करमक खेल।

देखियौ देशमे नोटक खेल
एकरे बलपर भोँट कीनैए
गदहाक माथपर ताज शोभैए
विद्वतजनकेँ राखैए कात
मूर्खासन धृष्ट्रराष्ट सुतल रहैए
जनताक खून बिका रहल-ए
जनतंत्रक परिभाषा बदैल गेल
देखू भाइ करमक खेल।

खेत सुखि फाटल पड़ल-ए
पानि बिनु खेतमे फसल जरैए
पेट खातिर पेटबोनिया मरैए
गरीबक समस्या बढ़ले जाइए
समाजक लोक छिड़िया रहल-ए
सरकारी तंत्र जेना फेल भेल-ए
देशक विकास अधूरे रहि गेल
देखू भाइ करमक खेल।। q

भीखमंगनी

भीखमंगनीकेँ देख कऽ

छगुन्तामे पड़ि गेलौं
चिरखल चेथरीमे सुटकल
अंग झलकैत देखलौं
हाड़-पाँजर सुखल
फुरकल केश आँखि धँसल
मुँहपर फुफरी पड़ल
मुदा बत्तीसी चमकैत
ठेंगासँ कुकुर भगबैत
भूख पियाससँ तड़पैत
कुहरैत पथपर बढ़ैत
हाथमे पचकल टीनही बाटी
आशमे हाथ आगू केने
खाइले किछु भीख मांगैत
डेढ़ियापर ठाढ़ भऽ
बेर-बेर जोर-सँ बजैत
कने खाइले किछु दीअ
हमर बेटी बेचनी
रोटी-चटनी दैत बजली
बैस खा कऽ पानि पीब लीअ
दलानमे हम बैसले-बैसल
देखलौं नयन निरारि
भीखमंगनी रहए लचार
बुझि पड़ल नीके घर-खनदानक
पुछलिऐ कियेक भेल ई हाल
भीखमंगनी डबकल आँखिकेँ
आँचारसँ पोछैत बजली-
नहि छी कुलक्षणी, छी कमसुतनी
मुदा दहेजक खातिर पीट-पीट
हमरा केलक ई हाल
निष्ठुर पतिकेँ दया-धर्म नइ-ए
सासु-ससुरकेँ नै अछि लाज
सभ दिन मारैए घूसा-लात
के पोछत हमरा नोरकेँ
कखनो निपुत्री-कुलक्षणी कहैए
लाठी मारिसँ देह तोड़ैए

घरसँ भगबैए साँझ-विहान
बड़ गंजन सहैत रहलौं
मुदा मरब तँ नइए असान
जाधैर अछि घटमे प्राण
भिखो मांगि राखै छी मान
सुरुजकेँ हाथ जोड़ि कहै छी
केकरो नइ दिहक एहेन ज्ञान
सासु-ससुर पतिदेवकेँ
दीहक सुमति-सद्ज्ञान
हमरो बँचाबह इज्जत प्राण।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.अनुवादक डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु अनुदित काव्य (मूल रजनी छाबड़ा- हिन्दी) २. कवि डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु कविता

१
अनुवादक डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु अनुदित काव्य (मूल रजनी छाबड़ा- हिन्दी)
(PAGHALAIT HIMKHAND

Maithili translation of ‘PaighalteHimkhand’
An Anthology of Hindi Poems by Rajni Chhabra from Hindi into Maithili by Dr. Sheo Kumar Prasad.)

ई केहेन नाता

ई केहेन नाता अछि
खुशी अहाँकेँ भेटैत अछि
खोइछ हमर भरि जाइत अछि।

करोट जखन अहाँ घुमै छी
हमर सुख हेरा जाइत अछि।

चोट अहाँकेँ लगए

नोर हमर आँखिमे
डबडबा जाइत अछि।

अहाँक आँखिमे
नोर छल-छलाइसँ पहिनहि
अपन पिपनीमे समेटबाक
मन होइत अछि।

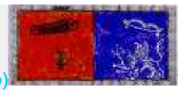
अट्ठखेल करैत
लहैरमे किएक
अहाँक छवि
अभरऽलगैत अछि।

चुपे-चाप मौसम
गुनगुनाए लगैत अछि
अहाँक स्मृति
हमरामे बसि जाइत अछि।

कानमे मिठगर
घन्टी सन बाजए लगैत अछि
जखन अहाँक बोलक
जादू पसरैत अछि।

जिनगीक आधा खाली जाम
आधा भरल नजैर अबैत अछि।

अनाम सम्बन्धकेँ
नाम देबए-मे
शब्दो भण्डार खाली भऽ जाइत अछि।


मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

अहीं कहू ने
अहाँसँ ई
केहेन नाता अछि? q

मनक पखेरू

आकुल नैन
व्याकुल बाट
अलोपित होइत
आड़ि-धूर,

क्षितिजकेँ
छुबाक आस
अतृप्त पियास।

तबधल रेगिस्तानमे
सौनक बात
नेहक मेघकेँ बरसब
जिनगीक भीजब,

छद्म सपना
फुजल आँखिक छल।

मनक पखेरू केर
पाँखि कतरब
यएह अछि
यथार्थ केर धरातल। q

कचोट

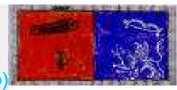
अधखड्ड जिनगीक चोट
एना जिनगीमे
सन्हिया रहल अछि,

जेना करिया रातिक
गाढ़ रोशनाइ
नोरोसँ नहि
धुआ रहल हो। q

स्मृति

अहाँक गुम्मी
अहाँक आँखिक जिह्वासँ
अनकहलो बात
कथा बनि जाइत अछि।

नहुसँ छुबि कऽ
बात
फुला जाइत अछि
अधफुलल कलिकाकेँ
ओ छुअब
जिनगीक मस्ती
बनि जाइ छै।



अहाँक गमक लऽ कऽ
अबैत अछि वात
ओ क्षण बनि जाइ छै
जिनगीक स्मृति। q

आसक चिड़ै

मन तँ आसक चिड़ै छै
एकरा किए बान्है छी
कैदी बनैले
मनुषक देह
की कम अछि? q

२
कवि डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु कविता

भोग

हम जे भोगि रहल छी
ओकरे भाखि रहल छी
फाग दियारी ओ अगहन केर
कातिक सन हम काटि रहल छी
जिनगीक सभ मनोरथ
नोरक तरे आँकि रहल छी। q

जाड़

सौंसे दिन अगियासिये बीतल रातिक कोन ठिकाना
कम्मर तोसकसँ तँ नीक छल नारे-पुआर बिछाना
कहुना कऽ जारसँ बाँची टोपीसँ नीक छल गाँती।

मनक मन जरना नित जड़ए तैयो जाड़ नहि मानए
कतबो देहपर कपड़ा लादी तैयो जाड़ नहि भागए
कोना क जाड़सँ बाँची टोपीसँ नीक छल गाँती।

गाए महींस थैरपर काँपय गुदरा कम्मर ओढ़ने
गाछपर चिड़ए विकालक मारल देऽह लोल सटौने
सबहक चिन्ता भारी टोपीसँ नीक छल गाँती। q

कनकनी

छुटै छै बोखार सबहक
किछ नहि फुरैत छै
दिनोमे छै राति जकाँ
कन कनी बढ़ले जै छै।
छुटै छै...।

बूढ़ बच्चा खेन्हरामे
तैयो कँप कँपैत छै
मालजालक कोना के कहत
केहेन ओकर हाल छै।
छुटै छै...।

घरसँ बाहर सगरे
तन मन कँपैत छै
हेतए अनर्थ एहि बेर
तेहने आब बुझैत छै।

छुटै छै बोखार सबहक
किछु नै फुरैत छै। q

रिजल्ट

नाच गान आ शान सपटहि
बाबू सभ मशगूल
पढै लिखैमे लालबुझकर
छोड़लक सभ इस्कूल।

छोड़लक सभ इस्कूल
ने जानै पोथियोकेर ओ नाम
तीन तीन बेर परीक्षा देलक
भेटय ने रिजल्टमे नाम।

भेटय ने रिजल्टमे नाम
मस्टरबा सभ एक्के छै
कोनो बिषयमे नम्बर
दस से ऊपर नै छै। q

जिनगीक झमेला

जिनगीक मेला आब खेला लगैत अछि
आगि कि पानि हो झमेला लगैत अछि।
किनका की कही किनका लग बैठी
काम निष्काम बेकामे लगैत अछि
जिनगीक....।

जड़ैत छै पुआर तँ लपकै छै धधरा
मन जखन जड़ै तँ देह जाएछै पझहा
नोरक ठेकान कोन कखन पघैल जाए
देह मन दुनु आब बेकाबू लगैत अछि।
जिनगीक....।

पढ़लहुँ जे गुनलहुँ अछि एखनहुँ सहोदर
भाइये बहिन सन नेहगर आ पोरगर
ओकरे बदोलैत जिनगी खेपाइत अछि
ऊँच नीच टेढ़ -मेढ़ एक्के लगैत अछि
जिनगीक....। q

गाम छूटल

फेर आइ गाम छूटल।
नैत छल नातिन छल
सुग्गा सन मेना सन
बेटी छल बेटा छल
आँगन बनल कचबचिया मचान छल
आइ ओ बथान छुटल
फेर आइ गाम छूटल।

नार पुआर संग
गोरहा गोरहन्नी
मोट पातर ठाढिसँ
घूरा बना कऽ
हँसैत खेलाइत छलहुँ
सभ किछ आइ छूटल
फेर आइ गाम छूटल।

जाड़ संग ठार्हो छलै
रोटी संग सागो छलै

मारा संग मरूआ रोटी
दूध संग छाल्ही छलै
चलैत खन नैत नातिन संग
नोरक टघार छूटल
फेर आइ गाम छूटल। q

छितिर-बितिर

कन कन मन संग
घुमलहुँ सगरो
कन कनाइत छल देह
मन नहि मानय तैयो
घुमि घुमि
आबी पुरने गेह
मन अपचंक रहै अछि सदिखन
केतए हेराएल नेह।

सभ दिन सभ केर
मन पुरेलहुँ
बनि-बनि अदराक मेघ
अन्त समय आब
आसिनक मेघ सन
छितिर-बितिर भेल गेह। q

जातिक छाऊर

छौरक ढेरीमे
तकैत रहलहुँ
अपन आदर

सनमान
ई जनैत कहाँ छेलिऐ
छाऊर छाऊरे रहैत छै।
पानि सुखिते उड़ए लगै छै।
कतबो जल किएक ने छिटल जाय।

आखिर ई जातिक छाउर
कतेक दिन
अहिना उड़िया-उड़िया
सभ किछु झाँपैत रहतइ! q

ईहो तँ जिनगीए छै

जखन देखैत छी
जिनगीक ओल झोल
मोल तोल ऊँच नीच
अपनकेँ आन सन
आनकेँ समांग सन
अपनेमे टेंढ़
लाख दू लाखपर
छाँटैत बड़प्पन
तँ देख देख कखनो
हँसैत समाज बीच
कहुना जीबि लैत छी
अपनेमे सन्हियाइत
ईहो तँ जीनगीए छै। q

गामक बात

ई मौसम अछि कतेक नीक
धात्री फरल बैगन फरल
आलू उखरब अछि नजीक
कुरथी दालिक पुछू ने बात
अपना गामक राखी आश
की कहू अपन गामक बात।

बथुआ संग खेसारी साग
मटर पालक भेल भकरार
धनिया आ धात्री केर चटनी
नबका चौरक मीठगर भात
की कहूँ अपन गामक बात।

डिल्ली बम्बई बड़का नगर
अपना गामक सुटकल डगर
बड़का नगर आब धरऽ दौड़ए
अपने गामक राखि आश
की कहूँ अपन गामक बात

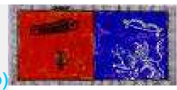
कोबी-मूड़-मटर केर छिम्मी
खेत-खेतमे हँसैत गुम्मी
कन-कन सागक संग सोहनगर
लागए केहन सुन्नर गात
की कहूँ अपन गामक बात।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेह नूतन अंक बालानां कृते

विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक



डॉ. शशिधर कुमर "विदेह"

।। स्व. अटल बिहारी वाजपेयीजी - एकटा मैथिलक सादर, विनम्र श्रद्धांजलि ।।

छलाह मंत्री - प्रधान, बात अपना जगह ।
राजसम्मान - मान - दान, अपना जगह ।
हम छी मैथिल, हमर मनमे हुनिकर स्थान,
राजनीतिसँ अलग, थीक अपना जगह ।।

दल - खेमा - विपक्ष - पक्ष, अपना जगह ।
छाप छोड़ल स्पष्ट नीक, अपना जगह ।
हम छी मैथिली अकिञ्चन, हमर नोरपर,
ध्यान देलन्हि, से बात दीव, अपना जगह ।।

भेलै सौंसे बिकास साँच, अपना जगह ।
तकनीकीक बताह नाँच, अपना जगह ।
हम छी मिथिला, आँचरक फाटल नुआ,
सीबि देलन्हि ओ, भाव से, अपना जगह ।।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

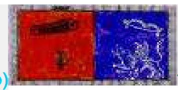
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

ejournal 'विदेह' २५७ म अंक ०१ सितम्बर २०१८ (वर्ष ११ मास १२९ अंक २५७)

मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

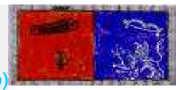
Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

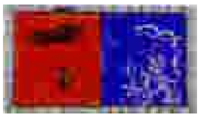
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/

विदेह सम्मान: *सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेह





मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ कैँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html ''भालसरिक गाछ''- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा '''विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'' धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब ''भालसरिक गाछ''जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

*सिद्धिरस्तु*